॥ ॐ अर्हं नम ॥ ९२८०

* श्री जिनदत्त सूरि गुरुभ्यो नम *

श्री नवपदादि तप विधि संग्रह

संग्राहक—

परम पूज्य विद्वद् रत्न शांत मूर्ति आचार्य
महाराज साहेब श्री १००८ श्री जिन रत्न
सूरिश्वरजी महाराज साहेब

प्रकाशक—

आचार्य महाराज साहेब के सदोपदेश से श्री जैन रत्न
प्रकाश मंडल के संस्थापक साहित्य भूषण
फूलचन्दजी चौरड़िया जैन "पुष्प"
रतलाम (मालवा)

वीर संवत् २४७० कार्तिक पूर्णिमा	मूल्य ०-८-०	विक्रम संवत् २००१

॥ ॐ ॥

स्वापिता-पूज्य उपाध्यायजी महाराज श्री लब्धी मुनिजी महाराज साहब

"जिन रत्न सूरि"

सविज्ञैर्जिनदत्त शिष्टि वृषणै र्ज्ञान क्रिया सत्तमै। षट् त्रिंशद् गुण रत्न रोहण नगैर्यान्त्वि मैं सेवितः ॥ स्वाप्यन्ते मति जंतवो, विधि पथे यैः राग मोक्त्या वर.। क्षेमी श्री जिन रत्न सूरि गुरुचो मानत्यत्र सूरीश्वराः ॥ १ ॥

श्री जैन रत्न प्रकाश मंडल कोटा

श्री जिन रत्न सूर्याख्या-
सस्था-पिता मुपासकैः।
जयाला दत्र श्री जैन-
रत्न प्रकाश मडल ॥ १ ॥

उपधान प्रशस्ति (अनुष्टुपं)



वर्षा वास स्थितैः पूज्यै, रतलाम पुरे वरे ।
उपधान क्रिया कारि, श्री जिन रत्न सूरिभिः ॥ १ ॥
पन्नालालजी दामोन, पन्नीकृत महोत्सवे ।
सहर्ष चेतसा सघत् स्व स्व स्व पुरम परस्मरे ॥ २ ॥
सा समाप्तिं गता मार्ग, धवलकादशी तिथौ ।
माला रोपण वात्यादि, कृत् शांति स्नात्रपूर्वक ॥३॥
डुंगरसी नाथुलालो, सूरामलश्च प्रेम सी ।
निर्मल कुमारसिंओ, जुहारमल हरिसिं ॥ ४ ॥
फुलचन्द्रादय आददा, परोपकार कर्मठाः ।
सहाय कारिणो श्रमन, तेपि नन्दन्तु भूतले ॥५॥

-

॥ ॐ ॥

"दोशब्द"

पाठको !

"नव पदादि तप विधि संग्रह" की प्रथम आवृति परम पूज्य शांत मूर्ति आचार्य महाराज साहेब श्री १००८ श्री जिन रत्न सूरिश्वरजी महाराज साहेब के सदोपदेश से जिनदत्त सूरि ज्ञान भंडार मुंबई के मेनेजर झवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत ने वीर संवत् २४६० में प्रकाशित करवाई थी प्रथम आवृति की स्टाक में एक भी पुस्तक न रहने पर व तप आराधकों की मांग होने पर उक्त आचार्य महाराज साहेब के सदउपदेश से ही इस दूसरी आवृति का प्रकाशन हुआ है।

यद्यपि तपावली में तपस्याओं की विधि का अच्छा संग्रह है फिर भी नव पदजी के तथा वीस स्थानक जी के सबही चैत्य वन्दनादि उसमें नहीं हैं वे सब रत्न सागर में अवश्य हैं किंतु रत्न सागर जैसी बड़ी पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के यहां मिलना असंभव सा है अतएव पूज्य आचार्य महाराज साहिब इस छोटी पुस्तक में आवश्यक

नव पद तप बीस स्थानक तप अक्षय निधि तप आदि २ तपों की विधि चैत्य वंदनादि का पूरा २ संग्रह कर तप तप आराधकों प्रति महान् उपकार किया है। मंडल ने इसका मूल्य भी लागत मात्र सिर्फ ०—८—० रक्खे हैं ताकि आवक से फिर भी कोई उपयोगी जैन साहित्य प्रकाशित करवाया जा सके। आशा है कि विद्वद जन इस पुस्तक का सदुपयोग करते हुवे प्रेसदोष अथवा दृष्टिदोष रही हुई त्रुटियों को शुद्धता पूर्वक पढ़ने की कृपा करेंगे।

भवदीय—
"पुष्प"

धन्यवाद !

निम्न सज्जनों ने इस इस पुस्तक के प्रकाशन में सहायता प्रदान कर अपनी लक्ष्मी का सद् उपयोग व ज्ञान का प्रचार किया है अतएव उनको तथा इस पुस्तक के प्रूफ आदि देखने में सहायक श्रीयुत उम्मेदमलजी साहेब नाहटा कोटा निवासी को हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

१०१) श्रीमान् मगनीरामजी अमृतसिंह जी साहेब रतलाम

२०१) स २००८ के रतलाम में उपधान प्रवेशक बंधु व बहिनों के ज्ञान खाते से।

१५१) महेदपुर श्री संघकी तरफ से।

भवदीय—
" पुष्प "

मुक्ति का मार्ग

स्वर्ग के मिलने का ढग यह।
और कुछ युक्ति नहीं ॥
देव गुरु की सेवा करो।
सेवा विना मुक्ति नहीं ॥१॥

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

(१) जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, मु॰ मुंबई

(२) श्री जैन रत्न प्रकाश मंडल,
ठि॰ कोठा वाला सेठ साहिब की दूकान
रतलाम (मालवा)

बुक पोस्ट से पुस्तक मंगवाने वाले सज्जन मूल्य से छः पैसे के अधिक पोस्टेज टिकिट भेजें।

विषय सूची

न०	विषय	पृष्ठ
१	अथ अरिहंतपद चैत्यवदन	१
२	,, ,, स्तवन	२
३	,, ,, थुइ	,,
४	,, सिद्धपद चैत्यवदन	३
५	,, ,, स्तवन	,,
६	,, ,, थुइ	४
७	,, आचार्यपद चैत्यवदनम्	,,
८	,, ,, स्तवन	५
९	,, ,, थुइ	६
१०	,, उपाध्यायपद चैत्यवदनम्	,,
११	,, उपाध्यायपद स्तवन	,,
१२	,, ,, स्तुति	७
१३	,, साधुपद चैत्यवदनम्	,,
१४	,, ,, स्तवन	८
१५	,, ,, थुइ	९
१६	,, दर्शनपद चैत्यवदनम्	,,
१७	,, ,, स्तवन	,,
१८	,, ,, थुइ	१०
१९	,, ज्ञानपद चैत्यवदनम्	११
२०	,, ,, स्तवन	,,
२१	,, ,, थुइ	,,
२२	अथ चारित्रपद चैत्यवदन	१२
२३	,, ,, स्तवन	,,
२४	,, ,, थुइ	१३
२५	,, तपपद चैत्यवदनम्	,,
२६	,, ,, स्तवन	,,
२७	,, ,, थुइ	१४
२८	,, अरिहंतना १२ गुण	१५
२९	,, सिद्धना ८ गुण	,,
३०	,, आचार्यपदना ३६ गुण	१६
३१	,, उपाध्यायना २५ गुणो	१८
३२	,, साधुपदना २७ गुण	१९
३३	,, दर्शनपदना ६७ गुण	२०
३४	,, ज्ञानपदना ५१ गुण	२४
३५	,, चारित्रपदना ७० गुण	२६
३६	,, तपपदना ५० गुण	३०
३७	,, चैत्यवदन नवपदनो	३३
३८	,, सिद्धचक्र स्तवन	३४
३९	,, नवपदनी थुइ	,,
४०	,, नवपद चैत्यवदन	३५
४१	,, ,, स्तवन	३६
४२	,, ,, थुइ	,,

न०	विषय	पृष्ठ
४३	अथ नवपदओली करण विधि	३८
४४	„ विशस्थानक तपकरण विधि	४०
४५	, प्रथम अरिहंतना१२भेद	४१
४६	, बीजा सिद्धपदना३१ „	४२
४७	, त्रीजा पवयण २७ „	४४
४८	„ चोथा आचार्य, ३६ „	४५
४९	, पांचमा स्थविर „ १० „	४७
५०	, छठा उपाध्याय „ ५ ,	,
५१	„ सातमा साधु „ ७ ,	४७
५२	„ आठमा ज्ञान , ५१ „	५०
५३	„ नवमा दर्शन ६७ „	५२
५४	दशमा विनय „ ५२ „	५६
५५	„ इग्यारमा चारित्र „ ७० ,	५९
५६	„ बारमा ब्रह्मचर्य १८ ,	६३
५७	„ तेरमा क्रिया „ २५ „	६४
५८	„ चउदमा तपसीए , १२ „	६५
५९	„ पनरमा गौतम , १० „	६६
६०	„ सोलमा जिणाण „ २० „	,
६१	, सतरमा संजम „ १७ ,	६७
६२	, अढारमा ज्ञान „ ५१ ,	६८
६३	„ ओगणीसमा श्रुत २० ,	७१
६४	, वीसमा तीर्थ , ३८	७२
६५	„ वीसस्थान चैत्यवंदन	७४
६६	अथ वीसस्थानक थुइ	७५
६७	, वीसस्थानकनु स्तवन	७६
६८	, दीवालीपर्वनु गुणणो	७८
६९	, ज्ञानपंचमीपर्वअधिकार	७९
७०	„ चैत्यवंदन	८०
७१	, थुइ (वसंततिलका)	८१
७२	अथ पांच नमस्कार	८२
७३	अथवा ११ अंगना नमस्कार	,
७४	अथ प्रथम आचारांगनी सज्झाय	८५
७५	बीजी सुयगडांगनी	, ८६
७६	„ त्रीजी ठाणांगनी	८७
७७	, चोथी समवायांगनी	,,,
७८	, (५) भगवतीसूत्रनी	८९
७९	„ (६) ज्ञातासूत्रनी	, ९०
८०	, (७) उपासकदशांग	, ९२
८१	, (८) अंतगडदशांगनी	९३
८२	(९) अनुत्तरोववाइ अंग	९४
८३	, (१०) प्रश्नव्याकरणांग	९५
८४	(११) विपाकसूत्रनी „	९६
८५	कलश	९७
८६	अथ मौनएकादशी पर्व अधिकार	९८
८७	अथ मौनएकादशीनो १५० गुणणो ९९ से १०९ पृष्ठ तक	

नं०	विषय	पृष्ठ
८८	पोरसदि १० तप गुणणो	११०
८९	अथ मेरुतेरसतपनी	,,
९०	,, रोहिणी तप	१११
९१	,, सोलिया (वर्गवर्ग) तपनी विधि	११२
९२	,, पखवासो तपविधि	११३
९३	,, छमासी	,,
९४	,, चपी	११४
९५	,, २८ लब्धी	११५
९६	२८ लब्धिनो गुणणो	११६
९७	अथ १४ पूर्व तपविधि	११७
९८	,, ,, गुणणो आदि	११८
९९	,, तिलक तपविधि	,,
१००	,, ४५ आगम ,,	१२०
१०१	११ अंग गुणणो	,,
१०२	वे जुटक मन्त्र	१२३
१०३	११ गणधर तप	,,
१०४	गणधरनो जाप	,,
१०५	नवकार तपविधि	१२४
१०६	इन्द्रिय जय तप	१२५
१०७	८ कर्म सूदन तप	,,
१०८	चन्दन बालानो अट्ठम तपविधि	१२७
१०९	अथ पञ्चकल्याणक तपविधि	,,
११०	पञ्चकल्याणकनु गुणणो—पृष्ठ १२८ से १३५	
१११	अथ गौतम पात्र तपविधि	,,
११२	घनवर्गी तप	,,
११३	नवर्गी तप	१३६
११४	आंबील वर्द्धमान तप	,,
११५	अथ नंदीश्वर तपविधि	१३७
११६	दर्शन	,,
११७	ज्ञान	,,
११८	चारित्र	,,
११९	धर्मचक्र तप	१३८
१२०	योगशुद्धि ,,	,,
१२१	यवमध्य वज्रमध्य चान्द्रायण तप	,,
१२२	तीर्थंकर वर्धमान तप	१३९
१२३	परम भूषण तप	१४०
१२४	तीर्थंकर दीक्षा तप	,,
१२५	,, ज्ञान ,,	,,
१२६	,, निर्वाण ,,	१४१
१२७	चतुर्विध संघ ,,	१४२
१२८	तीर्थंकर च्यवन ,,	,,
१२९	,, जन्म ,,	,,
१३०	संवत्सर ,,	१४३
१३१	पचोत्तर तपओली	,,
१३२	समवसरण तप	,,

न० विषय		पृष्ठ
१२३ दर्शाविध यति धम तप		१४४
१३४ पनपरमेष्ठी	"	"
१३५ सघाङ्ग सुदर	"	१४५
१३६ निरूकसिंह	"	"
१३७ सौभ ग्य कल्पवृक्ष	"	"
१३८ कागरद पावडी तपचो		१४६
१३९ अनु लदर्शि सर्वसुख सपत्ति तप		"
१४० सम चतुर्थ	"	"
१४१ सम चकवाल	"	१४७
१४२ चत्तारि अठ दस दोय,		"
१४३ गौतम कमल	"	"
१४४ सिंहासण	"	"
१४५ १० दश पच्चक्खाण	"	१४८
१४ घड़ीया वे घड़ीया	"	"
१४७ पाच छठ	"	"
१४८ अक्षय निधि	"	१४९
१४९ शाश्वत मेरु पर्वत	"	१५१
१५० कपली	"	"
१५१ शाश्वत जिन	"	१५०
१५२ सिद्धि	"	"
१५३ मोक्ष करंसक	"	"
१५४ स्वर्ग	"	१५३
१५५ रत्न रोपण		"
१५६ नव कमल	तप	१५४
१५७ सूरायण	"	"
१५८ ९६ जिन	"	"
१ अतीत चोवीसी जिन गुणणो		"
२ वर्तमान चोवीसी जिन		१५५
३ अनागत	"	१५७
४ वीश विरहमान,	"	१५८
५ ५ शाश्वत	"	१५९
१५९ १७० जिन तप		"
१ जनुद्वीप महा विदेह ३२ जिन		"
२ धात की खण्ड पूर्व महा विदेह ३२ जिन		१६[illegible]
३ धात की खण्ड पश्चिम महा विदेह ३२ जिन		१६[illegible]
४ ५ पुष्करार्ध पूर्व महा विदेह ३२ जिन		१६[illegible]
५ पुष्करार्ध पश्चिम विदेह ३२ जिन		१६[illegible]
१६० केवल दशा तप		१६[illegible]
१६१ अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तप		१६[illegible]
१६२ पाच पच्चक्खाण		"
१६३ पञ्चमहाव्रत तप		"
१६४ सकल तीर्थ नमस्कार		१[illegible]



ॐ ह्रीँ अर्हँ नमः

॥ श्रीजिनदत्तसूरिभ्यो नमः ॥

॥श्रीनवपदादि तपविधिसंग्रह॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय जय श्रीअरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी ॥
लोकालोक अरूपिरूपि, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥१॥
समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृतमल राशी ॥
शुक्लचरम शुचि पादसे, भयो वर अयोगनाशी ॥२॥
अतरंत रिपु गण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत ॥
तसुपद पंकजमें रहत, हीर धर्म नित संत ॥३॥

न० विषय	पृष्ठ
१३० दशविध यति धर्म तप	१५४
१३४ पंचपरमेष्ठी	„
१३५ सर्वांग सुन्दर „	१५५
१३६ निरूजसिख „	„
१३७ सौभाग्य कल्पवृक्ष „	„
१३८ अणगद पावड़ी तपथो	१५५
१३९ अतु लवर्शि मयंसुम्न सम्पत्ति तप	„
१४० कर्म चतुर्थ „	„
१४१ कर्म चक्रपाल „	१५७
१४२ चत्तारि अठ दस दोय „	„
१४३ गौतम कमल „	„
१४४ सिंहासण „	„
१४५ १० दश पच्चक्खाण „	१५८
१४६ धड़ीया बे घड़ीया „	„
१४७ पांच छठ „	„
१४८ अक्षय निधि „	१५९
१४९ शाश्वत मेरु पर्वत „	१५१
१५० पचली „	„
१५१ शाश्वत जिन „	१५२
१५२ सिद्धि „	„
१५३ मोक्ष कारंभक „	„
१५४ स्वर्ग „	१५३
१५५ रत्न रोपण „	„

न० विषय	पृष्ठ
१५६ नव कमल तप	१५८
१५७ सूरायण „	„
१५८ ९६ जिन „	„
१ अतीत चोवीसी जिन गुणणो	„
२ वर्तमान चोवीसी जिन	१५६
३ अनागत „	१५७
४ वीश विरहमान „	१५८
५ ४ शाश्वत „	१५९
१५९ १७० जिन तप	„
१ जबूद्वीप महा विदेह ३२ जिन	„
२ धात की खंड पूर्व महा विदेह ३२ जिन	१६१
३ धात की खंड पश्चिम महा विदेह ३२ जिन	१६३
४ ५ पुष्करार्धे पूर्व महा विदेह ३२ जिन	१६४
५ पुष्करार्धे पश्चिम विदेह ३२ जिन	१६६
१६० केवल दश तप	१६८
१६१ अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तप	१६[illegible]
१६२ पांच पच्चक्खाण	„
१६३ पंचमहाव्रत तप	„
१६४ सकल तीर्थ नमस्कार	१७[illegible]



ॐ ह्रीँ अर्हं नमः

॥ श्रीजिनदत्तसूरिभ्यो नमः ॥

॥ श्रीनवपदादि तपविधि[illegible] ॥

॥ अथ अरिहंतपद [illegible] ॥

जय जय श्रीअरिहंत भानु, भवि [illegible] विकासी ।
लोकालोक अरूपिरूपि, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥
समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृतमल राशी ॥
शुक्लचरम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥
अंतरंग रिपु गण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत ॥
तसुपद पंकजमें रहेत, हीर धर्म [illegible]

॥ ३ अरिहंत पद स्तवन ॥

श्रीतेरमेगुण वसिके फत, कर्मकु भजे श्रीअरिहंत। मनमानले। अष्ट समय में समय तीन, सर्व आहारथी हावे हीन। मन०॥१॥ बादर कायो मन वच भोग, लघु लनुले पुन हढ तनुयोग। मन०। सुखम कायत मन वच रोक,निजवीर्ये ताकु कर फोक।मन० ॥२॥ सज्ञीमात्र के मन व्यापार,वे इन्द्रीनू वाक्य प्रकार। मन० आदिसमय रह्यो पण कसु जीय, सुखम लह्यो तिण जोग अतीय। मन० ॥३॥ एसा योगथी समय एक, हीना सख गुणा करी छेक। मन०। समया सखे जोग निरोध, कृत्वा जो रह्यो जोगी बोध। मन० ॥४॥ चेदसमे अनाहारतापाय, कुशल,पहे ते श्रीजिनराय। मन०। तेरमे गुणमे गुण समे देव, आपो सा जगकु नितमेव। मन० ॥ ५ ॥

॥ अथ अरिहंतपद थुइ ॥

'सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपोजी। केवलज्ञान की ज्योति प्रकाशक, अनन्त गुणे करी पूरोजी॥ बीजें भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी। यारे गुणा करी एहवा अरिहत, आराधो गुण भूरोजी॥ १॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन त्रिभागी। पुव्व पयोगप्रसंगमे, ऊर्ध्वगति जागी ॥ १ ॥ समय एक में लोक प्रान्त, गये निगुण नीरागी। चेतन भूपे आतम रूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दसण नाण थीए, रूपातीत स्वभाव। सिद्ध भए गहु हीर धर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥

(थारे महिलां ऊपर मेह जरोखे बीजली ॥ ए चाल)

अष्ट करम नग मास हीना कोडी पूर्वमें म्हारा लाल ही०। उत्कृष्ट करे वास सयोगी धाममें म्हा० स०॥
अजोगी के अत तजे भव भव्यना म्हारा० ॥ त० ॥
शैलेशी लहि नष्ट दले गुणश्रेणिना म्हा० ॥ द० ॥१॥
हस्याक्षर पण काल रहे ते योग में। म्हा० र० ॥
तेरम प्रकृतिनो अन्त, करीने अन्तमें म्हा० क० ॥
गमन करे नगरजसे। अक्रिय रोधमें म्हा० अ० ॥
पुव्वपयोग अमा स्वभाव अघथी म्हा० स्व० ॥२॥
ईपु गुण नयपरिमाण जोजन लक्षेकही म्हा० जो०॥
यतुंल विशद भाग, निरालंबन सही म्हा० नि० ॥
मध्ये जोजन अष्ट, घनी ऋति अन्तमें म्हा० घ० ॥

मही पसथी हीन भणी सिद्धान्त में म्हा० भ०॥३॥
तनुप-स्मारा नाम शिलासें जोयनें म्हा० शि० ॥
लघु अगुल बत्तीस प्रमाण अवगाहना म्हा० प्र० ॥
पूद्गिधनु शत पच, गुणसे हीनता म्हा० गु० ॥
मिलिया एकमें लत, अबाधा नाल्हीं म्हा० अ० ॥
अष्ट माण धरि रुप्य सिरो रिजो सही म्हा० चि०॥
बीजो पद श्रीसिद्ध धरी मन गेहमें म्हा० धरो० ॥
कुशल भये जग जीव मिलोशा तेहने म्हा० मि० ॥५॥

॥ अथ सिद्धपदनो थुइ ॥

अष्ट करमकु दमन करानें, गमन कियो शिव वासीजी । अव्याबाध सादि अनादि, चिदानन्द चिदराशीजी । परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनाशीजी । अनत चतुष्टय शिवपद ध्यायो, केवल ज्ञानी भाषीजी इति ॥ २ ॥

॥ अथ आचार्य पद चैत्यवदनम् ॥

। ०॥जिनपदकूल सुजा रस अनिल । मितरसगुण धारी प्रबल सबल घन मोहकी । जिणने चसु हारी ॥१ कजवादिक जिनराजगीते । नय तन विस्तारी । म

कूपे पापें पडत । जगजन निस्तारी ॥ २॥ पञ्चाचारी जीवके । आचारज पदसार । तिनकुं वदे हीर-धर्म अठोत्तरसोवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्यपदस्तवन ॥

(गणदल चांदलीले ए चाल)

खती खङ्गधी जेणें । हण्यो क्रोध सुभट मन देणें हो । गणपति गुण पेखो । मन महागिरि वयरे । अति सोमन मद्य वयरें हो । ग० । दभरूप विषवेली । घर घल्लव कीले ठेली हो ॥ ग० ॥ मूर्च्छा बिलथी भरीयो । लोह सागर मुत्तेतरियो हो ॥ग०॥ ॥ २॥ मदनानाग मद हीनो । जिणद्रस धाम अंग्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह महामल्ल-तोडयो । पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोप गयंद वस कीनो । धरी उपमश अङ्कुश लीनो हो ॥ ग०॥ अतरंगरिपु सेया । सुरवर पिणाजिण निषेध्या हो। ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृती गुणथी लीनो । सूत्र अर्थ आगम पीनो हो, ॥ ग० ॥ आचारजि पद एहवा । धरी जीव कुशलना सेवो हो । ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ आचार्यपदनी थुइ ॥

पंचाचारकू पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारीजी । गुण छतीसे आगमधारी, द्वादश अंग विचारीजी । प्रबल सबल घन मोह हरणकू । अनिल समा गुण धाणीजी । क्षमा सहित जे संयम पाले आचारज गुण धारीजी ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ उवज्झायपद चैत्यवंदनम् ॥

घन घन श्री उवझाय राय । शाठना घन भञ्जन ॥
जिनवर देशित द्वादशांग । घरकृतजनरञ्जन ॥ १ ॥
गुणरण भजण मण गयउ । सुयरणि रविव गजण ॥
कुतप लोय लोयणो । जत्थए सुय मजण ॥ २ ॥
महा प्राणमें जिन रह्यो ए । आगमसे पद तुर्य ।
तिनपें अहनिश ढीर धर्म । थर्दे पाठकवर्य । ३ ।
इति ॥ ४ ॥

॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन ॥

(सांवरिया बलमा रहौरे ए चाल)

दुपनें रे दूरी दुपनें । चेतन मावे पाठनें दूरी होयनें तु मुझ पास क्यु आवे दू० तुझनें कुण बतलावे दू० ॥ आकणी ॥ तो सगे निज पचेंद्रीनो । रचना परम सुलाणो । नाणा धरणी राय उपझा-

मसे । मावेंद्री मंडाणो दू० ॥ १ ॥ द्रव्यें ते पर-जाप्तें कीना । जातिनाम व्यपदेश । एव तो गो तुरग गजादिक । किण कर्मे उपदेश दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुझकु शंका । तेरे सग लागी । नीलवर्ण की शमतासेती । मैं भयो तोसुरागी दू० ॥ ३॥ उप कहिये इणीयो अचियानो । अधिया लाभत आय आधीनामन पीडानामें, मायोयेन विलाए दू॥४ आधिक्यै स्मरायै वर आगम । सूत्रलेत उवझाय तत्से-या तें इणि सठताकुं।चेतन कुशलता थाय दू.इति॥५॥

॥ अथ उपाध्याय पद स्तुति ॥

अग इग्यारे चउदे पूरव , गुण पचवीसना धारीजी । सूत्र अरथधर पाठक कहिये,जोग समाधि विचारीजी तपगुणसूरा आगम पूरा, नयनिक्षेपे तारीजी । मुनि गुणधारी बुधविस्तारी, पाठक पूंजो अधिकारीजी इति ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपद चैत्यवदनाम् ॥

दृशण नाण चरित्त करी । वरशीवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि ध्यानसें । आदि अखय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त रापमत्तसें । भये अतर जामी ।

इंद्रिय दमनभूत । शमदम अभिरामी ॥ २ ॥
भाकति घन गुणगण भर्या ए । पंचमपद मुनिराज
तत्पद् एकज ममत है ॥ हीर धर्म के काज ॥ ३ ॥

॥ अथ साधुपद स्तवन ॥

(माखन माखन मति कहो ए-चाल)

निकषाया जग जन्न है । धारे चउगति वसनसें
रोप हो मुनिंदजी । रागहीन भय तु करै । साहिया
शिव रमणी सें हेतशे मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद
तजी रहै सा० छठे पूरव कोड हो ॥ मु० सात
सोगम आगम करे सा० लघु पाले गुण आदि हो॥
मु० ॥ २ ॥ सत्यानर्द्धि निंद्राउदे सा० यामें कर्म
निकन्द हो मु० प्रचला निंद्रामें रही सा० । बारम
गुणनो वासहो मु० ॥ ३ ॥ स्थितिरस घात प्रमुख
करै सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० तोपिण
तिण जग मे लही सा० त्रिक घन गुणनीरुपात
हो मु० तो पिण तिण जगमें लही सा० त्रिक घन
गुणनीरयात हो मु० ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथे
सा० साधन परवर जीव हो मु० साधु हुवइ तसु
धर्ममें सा० कुशल भवतु जगतीय हो मु० ॥५॥ इति

॥ अथ साधुपद थुई ॥

सुमति गुपति कर संजम पाले, दोष बयालीश टालेजी। षट् काया गोकुल रखवाले, नव विध ब्रह्मव्रत पालेजी। पंचमहाव्रत सुधा पाले, धर्म शुक्ल उज्वालेजी ॥ क्षपक श्रेणि करि कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदनम् ॥

हुए पुग्गल परियट्ट। अद्ध परमित संसार ॥ गठि भेद तब करि लहै। सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शासि उपसम। उपशमपण वार। विना जेण चारित्र नाण नहीं। हुवै शिवदातार ॥ २ ॥ श्रीदेव गुरुधर्मनीए। रुचि लच्छन अभिराम। दरशनकुं गणि हीर धर्म। अहनिश करत प्रणाम ॥ ३॥ इति

॥ अथ दर्शनपद स्तवन ॥

॥ रामचन्द्रके बाग आंबो मोहरह्योरी ॥ ए चाल ॥

देव श्रीजिनराज। गुरु ते साधु भण्योरी। धर्म जिनेश्वर प्रोक्त। लक्षण बोधि तणोरी ॥१॥ बोधि लाभके काज। सप्तम नरक भलोरी। तेण विना सुरलोक। तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या-

तापे तप्त । बोध ही छांह लहेरी । उपशम क्षायक भेद । ईश्वर तीन कलोरी ॥ ३ ॥ भवसागर है अपार । कुण असनाघ कलोरी । जसुलाभे ते होय । गोसप्प माध्य खरोरी ॥ ४ ॥ यद्-भावें अप्रमाण । नाण चारित्त भलोरी । बोध धर्ममें जीव । लाभे कुशल कलोरी ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ दर्शनपद थुइ ॥

जिन पणत्त तत्त्व सुधा सरधे, समकित गुण उजवालेजी । भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुरपालेजी । प्रत्याख्यानें समतुल्य भाख्यो, गणधर अरिहतराजी । ए दरशनपद नित नित वदो, भवसागरको तीराजी ॥ इति

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवदनम् ॥

क्षिमादिक रस राम विन्हं । मित आदम नाण भाव मिलापसें जिन जनित । सुय चौदा प्रमाण १ भवगुण पज्जवओहि दोय । मण लोचन नाण । लोका-लोक सरूप जाण । इक केवल भाण ॥ २ ॥ नाणा-वरणीनासथीए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमे हीर धर्म । नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ इति

प्राप्त घरम प्रकारता। सत प्राभृतका तेन सु० ॥४॥
तद्रोघनरूपी भलो। चेतन संयम धाम (सु०)
कर घनमिलपद धर्मस्। कुशल भवतु अभिराम
(सु०)॥५॥ इति

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

करमअपचय दूर खपावै, आतम ध्यान लगावैजी। यारे भावना सूधी भावै, सागर पार उतारेजी। षट्खंड राजकु दूर तजीनें, चक्री भजन धारेजी एह्यो चारित्रपद नित नित वंदो आतम गुण हितकारेजी ॥ इति

॥ अथ तपपद चैत्यवंदनम् ॥

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ। तद्भवसिव जाण।
विहि सतैरपि बाह्य। मध्य द्वादश परिणाम ॥ १ ॥
वर्लु कर्मित आमोसही। आदिक लब्धि निदान
भेदै ममतासुतास्विर्णो। इगघन कर्म विमान ॥ २ ॥
नवमो श्रीतपपद भलोए। इच्छा रोध सरूप।
नित शिर धर्म। दूर भवतु भवकूप
॥ इति

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

भेद भण्या जिनराजे। बाह्य मध्य

धन चित्तधारोजी । अवधि मन-पर्यव केवल वलि प्रत्यक्षरूप अवधारोजी । ए पांच ज्ञानकु वंदो पूजो, भविजनने सुखकारोजी ॥ इति

अथ चारित्रपद चैत्यवन्दनम् ॥

जस्स पसायें माहु पाय । जुग जुग समितेंद । नमन करें सुभ भावलाय । कुण नरपति वृन्द ॥१॥ जपे धुरि अरिहतराय । करि कर्म निकन्द । सुमति पंच तीन गुप्तियुतादे सुस्व अमंद ॥ २ ॥ इयु कृति मान कषायधीए । रहित देश सुविचन्त ॥ जीव चारित्तकु हीर-धर्म । नमन करत नित मत रे इति

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

निर्विकल्प अजनिर्गुणी । चिदाभास निरमग । (सुग्यानी सांभलो) मूर्तिहीन चेतन करे । रूपी पुद्गल रङ्ग (सुग्यानी सा०) ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा । कार्य कारण भाव सु० कृत्या जोग सुधा- मता । लब्धा सत्व स्वभाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोग में । वृद्धिलहै जुगमान (सु०) मदये वस्तुसमर्थे लहै । अंते द्रोते आप [सु०] ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा । कारण रम्य पलेण सु०

प्राप्त यस्य प्रकारता । सम,प्राभृतका तेन सु० ॥४॥ तद्रोघनरूपी भलो । चेतन स्वयम धाम (सु०) कर घनमिलपद धर्मसू । कुशल भवतु अभिराम (सु०) ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ चरित्रपद थुई ॥

करमअपचय दूर खपावै, आतम ध्यान लगावैजी । प्यारे भावना सुधी भावै, सागर पार उतारेजी । पट्खंड राजकुं दूर तजीनें, चक्री मज ग वारेजी, एवो चारित्रपद नित निल धरो आतम गुण हितकारेजी ॥ इति

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनम् ॥

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ । तद्भवशिव जाण । विहि शुतैरपि बाह्य । मध्य द्वदश परिणाम ॥ १ ॥ धर्म कर्मित आमोसही । आदिक लब्धि निधान भेदे समतासुमाविर्णो । इन्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद भलोए । इच्छा रोध सरूप । वढनसें नित रिहि धर्म । दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

बारम भेद भण्या जिनराजे । बाह्य मध्य

तथा उत्तकाजैरे (शिवपदश्रेणी)। तिण भव सिद्धितणा वर ग्याता। जिनवर पिण तपना करतारे ॥१॥ [शि०] समता सहिते जिनते भारी। भली कर्म पमुरुषिण हारी रे (शि०) जीव कनकसें कर्म कथोरा। दहै तप पावनका जोरारे (शि०)॥२॥ तप तरुवरना कुसुम है ऋद्धि। देव नरनाफलने सिद्धीरे (शि०) पाप सकलहैं तमनी राशी। तप. भानूसें जावे नाशीरे (शि०) ॥३॥ जस्सा पसाये लहिये वारू। लब्धी सगली जगहित कारूरे (शि०) अति दुष्कर फण साध्यतोहीना। कामतातें वारू कीनारे (शि०) ॥ ४ ॥ इच्छारोधनरूपी कहिये। तपपद से कृपा से। नवपद चेतन वहियेरे, पाठक हीर धर्म कुशलकू भासेरे (शि०) ॥ ५ ॥

॥ अथ तपपद थुई ॥

इच्छारोधन तपतें भाख्यो, आगम तेहनो साखीजी। द्रव्य भावसें द्वादशा दाखी, जोग समाधि राखीजी। चेतन निजगुण परणित पेखे, तेहीज तप गुण दाखीजी। लब्धि सकलनो कारण देखी, ईश्वरसें मुखभाषीजी ॥ इति

॥ अथ अरिहतना १२ गुण ॥

१ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
४ चामर युग प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
५स्वर्णसिंहासन प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहतायनम
६ भामडल प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
७ दुंदुभि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नम
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहताय नमः
९ ज्ञानातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः
१० पुजातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः
११ वचनातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नम
१२ अपायपगमातिशय सयुताय श्रीअरिहताय नमः

॥ अथ सिद्धना ८ गुण ॥

१ अनन्त ज्ञान सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
२ अनन्त दर्शन सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः
४ अनन्तचारित्र गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
५ अक्षयस्थिति गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नम

६ अरूपीनिरंजन गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
७ अगुरु लघु गुणो सयुताय श्रीसिद्धाय नमः
८ अनन्तवीर्य गुण सयुताय श्रीसिद्धाय नमः

॥ अथ आचार्यवंदना ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूप गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
२ सूर्यवत्तेजस्वि गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
३ युगप्रधानागम सयुताय श्रीआचार्याय नम
४ मधुरवाक्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
५ गाम्भीर्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
६ धैर्य गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
७ उपदेश गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
८ अपरिश्रावी गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
९ सौम्य प्रकृति गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१० शीलगुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
११ अविग्रह गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१२ अविकथक गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१३ अचल गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१४ प्रसन्न वदन गुण सयुताय श्रीआचार्याय नम
१५ क्षमा गुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
१६ ऋजु गुण संयुताय श्रीआचार्याय नम

१७ मृदु गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः
१८ सर्व्व संग मुक्ति गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः
१९ द्वादश विधतप गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः
२० सप्तदशविध संयम गुण संयुताय श्रीआचार्याय नम
२१ सत्यव्रत गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नम.
२२ शौच गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः
२३ आकिंचन गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नम॰
२४ ब्रह्मचर्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः
२५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
२६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम.
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकायश्रीआचार्यायनम
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम॰
३२ संवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः

॥ अथ उपाध्यायना २५ गुणो ॥

१ आचारांगसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपाध्याय नमः
२ सुयगडांगसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपाध्याय नम
३ श्रीठाणांगसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपाध्यायनमः
४ श्रीसमवायंगसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपा० नमः
५ श्रीभगवतीसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपा० नम.
६ श्रीज्ञातासूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपा० नमः
७ श्रीउपाशकदशांगसूत्र पाठनगुणसयु० श्रीउपा०नमः
८ श्रीअंतगडदशांगसूत्र पाठनगुणसयु० श्रीउपा०नमः
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउ० नमः
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पाठनगुण सयुताय श्रीउ०नमः
११ श्रीविपाकसूत्र पाठनगुणसयुताय श्रीउपा० नम.
१२ श्रीउत्पादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नम
१३ श्रीआग्रायणीपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा०नम
१४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नम
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
१७ सत्यप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः
१८ आत्मप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नम
१९ कर्मप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुताय श्रीउपा० नमः

२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुनाय श्रीउ०नमः
२१ विद्याप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुनाय श्रीउपा० नमः
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व पाठनगुण सयुनाय श्रीउपा०नमः
२३ प्राणायामप्रवादपूर्व पाठनगुणसयुनाय श्रीउ०नमः
२४ क्रियाविशालपूर्व पाठनगुण सयुनाय श्रीउपा०नम
२५ लोकबिंदुसारपूर्व पाठनगुण सयुनाय श्रीउपा०नम.

॥ अथ साधुपदना २७ गुण ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रतसयुताय	श्रीसाधवे नमः
२ मृषावादविरमणव्रत सयुताय	श्रीसाधवे नमः
३ अदत्तादानविरमणव्रतसयुताय	श्रीसाधवे नमः
४ मैथुनविरमणव्रतसयुताय	श्रीसाधवे नम.
५ परिग्रहविरमणव्रतसयुताय	श्रीसाधवे नम
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतसयुताय	श्रीसाधवे नम
७ पृथ्वीकायरक्षकाय	श्रीसाधवे नमः
८ अप्कायरक्षकाय	श्रीसाधवे नम.
९ तेऊकायरक्षकाय	श्रीसाधवे नमः
१० वाऊकायरक्षकाय	श्रीसाधवे नमः
११ वनस्पतिकायरक्षकाय	श्रीसाधवे नमः,
१२ त्रसकायरक्षकाय	श्रीसाधवे नमः
१३ एकेंद्रियजीवरक्षकाय	श्रीसाधवे नमः

१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१५ त्रेइंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१६ चौरिंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१७ पचेंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः
१८ लोभनिग्रहकारकाय श्रीसाधवे नमः
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
२० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नमः
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः
२२ संयमयोगसंयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
२३ मनोगुप्तिसंयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
२४ वचनगुप्तिसंयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
२५ कायगुप्तिसंयुक्ताय श्रीसाधवे नमः
२६शीतादिद्वाविंशतिपरीशहसहणतत्पराय श्रीसा०नमः
२७ मरणांत उपसर्ग सहन तत्पराय श्रीसाधवे नमः

॥ अथ दर्शनपदना ६७ गुण ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२ परमार्थज्ञातृसेवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
५ शुश्रूषारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः

६ धर्मरागरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
७ वैयावृत्यरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
८ अर्हद्विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
९ सिद्धविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१० चैत्यविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
११ श्रुतविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१२ धर्मविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१३ साधुवर्गविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१४ आचार्यविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१५ उपाध्यायविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१६ प्रवचनविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१७ दर्शनविनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१८ संसारेजिनसारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
१९ संसारेजिनमतसारमितिचिंतनरूप श्रीसद्दर्शनायनमः
२० ससारेजिनमतस्थित साध्वादिसारमिति चिंतन-रूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२१ शंकादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
२२ कांक्षादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
२३ विचिकित्सारूप दूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
२४ कुदृष्टिप्रशंसा दूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
२५ कुदृष्टिपरिचयदूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः

२६ प्रवचनप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२७ धर्मकथाप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२८ वादिप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२९ नैमित्तिकप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
३० तपस्विप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
३१ प्रज्ञप्त्यादिविद्याभृत्प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३३ कविप्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३४ जिनशासने कौशल्यभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३५ प्रभावनाभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३६ तीर्थसेवाभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३७ धैर्यभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३८ जिनशासने भक्ति भूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
३९ उपशमगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४० संवेगगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४१ निर्वेदगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४२ अनुकंपागुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४३ आस्तिक्यगुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम
४४ परतीर्थकादिवंदनवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४५ परतीर्थिकादिनमस्कारवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
श्रीसद्दर्शनाय नमः

४७ परतीर्थकादिमलापवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४८ परतीर्थकादिअसनादिदानवर्जनरूप श्रीस० नमः
४९ परतीर्थकादिगंधपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूप श्रीस० नमः
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीसद्दर्शनाय नम
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नम
५६ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्यमूलमिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नमः
५७ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मपुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नमः
५८ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नम
५९ सम्यक्त्वंचारित्रधर्मस्याधारमितिचिंतनश्रीस० नम
६० सम्यक्त्वंचारित्रधर्मस्यभाजनमितिचिंतनश्रीस० नमः
६१ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्य निधि संनिभ मिति चिंतन श्रीसद्दर्शनाय नमः
६२ अस्तिजीवेतिश्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीसद्दर्शनायनमः
६३ सचजीवो नित्येति श्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीस० नम.

६४ सचजीवः कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
६५ सचजीवः कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥ अथ ज्ञानपदना ५१ गुण ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
२ रसनेंद्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
३ घ्राणेंद्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
४ श्रोत्रेंद्रिय व्यजनावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
५ स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
६ रसेन्द्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
७ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
८ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नम
९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
१० मनोऽर्थावग्रहाय श्रीमति ज्ञानाय नमः
११ स्पर्शेन्द्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम
रसेन्द्रिय ईहा श्रीमति ज्ञानाय नम.

१३ घ्राणेंद्रिय	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नम.
१४ चक्षुरिंद्रिय	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१५ श्रोत्रेंद्रिय	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नम
१६ मन	ईहा	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१७ स्पर्शेन्द्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१८ रसेन्द्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
१९ घ्राणेंद्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२० चक्षुरिंद्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नम'
२१ श्रोत्रेंद्रिय	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२२ मननो	अपाय	श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२३ स्पर्शेंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२४ रसेंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नम'
२५ घ्राणेंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२६ चक्षुरिंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२८ मनोधारणा		श्रीमति	ज्ञानाय	नमः
२९ श्रीअक्षर		श्रुतज्ञानाय	नमः	
३० श्रीअनक्षर		श्रुतज्ञानाय	नमः	
३१ श्रीसज्ञी		श्रुतज्ञानाय	नमः	
३२ श्रीअसज्ञी		श्रुतज्ञानाय	नमः	
३३ श्रीसम्यक्		श्रुतज्ञानाय	नमः	

३४ श्रीमिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः
३५ श्रीसादि श्रुतज्ञानाय नमः
३६ श्रीअनादि श्रुतज्ञानाय नमः
३७ श्रीसपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः
३८ श्रीअपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः
३९ श्रीगमिक श्रुतज्ञानाय नमः
४० श्रीअगमिक श्रुतज्ञानाय नमः
४१ [illegible]अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः
४२ श्रीअनंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः
४३ श्रीअनुगामि अवधिज्ञानाय नमः
४४ श्रीअननुगामि अवधिज्ञानाय नमः
४५ श्रीवर्द्धमान अवधिज्ञानाय नमः
४६ श्रीहीयमान अवधिज्ञानाय नमः
४७ श्रीप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः
४८ श्रीअप्रतिपाती अवधिज्ञानाय नमः
४९ श्रीऋजुमति मन पर्यवज्ञानाय नमः
५० श्रीविपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नमः
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः

॥ अथ चारित्रपदना ७० गुण ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप श्रीचारित्राय नमः
२ मृषावादविरमणरूप श्रीचारित्राय नमः

३ अदत्तादानविरमणरूप	श्रीचारित्राय	नम
४ मैथुनविरमणरूप	श्रीचारित्राय	नम
५ परिग्रहाविरमणरूप	श्रीचारित्राय	नम
६ क्षमाधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
७ आर्जवधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
८ मृदुताधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नम·
९ मुक्तिधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नम'
१० तपोधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नम'
११ सयमधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१२ सत्यधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१३ शौचधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नमः
१४ अर्किचनधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नम
१५ ब्रह्मचर्यधर्म्मरूप	श्रीचारित्राय	नम·
१६ पृथ्वीरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नम'
१७ उदकरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नम'
१८ तेउरक्षासंयम	श्रीचारित्राय	नमः
१९ वाउरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
२० वनस्पतिरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नम
२१ बेइंद्रियरक्षासयम	श्रीचारित्राय	नमः
२२ तेइन्द्रियरक्षासयम·	श्रीचारित्राय	नमः
२३ चऊरिंद्रियरक्षासयम	श्रीचारित्रांय	नमः

२४ पचेंद्रियरक्षासयम श्रीचारित्राय नम'
२५ अजीवरक्षासयम श्रीचारित्राय नमः
२६ प्रेक्षासयम श्रीचारित्राय नमः
२७ उपेक्षासयम श्रीचारित्राय नमः
२८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादिपरठण त्यागरूप सयम गुणयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः
२९ प्रमार्जनरूप श्रीचारित्राय नमः
३० मन सयमरूप श्रीचारित्राय नमः
३१ वाक्सयमरूप श्रीचारित्राय नम
३२ कायसयमरूप श्रीचारित्राय नमः
३३ आचार्यवैयावृत्यरूपसयम श्रीचारित्राय नम'
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप सयम श्रीचारित्राय नमः
३५ तपस्विवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नम'
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
३७ ग्लानसाधु वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नम
३८ साधुवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
३९ श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नम'
४० सघवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः
४१ कुलवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नम'
४२ गणवैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः

४३ पशुपडगादि रहित वसति वसन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नम
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नम॰
४६ स्त्रीअंगोपाग निरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४७ कुडयांतर सहित स्त्री हावभाव सुणन वर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नम
४९ प्रतिसरस आहार वर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्रायनम.
५० प्रतिआहार वर्जनब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
५१ अगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त श्रीचारित्राय नमः
५२ अनशनतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५३ ऊनोदरीतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५४ वृत्तिसक्षेपतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५५ रसत्यागतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५६ कायकिलेसतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
५७ सलेखणातपोरूप श्रीचारित्राय नम
५८ प्रायश्चित्ततपोरूप श्रीचारित्राय नम
५९ विनयतपोरूप श्रीचारित्राय नम॰
६० वैयावच्चतपोरूप श्रीचारित्राय नमः

६१ स्वाध्यायतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
६२ ध्यानतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
६३ उपसर्गतपोरूप श्रीचारित्राय नमः
६४ अनंतज्ञानसंयुक्त श्रीचारित्राय नमः
६५ अनंतदर्शनसंयुक्त श्रीचारित्राय नमः
६६ अनंतचारित्रसंयुक्त श्रीचारित्राय नमः
६७ क्रोधनिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
६८ माननिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नम
६९ मायानिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नम
७० लोभनिग्रहकरणरूप श्रीचारित्राय नमः

॥ अथ तपपदना ५० गुण ॥

१ यावत्कथक		तपसे	नम
२ इत्वरतपभेद		तपसे	नम
३ बाह्यऊनोदरी	तपोभेद	तपसे	नम
४ अभ्यंतरऊनोदरी	तपोभेद	तपसे	नम
५ द्रव्यतपोवित्ति	संक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
६ क्षेत्रतपोवित्ति	संक्षेपतपोभेद	तपसे	नमः
७ कालतपोवित्ति	संक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
८ भावतपोवित्ति	संक्षेपतपोभेद	तपसे	नम
९ कायक्लेस	तपोभेद	तपसे	नम
१० रसत्याग		तपसे	नम

११ इंद्रियकषाययोग विषयिक सलीणता तपसे नम.
१२ स्त्रीपशुपडकादि वर्जितस्थान अवस्थित सलीणता तपसे नम

१३ आलोयण	प्रायश्चित्त	तपसे	नमः
१४ पडिक्कमण	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
१५ मिश्र	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
१६ विवेक	प्रायश्चित	तपसे	नम
१७ उपसर्ग	प्रायश्चित	तपसे	नम.
१८ तप	प्रायश्चित	तपसे	नम
१९ भेद	प्रायश्चित्त	तपसे	नम
२० मूलप्रायश्चित	तपसे	नम.	
२१ अणवस्थित	प्रायश्चित	तपसे	नम
२२ पारंचिय	प्रायश्चित	तपसे	नमः
२३ ज्ञान	विनयरूप	तपसे	नम.
२४ दर्शन	विनयरूप	तपसे	नमः
२५ चारित्र	विनयरूप	तपसे	नम
२६ गुर्वादिकप्रति मनोविनयरूप		तपसे	नम
२७ गुर्वादिकप्रतिवचन विनयरूप		तपसे	नमः
२८ गुर्वादिकप्रतिकाय विनयरूप		तपसे	नम
२९ उपचारिक	विनयरूप	तपसे	नमः
३० आचार्य	वेयावच्च	तपसे	नमः

३१ उपाध्याय	वेयावच्च	तपसे	नम
३२ साधु	वेयावच्च	तपसे	नम
३३ तपस्वि	वेयावच्च	तपसे	नम
३४ लघुशिष्यादि	वेयावच्च	तपसे	नम'
३५ गिलाणसाधु	वेयावच्च	तपसे	नम:
३६ श्रमणोपासक	वेयावच्च	तपसे	नम
३७ सघ	वेयावच्च	तपसे	नम
३८ कुल	वेयावच्च	तपसे	नम'
३९ गण	वेयावच्च	तपसे	नम

४० वायणा	तपसे	नम:
४१ पृच्छना	तपसे	नमः
४२ परावर्त्तना	तपसे	नम'
४३ अनुप्रेक्षा	तपसे	नम
४४ धर्म्मकथा	तपसे	नम

४५ आर्त्तध्यान	निवृत्त	तपसे	नम:
४६ रौद्रध्यान	निवृत्त	तपसे	नम'
४७ धर्म्मध्यान	चिंतन	तपसे	नम
४८ शुक्लध्यान	चिंतन	तपसे	नम

४९ बाह्य	उपसर्ग सहनरूप	तपसे	नमः
५० अभ्यतर	उपसर्ग सहनरूप	तपसे	नम:

॥ अथ चैत्यवंदन नवपदनो ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाण । सप्पाडिहेरासण संठिआण ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाण । नमो नमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाण माणंदरमालयाण । नमो नमोणंत चउक्कयाण ॥ समग्गकम्मक्खयकारयाण । जम्मजरादुक्खनिवारयाण॥२॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाण । नमोनमो सूरसमप्पहाण॥ सद्देशणादाण समायराण । अखंडछत्तीस गुणायराण ॥ ३ ॥ सुत्तत्थवित्थारणतप्पराण । नमो नमो वायगकुंजराण ॥ गणस्ससंधारणसायराणं । सव्वप्पणावज्जिय मच्छराण ॥४॥ साहूण संसाहिय संजमाण । नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥ तिगुत्तिगुत्ताण समाहियाण । मुणीण माणंदपयठियाण॥५॥ जिणुत्ततत्तेरुइलक्खणस्स । नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छत्तनासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्ममहादुमस्स ॥६॥ अन्नाण समोह तमो हरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स॥ पंचपयारस्सुवगारगस्स सत्ताण सव्वत्थपयासगस्स॥७॥ आराहियाखंडिय सक्कियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स ॥ सब्भावणा संग विवज्जियस्स । निव्वाण दाणाइ

समुच्चयस्स ॥ ८ ॥ कम्मद्दुमुम्मूलण कुंजरस्स । नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबं-धणस्स । दुस्सज्झ अत्थाण पसाहणस्स ॥ ९ ॥ इयनवपयसिद्धं लद्धिविज्जासमिद्धं । पयडियसरवग्ग ह्रींतिरेहा समग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं खोणिपीढा वयारं । तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ १० ॥ इति

॥ अथ सिद्धचक्रस्तवन ॥

नवपद्ध्यान सदा जयकारी ॥ नवपदध्यान सदा सुखकारी ॥ ए आकणी ॥ अरिहंतसिद्ध आचारज पाठक । साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नवपद० ॥ १ ॥ दरशनज्ञान चारित्र हे उत्तम । तप दोय भेदे हृदय विचारी ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मन्त्रजडीऔर तन्त्र घणेरा उन सबकु हम दूर विसारी ॥ नवपद० ॥ ३ ॥ धीतजीव भव जलसे तारे । गुण गावतहे बहु नरनारी ॥ नवपद० ॥ ४ ॥ श्रीजिनभक्त मोहन मुनि वदत । दिनदिन चढ़ते हरख अपारी ॥ नवपद० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ नवपदनी थुई ॥

नितप्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र शुभ भाव । इये कारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय । तुझ नाम पसाये आरति व्याधि पुलाय । इगतुझ अनु-

भरथी सुखसपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरि-हत नमिये, सिद्ध सूरी उवझाय । मुनिवर ज्ञिव-करणे, दसण नाण सुहाय । दुगविधि चारित्रे, बुध विध तपमन भाय । ये नवपदध्याता निरुपम शिवसुखथाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार । श्रीगुरु उपदेशों, सिद्ध-चक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारें भाख्यो एह विचार । भवि जन नित ध्यावो, सुरतरु गुण भडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी, चक्केसरि सुखकार । सेवकनें आपे सुख संपति परिवार । हिव निधि उदयकरि, चारित्र नुद्धी मन भाय । जिनचदसूरीसर, खरतर-पति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ नवपदचैत्य वदन ॥

श्रीअरिहत उदार कांति । अतिसुन्दररूप । सेवो सिद्ध अनन्तशांत । आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवझाय साधु । शमतारसधाम । जिन भाषित सिद्धान्त शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधिबीजगुण सपदाए । नाण चरणतव शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनन्दकर । जगमांहि प्रसिधो । चिंतामणि समजासजोग । बहुपुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥

तिहुअणसार अपार एह महिमा मन धारो । परि
हर परजजालजाल । नित एह समारो ॥ ५ ॥
सिद्धचक्रपद सेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृ-
तमय कल्याणनिधि । प्रगटे चेतन भूप ॥१॥ इति

॥ अथ नवपदे स्तवन ॥

। रागमारु । तीरथनायक जिनवरूजी अतिशयजास
अनूप । सिद्धअनंतमहागुणीजी परमानंद सरूप ।
भविकमन धारजोरे ॥१॥ धार जो नवपदध्यान ।
। भ० । श्रीआचारजगण धरूरे । गुणछत्तीश निवास
पाठक पदधर मुनिवरूजी । श्रुतदायक सुविलास । भ०
॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोभताजी । साधुसमता
वंत । सम्यग् दर्शन सुदरूजी । ज्ञानप्रकाशक अनन्त
भ० ॥३॥ संवरसाधना चरण छेरे । तप उत्तमविधि
होय । ए नवपदना ध्यानथीरे । निरूपाधिक सुख
होय । भ० । ॥ ४ ॥ अमृतसमजिन धर्मनोरे । मूल ए
नवपदजाण । अविचल अनुभव कारणेजी । नितप्रति
नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ नवपदनी थुई ॥

जगनायक दायक सिद्धचक्र सुखकंद, जेहना जप
तपथी भाजे भव भय फंद । श्रीपालने मयणा विधिथी
ए तप कीध, नवपदथीपामें अष्टसिद्धनवनिध॥१॥ जिन

सिद्ध आचारिज पाठक श्रीमुनिराज, दर्शनज्ञान चारित्र नवमो तप कहेवाय । एक एक पद ध्यांतांजीव सर्वांससार / चोवीसी प्रणमु कीधो भवि उपगार ॥ २ ॥ आसूवलि चैत्र सुदि सातमथी जाण, ओली कीजेसुम मन आंबिलकरपच्चखाण । पदपद नौगुणनो कीजे भावसुजगीस आगममांही बोल्या ध्यावो तुम निसदीस ॥ ३ ॥ विमलादिक देवदेवी चक्रेसरी जान, सिद्धचक्रना सेवक आपेवछितदान । खरतरगच्छदिनकर श्रीजिनअखयसूरिंद तस चरणपसाये, भाखे श्रीजिनचंद ॥ ४ ॥ इति



अथ नवपदओली करणविधि

दिन क्रम.	पदनां नामो	नवकर वाली	काउस्सग	लोगस्स	खमासमणा प्रदक्षिणा	वर्ण	भोजन
१	ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं	२०	१२	१२	१२	श्वेत	चोखा
२	,, ,, नमो सिद्धाणं	२०	८	८	८	लाल	घउं
३	,, ,, नमो आयरियाणं	२०	३६	३६	३६	पीलो	चणा
४	,, ,, नमो उवज्झायाणं	२०	२५	२५	२५	नीलो	मग
५	,, ,, नमो लोए सव्वसाहूणं	२०	२७	२७	२७	कालो	अडद
६	,, ,, नमो दंसणस्स	२०	६७	६७	६७	श्वेत	चोखा
७	,, ,, नमो नाणस्स	२०	५१	५१	५१	,,	,,
८	,, ,, नमो चारित्तस्स	२०	७०	७०	७०	,,	,,
९	,, ,, नमो तवस्स	२०	५०	५०	५०	,,	,,

शुभमास शुभदिवसमां गुरुमहाराजनी पासे विधि पूर्वक आंबीलओळीनी तपस्या ग्रहण करे, पछे आ तप आसो सुदि अने चैत्र सुदि ७ कदाच तीथि घटी होय तो ६ अने वधी होयतो ८ थी पूनम सुधी नव आंबील करे, एम वरसमां बे वार करतां साडाचार वरसे नव ओळी पूरी करवी, नव दिन सुधी देवसिराइपडिकमणो साज सवारे बे वखत पडिलेहण, गुरूपासे पचखाण करे त्रिकाल देवपूजा करे, मध्याने आठथुइथी देव वांदे, हमेसा नवपदना नव चैत्यवंदन करे जेटला गुण होय तेटला साथीया प्रदक्षिणा काउस्सग करे खमासमणा अने गुणणो हमेशां एकएक पदनो करे एकएक प्रदक्षीणा अने एकएक खमासणो दइने एकएक गुण कहे, पच-खाणपारवानो चैत्यवंदन करे पछ आंबील करी चैत्य वंदन करे सुति वखते संथारापोरिसी भणावीने भूमि संथारा उपर सोवे शीलव्रतपाळे इत्यादि नव दिवस सुधी करवो॥ अने काउस्सग करवुं होय त्यारे इर्या वहीपडिकमीने खमासमणो दइने इच्छाकारेण-संदिस्सह भगवन् अमुकपद आराधवानिमित्तं करेमिकाउस्सग्ग, वंदणवत्तियाए, अन्नत्थ० पछे

काउस्सग करीने प्रगट लोगस्सकहे आतप पूर्ण थया बाद शक्ति अनुसार उजमणु करे ते गुरुमुखथी जाणवुं

॥ अथ विशस्थानक तपकरण विधि ॥

सारा दिवसे गुरुने पासे विधि पूर्वक वीशस्थान तपउच्चरे आतप दशवरसमांहे पूरो करवो आतपनी ओली २० होय छे एकेएक ओली छ मासें पूरी करवी, उपरात भग थाय, एकएक ओली वीस अठम छठ अथवा उपवास थी थाय छे दशार्यें अठमथी करे तो ४००अठम,छठथी करे तो ४००छठ, उपवासथी करे तो ४०० उपवास थाय छे अने आंबील नीवीके एकासणाथी पण थायछे, जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे पडिक्कमणो शक्ति होय तो पोषो अथवा देशा वगाशिक करवु, देववदन करवु, जेटला जे पदना गुण होय तेटला खमासणा साथीया प्रदक्षीणा अने लोगस्सना काउस्सग करवा, जे पद होय ते पदनी वीश माला दर उपवासे गणवी आतप सपूर्ण थया बाद शक्ति अनुसार उजमणो करे ते गुरुमुखथी जाणवुइति

अंक०	नाम	काउ लोग	खमा सणा	सा थीया	प्रद- क्षीणा	माला
१	नमो अरिहंताण	१२	१२	१२	१२	२०

२ ,,	सिद्धाणं	३१	३१	३१	३१	२०
३ ,,	पवयणस्स	२७	२७	२७	२७	२०
४ ,,	आयरियाणं	३६	३६	३६	३६	२०
५ ,,	थेराण	१०	१०	१०	१०	२०
६ ,,	उवज्झायाण	२५	२५	२५	२५	२०
७ ,,	लोएसव्वसाहूण	२७	२७	२७	२७	२०
८ ,,	नाणस्स	५१	५१	५१	५१	२०
९ ,,	दंसणस्स	६७	६७	६७	६७	२०
१० ,,	विनयसंपन्नाण	५२	५२	५२	५२	२०
११ ,,	चरित्तस्स	७०	७०	७०	७०	२०
१२ ,,	बंभवयधारीण	१८	१८	१८	१८	२०
१३ ,,	किरियाण	२५	२५	२५	२५	२०
१४ ,,	तवस्सीण	१२	१२	१२	१२	२०
१५ ,,	गोयमस्स	१२	१२	१२	१२	२०
१६ ,,	जिणाण	२०	२०	२०	२०	२०
१७ ,,	चरणस्स	१७	१७	१७	१७	२०
१८ ,,	नाणस्स	५२	५२	५२	५२	२०
१९ ,,	सुयनाणस्स	२०	२०	२०	२०	२०
२० ,,	तित्थस्स	३८	३८	३८	३८	२०

॥ अथ प्रथम अरिहंतना १२ भेद ॥

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अरिहंताय

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम
३ दिव्यध्वनि ,, ,,
४ चामरयुग ,, ,,
५ स्वर्णसिंहासन ,, ,,
६ भामडल ,, ,,
७ दुदुभि ,, ,,
८ छत्रत्रय ,, ,,
९ ज्ञानातिशय ,, ,,
१० पुजातिशय ,, ,,
११ वचनातिशय ,, ,,
१२ अपायापगमातिशय ,, ,,

॥ अथ बीजा सिद्धपदना ३१ भेद ॥

१ मतिज्ञानावरणि कर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
२ श्रुतज्ञानावरणि ,,
३ अवधिज्ञानावरणि ,,
४ मनपर्यवज्ञानावरणि ,,
५ केवल ज्ञानावरणि ,,
६ निद्रादर्शनावरणि ,,
७ निद्रानिद्रादर्शनावरणि ,,
८ प्रचलादर्शनावरणि ,,
९ प्रचलाप्रचलादर्शनावरणि ,,

१० थीणद्धिदर्शनावरणि कर्मरहिताय श्रीसिद्धायनम
११ चक्षुदर्शनावरणि ,,
१२ अचक्षुदर्शनावरणि ,,
१३ अवधिदर्शनावरणि ,,
१४ केवलदर्शनावरणि ,,
१५ शातावेदनीय ,,
१६ अशातावेदनीय ,,
१७ दर्शनमोहनीय ,,
१८ चारित्रमोहनीय ,,
१९ नरकायुः ,,
२० तिर्यगायु॰ ,,
२१ मनुष्यायु ,,
२२ देवायुः ,,
२३ शुभनाम ,,
२४ अशुभनाम ,,
२५ उच्चगोत्र ,,
२६ नीचगोत्र ,,
२७ दानांतराय ,,
२८ लाभांतराय ,,
२९ भोगांतराय ,,

३० उपभोगांतराय कर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
३१ वीर्यांतराय ,,

॥ अथ श्रीजापवयण पदना २७ भेद ॥

१ सर्वतो प्राणातिपातविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
२ सर्वतो मृषावादविरताय ,,
३ सर्वतो अदत्तादानविरताय ,,
४ सर्वतो मैथुनविरताय ,,
५ सर्वतो परिग्रहविरताय ,,
६ देशतो प्रणातिपात विरताय ,,
७ देशतो मृषावाद विरताय ,,
८ देशतो अदत्तादान विरताय ,,
९ देशतो मैथुन विरताय ,,
१० देशतो परिग्रह विरताय ,,
११ दिसिपरिमाणव्रत सयुताय ,,
१२ भोगोपभोगपरिमाणव्रत सयुताय ,,
१३ अनर्थदंड विरताय ,,
१४ सामायिकव्रत सयुताय ,,
१५ देसावकासिकव्रत सयुताय ,,
१६ पौषधोपवासव्रत सयुताय ,,
१७ अतिथीसविभागव्रत सयुताय ,,

१८ विधिसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः
१९ वर्णिकसूत्रागमाय ,,
२० भयसूत्रागमाय ,,
२१ उत्सर्गागमाय ,,
२२ अपवादागमाय ,,
२३ उभयसूत्रागमाय ,,
२४ उद्यमसूत्रागमाय ,,
२५ सर्वनयसमूहात्मकाय ,,
२६ सप्तभंगीरचनात्मकाय ,,
२७ द्वादशांगीगणिपिटकाय ,,

॥ अथ चोथा आचार्यपदना ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः
२ तेजस्वीगुणसयुताय ,,
३ युगप्रधानागमसयुताय ,,
४ मधुरवाक्यगुणसयुताय ,,
५ गंभीरगुण संयुताय ,,
६ धैर्यगुण सयुताय ,,
७ उपदेसगुण सयुताय ,,
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय ,,
९ सौम्यप्रकृतिगुण सयुताय ,,

१० अविग्रहगुण सयुताय श्रीआचार्याय नमः
११ अविकथकगुण सयुताय ,,
१२ शौच्यगुण सयुताय ,,
१३ अचपलगुण सयुताय ,,
१४ प्रसन्नवदनगुण सयुताय ,,
१५ क्षमागुण सयुताय ,,
१६ ऋजुगुण सयुताय ,,
१७ मृदुगुण सयुताय ,,
१८ सर्वसंगमुक्तिगुण सयुताय ,,
१९ द्वादशविध तपगुण सयुताय ,,
२० सप्तदशविध सजम सयुताय ,,
२१ सत्यव्रतगुण सयुताय ,,
२२ शौचगुण सयुताय ,,
२३ अकिंचनगुण सयुताय ,,
२४ ब्रह्मचर्यगुण सयुताय ,,
२५ अनित्यभावना भावकाय ,,
२६ अशरणभावना भावकाय ,,
२७ संसारस्वरूप भावना भावकाय ,,
२८ एकत्वस्वरूप भावना भावकाय ,,
२९ अन्यत्व भावना भावकाय ,,
३० अशुचि भावना भावकाय ,,

३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआचार्यांय नमः
३२ सवर भावना भावकाय ,,
३३ निर्जरा भावना भावकाय ,,
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय ,,
३५ बोधिदुर्लभ भावना भावकाय ,,
३६ धर्मदुर्लभ भावना भावकाय ,,

॥ अथ पाचमा स्थविरपदना १० भेद ॥

१लोकिकस्थविर देसकाय श्रीलोकोत्तरस्थविराय नम
२ देसस्थविर देसकाय ,,
३ ग्रामस्थविर देसकाय ,,
४ कुलस्थविर देसकाय ,,
५ लौकिकस्थविर देसकाय ,,
६ लौकिक गुरुस्थविर देसकाय ,,
७ लोकोत्तर श्रीसघस्थविराय नमः
८ लोकोत्तर श्रीपर्यायस्थविराय नमः
९ लोकोत्तर श्रीसुतस्थविराय नमः
१० लोकोत्तर श्रीवय स्थविराय नमः

॥ अथ छठा उपाध्याय पदना २५ भेद ॥

१ आचारांगसूत्र पाठकाय श्रीउपाध्यायाय नमः
२ सुयगडांगसूत्र पाठकाय ,,

३ ठाणागसूत्र पाठकाय श्रीउपाध्यायाय नम
४ समवायागसूत्र पाठकाय ,,
५ भगवतीसूत्र पाठकाय ,,
६ ज्ञातागसूत्र पाठकाय ,,
७ उपासकदसांगसूत्र पाठकाय ,,
८ अतगडदसागसूत्र पाठकाय ,,
९ अनुत्तरोववाइसूत्र पाठकाय ,,
१० प्रश्नव्याकरणसूत्र पाठकाय ,,
११ विपाकसूत्र पाठकाय ,,
१२ उत्पादपूर्व पाठकाय ,,
१३ आग्रायणी पूर्वपाठकाय ,,
१४ वीर्यप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१५ अस्तिप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१६ ज्ञानप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१७ सत्यप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१८ आत्मप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
१९ कर्मप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२० प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२१ विद्याप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२२ अविंध्यप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,
२३ प्राणायामप्रवाद पूर्वपाठकाय ,,

२४ क्रियाविसाल पूर्वपाठकाय श्रीउपाध्यायाय नमः
२५ लोकबिंदुसार पूर्वपाठकाय ,,

॥ अथ सातमा साधुपदना २७ भेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
२ मृषावादविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
३ अदत्तादानविरमणमयुताय श्रीसाधवे नमः
४ मैथुनविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
५ परिग्रहविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नम
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतसयुताय श्रीसाधवे नमः
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम
८ अप्काय रक्षकाय श्रीसाधवे नम
९ तेउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम
१० वाउकायरक्षकाय ,,
११ वनस्पतिकायरक्षकाय
१२ त्रसकायरक्षकाय
१३ एकेंद्रियजीवरक्षकाय
१४ बेंद्रियजीवरक्षकाय
१५ तेंद्रियजीवरक्षकाय
१६ चउरिंद्रियजीवरक्षकाय
१७ पचेंद्रियजीवरक्षकाय
१८ लोभनिग्रहकारकाय

१९ क्षमागुणसयुताय श्रीसाधवे नमः

२० शुभ भावनाभावकाय ,,

२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः

२२ संजमयोगसयुताय ,,

२३ मनोगुप्तिसयुताय ,,

२४ वचनगुप्तिसयुताय ,,

२५ कायगुप्तिसयुताय ,,

२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय ,,

२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय ,,

॥ अथ आठमा ज्ञानपदना ५१ भेद ॥

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः

२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहाय ,,

३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रहाय ,,

४ श्रोतेंद्रियव्यंजनावग्रहाय ,,

५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रहाय ,,

६ रसनेंद्रियअर्थावग्रहाय ,,

७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रहाय ,,

८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रहाय ,,

९ श्रोतेंद्रियअर्थावग्रहाय ,,

१० मनोअर्थावग्रहाय ,,

११ स्पर्शेंद्रियईहाय ,,

१२ रसनेंद्रियईहा	श्रीमतिज्ञानाय नमः
१३ घ्राणेंद्रियईहा	"
१४ चक्षुरिंद्रियईहा	"
१५ श्रोत्रेंद्रियईहा	"
१६ मनईहा	"
१७ स्पर्शेंद्रियअपाय	"
१८ रसनेंद्रियअपाय	"
१९ घ्राणेंद्रियअपाय	"
२० चक्षुरिंद्रियअपाय	"
२१ श्रोत्रेंद्रियअपाय	"
२२ मनोअपाय	"
२३ स्पर्शेंद्रियधारणाय	"
२४ रसनेंद्रियधारणाय	"
२५ घ्राणेंद्रियधारणाय	"
२६ चक्षुरिंद्रियधारणाय	"
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणाय	"
२८ मनोधारणाय	"

२९ श्रीअक्षरश्रुतज्ञानाय नमः

३० श्रीअनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः

३१ श्रीसंज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः

३२ श्रीअसंज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः

३३ श्रीसम्यग्श्रुतज्ञानाय नमः
३४ श्रीमिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः
३५ श्रीसादिश्रुतज्ञानाय नमः
३६ श्रीअनादिश्रुतज्ञानाय नमः
३७ श्रीसपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३८ श्रीअपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३९ श्रीगमिकश्रुतज्ञानाय नमः
४० श्रीअगमिकश्रुतज्ञानाय नमः
४१ श्रीअगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः
४२ श्रीअनगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः
४३ श्रीअनुगामिक अवधिज्ञानाय नमः
४४ श्रीअननुगामिक अवधिज्ञानाय नमः
४५ श्रीवर्द्धमान अवधिज्ञानाय नमः
४६ श्रीहीयमान अवधिज्ञानाय नमः
४७ श्रीप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः
४८ श्रीअप्रतिपाति अवधिज्ञानाय नमः
४९ श्रीऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः
५० श्रीविपुलमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः
५१ श्रीलोकालोकप्रकाशक केवलज्ञानाय नमः

॥ अथ नवमा दर्शनपदना ६७ भेद ॥

१ परमार्थसस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः

२ पारमार्थज्ञातृसेवनरूप	श्रीसद्दर्शनाय नमः
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप	,,
४ कुदर्शनवर्जनरूप	,,
५ शुश्रूषारूप	,,
६ धर्मरागरूप	,,
७ वैयावृत्य	,,
८ अर्हद्विनयरूप	,,
९ सिद्धविनयरूप	,,
१० चैत्य विनयरूप	,,
११ श्रुत विनयरूप	,,
१२ धर्म विनयरूप	,,
१३ साधुवर्ग विनयरूप	,,
१४ आचार्य विनयरूप	,,
१५ उपाध्याय विनयरूप	,,
१६ प्रवचन विनयरूप	,,
१७ दर्शन विनयरूप	,,
१८ ससारे जिनसारामिति चिंतयनरूप	,,
१९ ससारेजिनमतसारमिति चिंतयनरूप	,,
२० ससारेजिनमत स्थित साध्वा दिसारमिति चिंतयनरूप	
२१ शंका दूषण रहिताय	

२२ कांक्षादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः
२३ विचिकित्सारूप दूषणरहिताय ,,
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूप दूषणरहिताय ,,
२५ कुदृष्टिपरिचयदूषणरहिताय ,,
२६ प्रवचन प्रभावकरूप ,,
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप ,,
२८ वादि प्रभावकरूप ,,
२९ नैमित्तिकप्रभावकरूप ,,
३० तपस्विप्रभावकरूप ,,
३१ प्रज्ञप्त्या दिविद्यावृत ,,
३२ चूर्णांजनादिसिद्ध प्रभावकरूप ,,
३३ कवि प्रभावकरूप ,,
३४ जिनशासने कौशलभूषणरूप ,,
३५ प्रभावना भूषणरूप ,,
३६ तीर्थसेवा भूषणरूप ,,
३७ धैर्य भूषणरूप ,,
३८ जिनशासने भक्ति भूषणरूप ,,
३९ उपशम गुणरूप ,,
४० संवेग गुणरूप ,,
४१ निर्वेद गुणरूप ,,
४२ अनुकंपा गुणरूप ,,

४३ आस्तिक्य गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
४४ परतीर्थिकादिवदनवर्जनरूप "
४५ परतीर्थिकादि नमस्कारवर्जनरूप "
४६ परतीर्थिकादि आलापवर्जनरूप "
४७ परतीर्थिकादि सलापवर्जनरूप "
४८परतीर्थिकादि अशनादि दानवर्जनरूप,,
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप,,
५० राजाभियोगआगारयुक्त "
५१ गणाभियोगआगारयुक्त "
५२ बलाभियोगआगारयुक्त "
५३ सुराभियोगआगारयुक्त "
५४ कान्तारवृत्त्यागारयुक्त "
५५ गुरु निग्रहागारयुक्त "
५६ सम्यक्त्व चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतवन रूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
५७ सम्यक्त्व चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
५८ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठान मिति चिंतवनरूप "
५९ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्याधार मिति चिंतवनरूप "

६० सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य भाजन
मिति चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
६१ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य निधि
सनिभमिति चिंतवनरूप ,,
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६३ सचजीवो नित्येति श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६४ सचजीवः कर्माणि करोतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६५ सचजीवः कृत कर्माणि वेदयतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६६ जीवस्यास्तिनिर्वाणमिति
श्रद्धान स्थानयुक्त ,,
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धान स्थानयुक्त
श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥ अथ दशमाविनयपदना ५२ भेद ॥

१ श्रीतीर्थंकरस्यानाशातनाकरणरूप विनयधराय नमः
२ श्रीतीर्थंकरस्यभक्ति करणरूप ,,
३ श्रीतीर्थंकरस्य बहुमान करणरूप ,,
४ श्रीतीर्थंकरस्य स्तुति करणरूप ,,
५ श्रीसिद्धस्यनाशातनारूप ,,
६ श्रीसिद्धस्यभक्तिकरणरूप ,,

७ श्रीसिद्धस्यबहुमानकरणरूप विनयधराय नमः
८ श्रीसिद्धस्य स्तुतिकरणरूप ,,
९श्रीसुविहितचंद्रादि कुलानाशातना करणरूप ,,
१० श्रीसुविहितचंद्रादिकुलभक्तिकरणरूप
विनयधराय नमः
११ श्रीसुविहितचंद्रादिकुलबहुमानकरणरूप ,,
१२ श्रीसुविहितचंद्रादिकुलस्तुति करणरूप ,,
१३ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्नसुविहि
तानाशातनाकरणरूप ,,
१४ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
भक्तिकरणरूप ,,
१५ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
बहुमानकरणरूप ,,
१६ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
स्तुतिकरणरूप ,,
१७ श्रीचतुर्विधसंघानाशातना करणरूप ,,
१८ श्रीचतुर्विधसंघभक्तिकरणरूप ,,
१९ श्रीचतुर्विधसंघबहुमानकरणरूप ,,
२० श्रीचतुर्विधसंघस्तुतिकरणरूप ,,
२१ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्याना
शातनाकरणरूप

६० सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य भाजन
मिति चिंतवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
६१ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य निधि
सन्निभमिति चिंतवनरूप ''
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धान स्थानयुक्त ''
६३ सचजीवो नित्येति श्रद्धान स्थानयुक्त ''
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त ''
६५ सचजीव कृत कर्माणि वेदयतीति
श्रद्धान स्थानयुक्त ''
६६ जीवस्यास्तिनिर्वाणमिति
श्रद्धान स्थानयुक्त ''
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धान स्थानयुक्त
श्रीसद्दर्शनाय नमः

॥ अथ दशमाविनयपदना ५२ भेद ॥

१ श्रीतीर्थंकरस्यानाशातनाकरणरूप विनयधराय नमः
२ श्रीतीर्थंकरस्यभक्ति करणरूप ''
३ श्रीतीर्थंकरस्य बहुमान करणरूप ''
४ श्रीतीर्थंकरस्य स्तुति करणरूप ''
५ श्रीसिद्धस्यनाशातनारूप ''
६ श्रीसिद्धस्यभक्तिकरणरूप ''

७ श्रीसिद्धस्यबहुमानकरणरूप विनयधराय नमः
८ श्रीसिद्धस्य स्तुतिकरणरूप ,,
९ श्रीसुविहितचन्द्रादि कुलानाशातना करणरूप ,,
१० श्रीसुविहितचन्द्रादिकुलभक्तिकरणरूप
विनयधराय नमः
११ श्रीसुविहितचन्द्रादिकुलबहुमानकरणरूप ,,
१२ श्रीसुविहितचन्द्रादिकुलस्तुति करणरूप ,,
१३ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्नसुविहि
तानाशातनाकरणरूप ,,
१४ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
भक्तिकरणरूप ,,
१५ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
बहुमानकरणरूप ,,
१६ श्रीकोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित
स्तुतिकरणरूप ,,
१७ श्रीचतुर्विधसंघानाशातना करणरूप ,,
१८ श्रीचतुर्विधसंघभक्तिकरणरूप ,,
१९ श्रीचतुर्विधसंघबहुमानकरणरूप ,,
२० श्रीचतुर्विधसंघस्तुतिकरणरूप ,,
२१ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्यांना
शातनाकरणरूप

२२ श्रीशुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्यभक्ति करणरूप
विनयधराय नमः

२३ श्रीशुद्धागमोक्त क्रिया कारकस्य बहुमान
करणरूप ॥

२४ श्रीशुद्धागमोक्त क्रिया कारकस्य
स्तुति करण रूप ॥

२५ श्रीजिनोक्तधर्मस्यानाशातनाकरणरूप ॥

२६ श्रीजिनोक्तधर्मस्यभक्तिकरणरूप ॥

२७ श्रीजिनोक्तधर्मस्यबहुमानकरणरूप ॥

२८ श्रीजिनोक्तधर्मस्यस्तुतिकरणरूप ॥

२९ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यानाशातनाकरणरूप ॥

३० श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यभक्तिकरणरूप ॥

३१ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यबहुमानकरणरूप ॥

३२ श्रीज्ञानगुणप्राप्तस्यस्तुतिकरणरूप ॥

३३ श्रीज्ञानानाशातनाकरणरूप ॥

३४ श्रीज्ञानभक्तिकरणरूप ॥

३५ श्रीज्ञानबहुमानकरणरूप ॥

३६ श्रीज्ञानस्तुतिकरणरूप ॥

३७ श्रीआचार्यस्यानाशातनाकरणरूप ॥

३८ श्रीआचार्यस्यभक्तिकरणरूप ॥

३९ श्रीआचार्यस्यबहुमानकरणरूप ॥

४० श्रीआचार्यस्यस्तुतिकरणरूप	विनयधराय नमः
४१ श्रीस्थविरस्यानाशातनाकरणरूप	,,
४२ श्रीस्थविरस्य भक्ति करणरूप	,,
४३ श्रीस्थविरस्य बहुमान करणरूप	,,
४४ श्रीस्थविरस्यस्तुति करणरूप	,,
४५ श्रीउपाध्यायस्यानाशातना करणरूप	,,
४६ श्रीउपाध्यायस्य भक्ति करणरूप	,,
४७ श्रीउपाध्यायस्य बहुमान करणरूप	,,
४८ श्रीउपाध्यायस्य स्तुति करणरूप	,,
४९ श्रीगणावच्छेदकस्यानाशातना करणरूप	,,
५० श्रीगणावच्छेदकस्य भक्ति करणरूप	,,
५१ श्रीगणावच्छेदकस्य बहुमान करणरूप	,,
५२ श्रीगणावच्छेदकस्य स्तुति करणरूप	,,

॥ अथ इग्यारमा चारित्रपदना ७० भेद ॥

१ प्रणातिपातविरमणरूप	श्रीचारित्राय नमः
२ मृषावाद विरमणरूप	,,
३ अदत्तादान विरमण रूप	,,
४ मैथुनविरमणरूप	,,
५ परिग्रह विरमण रूप	,,
६ क्षमा धर्म रूप	,,
७ आर्जव रूप	,,

८ मृदुता धर्म रूप - - - चारित्राय नमः
९ मुक्ति धर्म रूप ,,
१० तपो धर्म रूप ,,
११ सयम धर्म रूप ,,
१२ सत्य धर्म रूप ,,
१३ शौच धर्म रूप ,,
१४ अकिंचन धर्म रूप ,,
१५ ब्रह्म धर्म रूप ,,
१६ पृथ्वी रक्षा सयम ,,
१७ उदक रक्षा सयम ,,
१८ तेऊ रक्षा सयम ,,
१९ वाऊ रक्षा सयम ,,
२० वनस्पति सयम ,,
२१ बेंद्रिय रक्षा सयम ,,
२२ तेंद्रिय रक्षा सयम ,,
२३ चउरिंद्रिय रक्षा सयम ,,
२४ पचेंद्रिय रक्षा सयम ,,
२५ अजीव रक्षा सयम ,,
२६ प्रेक्षा सयम ,,
२७ उपेक्षा सयम ,,
२८ अतिरिक्त वस्त्रभक्तादि परठण त्यागरूप ,,

२९ प्रमार्जन रूप सयम चारित्रायनमः
३० मनः सयम ,,
३१ वाग् सयम ,,
३२ काय सयम ,,
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप ,,
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप ,,
३५ तपस्वि वैयावृत्यरूप ,,
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्यरूप ,,
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्यरूप ,,
३८ साधुवैयावृत्यरूप ,,
३९ श्रमणोपासकवैयावृत्यरूप ,,
४० संघवैयावृत्यरूप ,,
४१ कुलवैयावृत्य रूप ,,
४२ गणवैयावृत्यरूप ,,
४३ पशुपंडकादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्त ,,
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्त ,,
४५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्त ,,
४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्त ,,
४७ कुड्यन्तरसहितस्त्रीशब्दश्रवणवर्जनब्रह्मगुप्त ,,
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतवनवर्जनब्रह्मगुप्त ,,
४९ ,,

५० अतिआहारकरणवर्जनप्रगुप्त	चारित्राय नमः
५१ अंगादिभूषावर्जनप्रगुप्त	,,
५२ अनशनतपोरूप	,,
५३ उनोदरितपोरूप	,,
५४ वृत्तिसंक्षेपतपोरूप	,,
५५ रसत्यागतपोरूप	,,
५६ कायाकिलेशतपोरूप	,,
५७ संलीनतातपोरूप	,,
५८ प्रायश्चित्ततपोरूप	,,
५९ विनयतपोरूप	,,
६० वैयावच्चतपोरूप	,,
६१ सज्झायतपोरूप	,,
६२ ध्यानतपोरूप	,,
६३ उपसर्गतपोरूप	,,
६४ अनंतज्ञानसंयुत	,,
६५ अनंतदर्शनसंयुत	,,
६६ अनंतचारित्रसंयुत	,,
६७ क्रोधनिग्रहकरणरूप	,,
६८ माननिग्रहकरणरूप	,,
६९ मायानिग्रहकरणरूप	,,
७० लोभनिग्रहकरणरूप	,,

॥ अथ बारमा ब्रह्मचर्य पदना १८ भेद ॥

१ मनसाओदारिकविषयअसेवनरूप श्रीब्रह्मचारिणे नमः
२ मनसाओदारिकविषयअसेवावनरूप ,,
३ मनसाओदारिकविषयअननुमोदनरूप ,,
४ वचसाओदारिकविषयअसेवनरूप ,,
५ वचसाओदारिकविषयअसेवावनरूप ,,
६ वचसाओदारिकविषयअननुमोदनरूप ,,
७ कायेनओदारिकविषयअसेवनरूप ,,
८ कायेनओदारिकविषयअसेवावनरूप ,,
९ कायेनओदारिकविषयअननुमोदनरूप ,,
१० मनसावैक्रियविषयअसेवनरूप ,,
११ मनसावैक्रियविषयअसेवावनरूप ,,
१२ मनसावैक्रियविषयअननुमोदनरूप ,,
१३ वचसावैक्रियविषयअसेवनरूप ,,
१४ वचसावैक्रियविषयअसेवावनरूप ,,
१५ वचसावैक्रियविषयअननुमोदनरूप ,,
१६ कायेनवैक्रियअसेवनरूप ,,
१७ कायेनवैक्रियविषयअसेवावनरूप ,,
१८ कायेनवैक्रियविषयअननुमोदनरूप ,,

॥ अथ नामा क्रियापदना २५ भेद

१ कायिकीक्रियानिवर्तनरूप श्रीक्रियाकर्म अनु
२ अधिकरणकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
३ पारितापकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
४ प्राणातिपातकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
५ आरंभिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
६ पारिग्रहकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
७ मायाप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
८ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
९ अप्रत्याख्यानकीक्रियानिवर्तनरूप. ॥
१० दृष्टिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
११ स्पृष्टिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१२ प्रातीत्यकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१३ सामन्तोपनिपातकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१४ नैसृष्टिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१५ स्वहस्तिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१६ आज्ञापनीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१७ विदारणीकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१८ अनाभोगप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
१९ अनवकांक्षप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥
२० आज्ञापनप्रत्ययिकीक्रियानिवर्तनरूप ॥

२१ प्रयोगकीक्रियानिवर्त्तनरूप — श्रीक्रियायते नमः
२२ समुदायिकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
२३ प्रेमकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
२४ द्वेषकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,
२५ इरियापथिकीक्रियानिवर्त्तनरूप ,,

॥ अथ चउदमां तपसीणपदना १२ भेद ॥

१ अणसणतपोरूप श्रीबाह्यतपसे नमः
२ ऊणोदरीतपोरूप ,,
३ वृत्तिसंक्षेपतपोरूप ,,
४ रसत्यागतपोरूप ,,
५ कायक्लेशतपोरूप ,,
६ सलीनतातपोरूप ,,
७ प्रायश्चित्ततपोरूप — श्रीअभ्यंतरतपसे नमः
८ विनयतपोरूप ,,
९ वैयावृत्यतपोरूप ,,
१० सज्झायतपोरूप ,,
११ आत्मध्यानतपोरूप ,,
१२ काउस्सग्गतपोरूप ,,

॥ अथ पनरमा गौत्तमपदना १२ भेद ॥

१ श्रीगौत्तमस्वामि गणधराय नमः
२ श्रीअग्निभूतिस्वामि ,,
३ श्रीवायुभूतिस्वामि ,,
४ श्रीव्यक्तस्वामि ,,
५ श्रीसुधर्मास्वामि ,,
६ श्रीमण्डितस्वामि ,,
७ श्रीमौर्यपुत्रस्वामि ,,
८ श्रीअकंपितस्वामि ,,
९ श्रीअचलभ्रातास्वामि ,,
१० श्रीमेतार्यस्वामि ,,
११ श्रीप्रभासस्वामि ,,
१२ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकराणांचतुर्दशशत-
द्विपंचाशत् गणधरेभ्यो नमः

अथ सोलमा जिणाणपदना २० भेद

१ श्रीसीमंधरस्वामि जिनेश्वराय नमः
२ श्रीयुगमंधरस्वामि
३ श्रीबाहुस्वामि
४ श्रीसुबाहुस्वामि
५ श्रीसुजातस्वामि

६ श्रीस्वयंप्रभस्वामि	जिनेश्वराय नमः
७ श्रीऋषभाननस्वामि	"
८ श्रीअनन्तवीर्यस्वामि	"
९ श्रीसुरप्रभस्वामि	"
१० श्रीविशालस्वामि	"
११ श्रीवज्रधरस्वामि	"
१२ श्रीचन्द्राननस्वामि	"
१३ श्रीचन्द्रबाहुस्वामि	"
१४ श्रीभुजग स्वामि	"
१५ श्रीईश्वरस्वामि	"
१६ श्रीनमिप्रभस्वामि	"
१७ श्रीवीरसेनस्वामि	"
१८ श्रीमहाभद्रस्वामि	"
१९ श्रीदेवयशास्वामि	"
२० श्रीअजितवीर्यस्वामि	"

अथ सतरमा संजम पदना १७ भेद

१ प्राणातिपातविरताय	श्रीसंयमधराय नमः
२ मृषावादविरताय	"
३ अदत्तादानविरताय	"
४ मैथुनविरताय	"

५ परिग्रहविरताय श्रीमपमधराय नमः
६ रात्रिभोजनविरताय ''
७ इरियासमितिसंयुताय ''
८ भाषासमितिसंयुताय ''
९ एषणासमितिसंयुताय ''
१० आदानभडमत्तनिक्खेवणासमितिसंयुताय ''
११ पारिठावणियासमितिसंयुताय ''
१२ मनोगुप्तिसंयुताय ''
१३ वचनगुप्तिसंयुताय ''
१४ कायगुप्तिसंयुताय ''
१५ मनोदण्डविरताय ''
१६ वचनदण्डविरताय ''
१७ कायदण्डविरताय ''

अथ अढारमां ज्ञानपदना ५१ भेद

१ श्रीआचारांग श्रुतज्ञानाय नमः
२ श्रीसूयगडांग ''
३ श्रीठाणांग ''
४ श्रीसमवायांग
५ श्रीभगवतीअंग
६ श्रीज्ञाताधर्मकथांग

७ श्रीउपाशकदशांग — श्रुतज्ञानाय नमः
८ श्रीअंतगडदशांग [illegible]
९ श्रीअनुत्तरोववाइअंग [illegible]
१० श्रीप्रश्नव्याकरणांग [illegible]
११ श्रीकर्मविपाकश्रुतांग [illegible]
१२ श्रीउववाइउपांग [illegible]
१३ श्रीरायपसेणीउपांग [illegible]
१४ श्रीजीवाभीगमउपांग [illegible]
१५ श्रीपन्नवणाउपांग [illegible]
१६ श्रीजंबूद्वीपपन्नतिउपांग [illegible]
१७ श्रीचंद्रपन्नतिउपांग [illegible]
१८ श्रीसूरपन्नतिउपांग [illegible]
१९ श्रीनिरयावलीउपांग [illegible]
२० श्रीपुप्फियाउपांग [illegible]
२१ श्रीपुप्फचूलियाउपांग [illegible]
२२ श्रीकप्पियाउपांग [illegible]
२३ श्रीवहिदसाउपांग [illegible]
४२ श्रीचउसरणपयन्नो [illegible]
५२ श्रीआउरपच्चक्खाणपयन्नो [illegible]
२६ श्रीभत्तपरिन्नापयन्नो
२७ श्रीमहापच्चक्खाणपयन्नो,

२८ श्रीतंदुलवैयालियपयन्नो श्रुतज्ञानाय नमः
२९ श्रीचन्द्राविजयपयन्नो ,,
३० श्रीगणिविद्यापयन्नो ,,
३१ श्रीमरणसमाधिपयन्नो ,,
३२ श्रीसंथारापयन्नो ,,
३३ श्रीदेवेंद्रस्तवपयन्नो ,,
३४ श्रीदशवैकालिकमूल ,,
३५ श्रीआवश्यकमूल ,,
३६ श्रीपिंडनिर्युक्तिमूल ,,
३७ श्रीउत्तराध्ययनमूल ,,
३८ श्रीनिसीथछेद ,,
३९ श्रीबृहत्कल्पछेद ,,
४० श्रीव्यवहारछेद ,,
४१ श्रीपंचकल्पछेद ,,
४२ श्रीजीतकल्पछेद ,,
४३ श्रीमहानिसीथछेद ,,
४४ श्रीनन्दीसूत्र ,,
४५ श्रीअनुयोगद्वार ,,
४६ श्रीस्यादस्तिभंगप्ररूपकायस्याद्वाद ,,
४७ श्रीस्यान्नास्तिभंगप्ररूपकायस्याद्वाद ,,
४८ श्रीस्यादस्तिस्यान्नास्तिभंगप्ररूप- ,,

कायस्याद्वाद श्रुतज्ञानाय नमः

श्रीस्यादवक्तव्यभगप्ररूपकायस्याद्वाद ,,

श्रीस्यादस्तिअवक्तव्यभगप्ररूप-कायस्याद्वाद ,,

श्रीस्यान्नास्तिअवक्तव्यभगप्ररूप-कायस्याद्वाद ,,

२ श्रीस्यादस्तिस्यान्नास्तिअवक्तव्य-भगप्ररूपकायस्याद्वाद ,,

अथ ओगणीसमा श्रुतपदना २० भेद

१ पर्याय श्रुतज्ञानाय नमः
२ श्रीपर्यायसमास ,,
३ श्रीअक्षर ,,
४ श्रीअक्षरसमास ,,
५ श्रीपद ,,
६ श्रीपदसमास ,,
७ श्रीसघात ,,
८ श्रीसघातसमास ,,
९ श्रीप्रतिपत्ति ,,
१० श्रीप्रतिपत्तिसमास ,,
११ श्रीअनुयोग ,,

१२ श्रीअनुयोगसमास श्रुतज्ञानाय नमः
१३ श्रीपाहुडपाहुडा ,,
१४ श्रीपाहुडपाहुडासमास ,,
१५ श्रीपाहुडा ,,
१६ श्रीपाहुडासमास ,,
१७ श्रीवस्तु ,,
१८ श्रीवस्तुसमास ,,
१९ श्रीपूर्व ,,
२० पूर्वसमास ,,

अथ वीसमा तीर्थपदना ३८ भेद

१ प्राणातिपातविरतिवत श्रीसाधुतीर्थाय नमः
२ मृषावादविरतिवत ,,
३ अदत्तादानविरतिवत ,,
४ मैथुनविरतिवत ,,
५ परिग्रहविरतिवत ,,
६ पृथ्वीकायजीवरक्षाकाय ,,
७ अप्कायजीवरक्षाकाय ,,
८ तेउकायजीवरक्षकाय ,,
९ वाउकायजीवरक्षकाय ,,
१० वनस्पतिकायजीवरक्षकाय ,,

११ त्रसकायजीवरक्षकाय	श्रीसामुतीर्थाय नमः
१२ क्रोधदोषरहिताय	,,
१३ मानदोषरहिताय	,,
१४ मायादोषरहिताय	,,
१५ लोभदोषरहिताय	,,
१६ रागांशदोषरहिताय	,,
१७ द्वेषांशदोषरहिताय	,,
१८ लज्जागुणयुताय	श्रीदेशविरतितीर्थाय नमः
१९ दयागुणयुताय	,,
२० मध्यस्थगुणयुताय	,,
२१ सौम्यगुणयुताय	,,
२२ गुणरागरूप	,,
२३ अक्षुद्रतागुणयुताय	,,
२४ धर्मप्रभावकगुणयुताय	,,
२५ सौम्यप्रकृतिगुणयुताय	,,
२६ जनप्रियगुणयुताय	,,
२७ मनोज्ञरूपगुणयुताय	,,
२८ पापभीरुगुणयुताय	,,
२९ असठगुणयुताय	,,
३० दाक्षिण्यतागुणयुताय	,,
३१ अकूरता[illegible]	,,

३२ सत्कथकगुणयुताय श्रीदेशविरतितीर्थाय नमः
३३ सुपक्षगुणयुताय ,,
३४ दीर्घदर्शीगुणयुताय ,,
३५ विशेषज्ञगुणयुताय ,,
३६ वृद्धानुगामिगुणयुताय ,,
३७ विनयगुणयुताय ,,
३८ कृतज्ञतागुणयुताय ,,

॥ अथ वीसस्थान चैत्यवंदन ॥

अतिशयवंत महंत रूप, अनुपम गुणधारी।
आराधे जिनकू भव्य, तीर्थंकर शिवगामी ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध प्रवचन गणी, स्थिर बहु श्रुत जान।
तपसी शुभ दर्शन विनय, आवश्यकवली ध्यान ॥२॥
शील क्रिया तप चारित्र, वैयावच समाधि। ज्ञान
ग्रहण श्रुत भक्ति तीर्थ, सेवित त्याग उपाधि ॥ ३ ॥
ए विंशति स्थानक अमल, सेवो सरधा युक्त।
परमातम सपद प्रगट, कारक वचन सुक्त ॥ ४ ॥
मनवंछित सह सिद्धि कर, क्षायिक सुख भर कंद।
जिनको वंदे भावधर, श्रीकुशलेंदु गणींद ॥ ५ ॥

॥ अथ वीसस्थानक थुइ ॥

निरमल आतम भाव प्रकाशक, कारक क्षायिक भावोजी । जिन पद बंधक कर्म निकंदक, वीस स्थानक भवी सेवोजी ॥ जिनवर सहु जे स्थानक सेवे, एक अनेक भव सीजेजी । आराधन ने साधन भावे, मन वंछित सब सीजेजी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन आचारज, स्थविर बहु श्रुत तपसीजी । ज्ञान दर्शन विनयी आवश्यक, शील क्रिया तप धर्मीजी । गणधर वैयावच सुसमाधि, ज्ञान ग्रहण श्रुत भगतीजी । प्रवचन ए वीशानि पद आपक, जिन नामिय सहु जुगतीजी ॥ २ ॥ प्रथम छठ उपवास आंबील तप, एकाशन निज संगतेजी । करिय ओलीषट्मास भीतर, आराधन बहुभगतेजी । आरंभ टाली पोषधधारि, दोय सहस जप गणिए जी । काउस्सग्ग निज पद परिमाणे, देवपूजन श्रुत भणियजी ॥ ३ ॥ शासन रक्षक समकितधारि, जे सुरसुर सुरि वृंदाजी । सानिध करज्यो ते तप करतां, वधते भाव अमंदाजी । श्रीजिनलाभसुरीश्वर शाखा, श्रीकुशलेंदु गणींदाजी । तस पद सेवक सहजमतिगणी, जपे श्रीपालचंदाजी ॥ ४ ॥ इति

धादि लाल्रे ॥ वीस० ॥ १९ ॥ फलोधी नगरमां श्राविका विविध विलास लाल्रे । जनम सफल करया भावी,एहीज मोक्ष उपाय लाल्रे ॥ वीस०॥२०॥

कलश

इय वीर जिनवर तणी, आज्ञा भारे विस्तसार ए। सहु देव आगम तणी, रचना रुचि तप विध सारए। वसु निधिसिद्धिससी वरस,उजल चैत्रमास सुद फल। मुनि केशरीचन्द गच्छखरतर, भणी स्तवना मनहरा॥२१॥

॥ अथ दीवालीपर्वनु गुणणो ॥

१ श्रीमहावीर स्वामि सर्वज्ञाय नमः। रात्रे बीजा प्रहरे २श्रीमहावीरस्वामि पारगताय नमः। रात्रे त्रीजा प्रहरे ३श्रीगौतमस्वामि सर्वज्ञाय नम रात्रे चोथा प्रहरे आ गुणणानी दीवालीनें रात वीस वीस नवकारवाली गणवी अठम करे तो तेरसथी छठ करे तो चउदस थी,उपवास करे तो दीवालीने रोज तप करे, रात्रि जोगो करे, अने प्रभु निर्वाण समये देरासरमां जइनें लाडु आदि अष्ट द्रव्य चढावे, आरती करे, चैत्य वदन करे, दीवालीनो स्तवन कहे, निर्वाण कल्याण कनो अधिकार सुणे, अने श्रीगौतमस्वामिनो मोटो रास सांभले पछे पारणो करे, इति

॥ अथ ज्ञानपञ्चमी पर्व अधिकार ॥

कार्तिक सुदि पचमी ज्ञान पंचमी नामथी पर्व कहेवाय छे आ पर्व आराधन करवाथी गुणमजरी अने वरदत्तनी माफक ज्ञानावरणी कर्म नाश थाय छे, कोढादि द्रव्य रोग नाश थाय छे सर्व उपद्रव नाश थाय छे, सपूर्ण मनोरथ पूर्ण थाय छे

ज्ञानपचमीनुं उपवास सुदिमां करवो कदाच रोगादिक कारण अने भूली जाय तो वदिमां करवो,ज्ञानपचमीनुं तप जघन्यथी पाच मास मध्यमथी पाँच वर्ष अने पाँच मास अने उत्कृष्टथी जाव जीव सुधी थाय छे, उपवास चोविहार करवो चोविहार न बनी शके तो तिविहार करे, जघन्य मध्यमउत्कृष्ट ज्ञानपचमीनुं तप न बनी शके तो अवश्य कार्तिक शुदि पचमीनो तो उपवास करवो ते दिवसे शणगारेली ज्ञान कोरडीने आगल बाच अथवा एकावन साथीया करीने तेना उपर फल फुल चडाववा, पाँच वत्तीनो दीवो करवो धूप उखेववो ज्ञान पूजानी ढाल कहीने वासक्षेप करे पुस्तक पर रोकड नाणो चडावे, अने कागल कलम सलेट पेन शीशापेन दवात आदि चडावे द्रव्यपूजा करीने भावपूजा करवी ते प्रथम इरियावहि पडिक्क-

मनि खमा० दइने मुहपत्ति पडिलेहीने बे वादणा पाघ खमासमणा दइने चैत्यवदन करे।

॥ अथ चैत्यवदन ॥

सकल वस्तु प्रतिभास भानु, निरमल सुख कारण। सम्यग्दर्शन पुष्ट हेतु, भव जलनिधि तारण ॥ सजम तप स्याणद कद, असाण निवारण । मार विकार प्रचार ताप, तापित जन ठारण ॥१॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म, परिणति पडिबोहण । साहु साहुणी संघ सर्व, आराधन सोहण । मोहतिमिर विध्वस, दूर मिथ्यात्व पणासण आतम शक्ति अनत शुद्ध, प्रभुता परगासण ॥२॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध-नाण, मणपज्जव केवल । भेद पचास क्षयोपशमिक एक क्षायक निरमल। दोय परोक्ष प्रथम तिहां, दुग परतक्ष दसिता सकल परतक्ष प्रकाश भास, ध्रुव केवल अपरिमित ॥३॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध श्रीपदी जिन भाखे। बाहिर अग प्रधान खध, गण धर सुप्रकाशे । शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य, पडि शाखा दीपे । चूरणी टीका पत्र पुष्प, सदाय स जीपे ॥४॥ पचागी सार बोध फलो, जिन पचा खने । नदी अनुयोगद्वार, शाखा मानो मनरंगे

वीर परपर जीत। अनु भव उपगारी । अभ्यासो आगम अगम 'निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोह पकहर नीरसम, सिद्धान्त अबाधे। देवचन्द्र आणा सहित नय भग अगाधे ज्ञान, एश्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुख कद । भगते सेवो भविकजन, पामो परमानद ॥६॥ जंकिंचि० नमुत्थुण० जावंति चेइयाइ जावतकेवि० नमोर्हत्० प्रणमु श्रीगुरूपाय० ज्ञान पचमिनु स्तवन जयवीय० अरिहत चेइयाण० वदण० अनत्थ० एक नवकारनु काउस्सग्ग करीने थुइ कहे,

॥ अथ थुइ (वसततिलका) ॥

देविंदवंदियपएहिपरूवियाणि,नाणाणि केवलमणो हि मई सुयाणि । पचावि पचम गई सियपचमीए,। पूयात्तरो गुणरयाण जियाण दिंतु ॥१॥ पछे खमा० दइने इच्छा० स० भ० पचज्ञान आराधवा निमित्त काउस्सग्ग करु इच्छ पचज्ञान आराधवा निमित्त करेमि काउस्सग्ग वदण० अन्नत्थ० कहीने पाच अथवा ५१ लोगस्सनो काउस्सग करीने प्रगट लोगस्स कहे पछे समारुवावाली बोधागाढनामनी श्रीजी थुइ कहे प्रदक्षिणा होय तो प्रदक्षिणा खमा समणा पाच अथवा ५१ ज्ञान सबधि नमस्कार करे,

यथा पाच नमस्कार

१ श्रीमति	ज्ञानाय नमः
२ श्रीश्रुत	,,
३ श्रीअवधि	,,
४ श्रीमनपर्यव	,,
५ श्रीलोकालोकप्रकाशककेवल	,,

अथवा ५१ ज्ञानना नमस्कार

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रह	श्रीमतिज्ञानाय नमः
२ रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रह	,,
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह	,,
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह	,,
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रह	,,
६ रसनेंद्रियअर्थावग्रह	,,
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रह	,,
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रह	,,
९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रह	,,
१० मनोअर्थावग्रह	,,
११ स्पर्शनेंद्रियइहा	,,
१२ रसनेंद्रियइहा	,,
१३ घ्राणेंद्रियइहा	,,
१४ चक्षुरिंद्रियइहा	,,

१५ श्रोत्रेंद्रियईहा	श्रीमतिज्ञानाय नमः
१६ मनईहा	"
१७ स्पर्शनेंद्रियअपाय	"
१८ रसनेंद्रियअपाय	"
१९ घ्राणेंद्रियअपाय	"
२० चक्षुरिंद्रियअपाय	"
२१ श्रोत्रेंद्रियअपाय	"
२२ मनअपाय	"
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणा	"
२४ रसनेंद्रियधारणा	"
२५ घ्राणेंद्रियधारणा	"
२६ चक्षुरिंद्रियधारणा	"
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणा	"
२८ मनोधारणा	"
२९ अक्षर	श्रीश्रुतज्ञानाय नम
३० अनक्षर	"
३१ सज्ञी	"
३२ असज्ञी	"
३३ सम्यग्	"
३४ मिथ्या	"
३५ सादि	"

३६ अनादि — श्रीश्रुतज्ञानाय नम'
३७ सपर्यवसित — ,,
३८ अपर्यवसित — ,,
३९ गमिक — ,,
४० अगमिक — ,,
४१ अगप्रविष्ट — ,,
४२ अनगप्रविष्ट — श्रीश्रुतज्ञानाय नम
४३ अनुगामि — श्रीअवधिज्ञानाय नम'
४४ अननुगामि — श्रीअवधिज्ञानाय नम
४५ वर्द्धमान — श्रीअवधिज्ञानाय नम
४६ हीयमान — श्रीअवधिज्ञानाय नम
४७ प्रतिपाति — श्रीअवधिज्ञानाय नम
४८ अप्रतिपाति — श्रीअवधिज्ञानाय नम
४९ ऋजुमति — श्रीमनःपर्यवज्ञानाय न
५० विपुलमति — श्रीमन पर्यवज्ञानाय नम
५१ लोकालोकप्रकाशक — श्रीकेवलज्ञानाय नम

पछे (ॐ ह्रीं नमोनाणस्स) आ पदनी २० माळ
फेरवी, आठ थुइथी देव वांदवा, अने स्थिरता हो
तो १२अगनी सज्झाय सामले पोषध लीधेलो होय
बीजे दिवसे पौषध पालीने द्रव्यपूजा करे 'शील
बे टक पडिक्कमणु आदि श्रावकनी करणी करे उजम

आदिनी वीजीविधि ज्ञानपचमीना मोटा स्तवनथी जाणवी

॥ अथ प्रथम आचारागनी सज्झाय ॥

(ढाल हठीलानी)

पहेलें अग सोहामणोरे लाल, अनुपम आचारांगरे सुगुणनयनर । वीर जिणंदे भाखियोरे लाल, उववाइ जास उपांग सुगु० ॥१॥ बलिहारि ए अगनीरे लाल हु जाउ वारवाररे सु० । विनये गोचरी आदरेरे लाल, जिहासाधु तणो आचररे ॥सु०॥ सुयखंध दोय छे जेहनारे लाल, प्रवर अध्ययन पचवीसरे सु० ॥ उद्देशादिक जाणीयेरे लाल, पिच्याशी सुजगीशरे सु० । ब० ॥२ । हेतु जुगति करी शोभतारे लाल, पद अढारे हजाररे सु० ॥ अक्षर पदने छेहडेरे लाल, सख्याता ओंकाररे सु० ॥ब०॥४॥ गमा अनंता जेहमांरे लाल, वलि अनत पर्यायरे सु० । त्रसपरित्तलो छेहडारे लाल थावर अनत कहायरे सु० ॥ब०॥५॥ निबद्ध निकाचित शाश्वतारे लाल, जिन प्रणीत ए भावरे सु० । सुणता आतम उल्लासेरे लाल, प्रगटे सहज स्वभावरे सु० ब० ॥६॥ सुगुण श्रावक श्राविकारे लाल, अंगेधरीय उल्लासरे सु० । विधि पूर्वक तुमे साभलोरे लाल, गीतारथ गुरुपासरे सु० ब०॥७॥ ए सिद्धांत महिमा

तिलोरे लाल, उतरे भवपाररे सु० । विनयचन्द्र कहे माहरेरे लाल, एहीज अग आधारे सु०। प०॥८॥इति

॥ अथ बीजी सुयगडांगनी सज्झाय ॥

(ढाल रसीयानी) बीजोरे अग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग (मोरा साजन) त्रणसे त्रेसठ पाखंडी तणो,मत खंडयो धरि रंग मो० ॥१॥ मीठीरे लागे वाणी जिन तणी, जागे जेहथीरे ज्ञान मो०। ए वाणी मनभावी माहरे,मानु सुधारे समान मो०। मीठी० ॥२॥ राय पसेणी उपाग छे जेहनो,ए तो सूत्र गभीर मो०। बहुश्रुत अरथ जाणे सहु, क्षीरनीर चतुर तीर मो०। मी० ॥३॥ एहनारे सुयखध दोयछे, वलि अध्ययन त्रेवीश मो०। उद्देशा समुद्देशा तिहा भला, सज्झाये त्रेवीश मो० मी० ॥ ४ ॥ नयनिक्षेप प्रमाण भर्या, पद छत्तीस हजार मो० । सख्याता अक्षर पटमांहे, कृपालहे तेहनोरे पार मो०। मी०॥५॥ गमा अनता पर्याय वली, भेद अनत जिणमांहे मो० गुण अनत त्रस परित्त कह्या,थावर अनत जेमांहिं मो० मी० ॥६॥ निबद्धनिकाचित जेमा सयकडा, जिनपन्न त्तारे भाव मो० । भावीरे सुन्दर एह प्ररूपणा,चरण करणनोरे जोग मो० । ॥७॥ करीये भगत जुगति ए

सूत्रनी, निश्चय रहीयेरे मुक्ति मो० । विनयचन्द्र कहे प्रगटे प्रगटे गहयी, आतम गुणनीरे शक्ति मो०मी०॥८॥

॥ अथ त्रीजी ठाणागनी सज्झाय ॥

(ढाल-आठ टके कंकणो लीयोरी-ए चाल)

त्रीजो अग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्री ठाणाग मोरो, मन मगन थयो, हारे देखी देखी भाव, हारे जीवा जीव स्वभाव, मोरो० । सकल जगत करी छाजमोरे जिनजी, जीवाभिगम उपाग मो०१॥ एह अग मुझ मन वस्योरे जि० जिम कोकिल दल चंब मो० गुहिर भाव कर जागतोरे जि० भाजतो एह प्रपंच मो० ॥२॥ कूट गोल शिखरी शिलारे जि० कान नमे घलि कुड मो० । गह्वर आगर द्रह नदीरे जि० जेहमें आंदरे उदह मो० ॥३॥ दशठाणा अनि दीपतारे जि० गुण पर्याय प्रयोग मो० । परित्त जेहिनी वाचनारे जि० सख्याता अनुयोगमो०॥४॥ वेढ शिलोक निजुत्तसुरे जि० संगरणी पडिवित्त मो० । ग सहु सख्याता जिहारे जि० सुणतां उलसे चित्तमो० ॥५॥ सुयमध एक राजतोरे जि० दश अध्ययन उदारमो० उद्देशादिक वीशछेरे जि० पद बहुतर हजारमो० ॥६॥ रागी जिनशासन प्रमोरे

जि० सुणे सिद्धांत बखाण मो० । विनयचन्द्र कहे न हुवे जि० परमारथना जाण मो० ॥७॥ इति

॥ अथ चोथी समवायांगनी सज्झाय ॥

(ढाल—थारा महिला उपर मेह झबोके बीजली—ए चाल)

चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल, सुणो० । पन्नवणा उपांग करी शोभावणी हो लाल, करी० ॥ अरथ मागधी भाषा शाखा सुरतणी, हो लाल, शाखा० । समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणो हो लाल, परि० ॥१॥ जीव अजीवने जीवा जीव समासथी हो लाल, जीव० । लहीये एहथी भाव विरोध काइ नथी हो लाल, विरोध भागा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल, यादि० । लोक अलोकने लोकालोक वखाणीये हो लाल,लोक ॥२॥ एक थकी छे सात समवाय प्ररूपणा हो लाल,समः । कोडा कोड प्रमाणक जीव निरूपणा हो लाल जी० । बारसाविह गणिपिटक तणी सख्या करी हो लाल, त० । शाश्वता अरथ अनंतक छे एहना सही हो लाल, छे ॥ ३ ॥ सुयखध अध्ययन उद्देशादिके भला हो लाल, उ० । सखयाए एक एक गुणानिला हो लाल, प्र० । पद एक लाख

चोमालीस सहस तेडत्तरा हो लाल, स० । पदने अपउत्तम मरपाता अक्षरा हो-लाल, स० ॥ ४ ॥ भाष्यचूरणि निर्युक्ति करी सोहे मदा हो लाल,क०। गुणना थेट गभीर,त्रिपत न होय कदा हो-लाल, त्रि० । जेह नमावे अगकी अतरगति हमी हो लाल अ० । जलवर्ने जोर कुण न हुवे खुसी हो लाल, कु०॥५॥ जारो परम सनेह जिणदसु माहरो हो लाल, जि० । तजिया शास्त्र मिथ्यान सूत्र जाण्यो खरो हो लाल, कु० । जिम मालती लही भृग,करीरे नवि रहे हो लाल, क० । इम्वर शिरसुरगग तजी परिनवि वहे हो लाल, स० ॥६॥ ए प्रवचन निग्रथ तणो जुगते वडो हो लाल, जु० । शाकर सेलडी द्राख थकी पण मीठडो हो लाल,थकी० स्यु कहिये बहु वात विनय-चद इम कहे हो लाल, वि० । एहना सुणीने भाव श्रोता अति गहगहे हो लाल, श्रो० ॥७॥ इति

॥ अथ (५) भगवतीसूत्रनी सज्झाय ॥

('ढाल-पयीडोनी')

पचम अगे भगवती जाणीयेरे, जिहां जिनवरना वचन अथाघरे । हिमवत परवत सेती नीकल्यारे, मानु परतक्ष गगा प्रवाहरे । पच० ॥१॥ सूरपन्नती

नामे परगटो रे, जेहनां छे उदाम उपांगरे। सूत्र तणी रचना दरीयाजिसीरे, माहिला अरथ ते सजल तरंगरे। प० ॥७॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलोरे एकमो एक अध्ययन उदाररे। दश हजार उद्देशा जेहनारे, जिहांकिया प्रश्न छत्रीस हजाररे। पं०॥३॥ पदनो दोय लाख अरधे मर्यांरे, उपरि सहस अठयासी जाणरे, लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे, विवाह पन्नत्ती अधिक प्रमाणरे। प० ॥ ४ ॥ करीये पूजा अने परभावनारे, धरिये सद्गुरु उपर रागरे सुणीये सूत्र भगवती रागसुरे, तो होय भवसागरनो त्यागरे। प०॥५॥गोतमनामे द्रव्य चढाइयेरे, सम्यग् ज्ञान उदय होय जेमरे। कीज साधू तथा साहमी तणीरे भगति जुगति मनआणी प्रेमरे प० ॥६॥ इण विधि सु एह सूत्र आराधतांरे, इणभवमीले वंछित काजरे। परभव विनयचन्द कहे ते लहेरे, मोहन मुगतिपुरीनो राजरे। प० ॥७॥ इति

॥ अथ (६) ज्ञातासूत्रनी सज्झाय ॥

(ढाल-कितलक राणा राजाजीरे मालिरे-ए देशी)

छट्ठा अङ्ग ते ज्ञातासूत्र वखाणीयेजी, जहना अधिक उच्छाहो, म्हांरा सुणजो धरिनेह

सिद्धांतनी वातडीजी । श्रवणे सुणता ताहो रस उपजेजी, मधुरना तार्जन जिम मधुवड हो, स्वा१० ॥१॥ जम्बूद्वीपपन्नत्ती उपांग जेहनोजी, इणमांहे जिन पूजानी विधिजो रहो । स्वा० । आर्चिक सुणि परम शांतिरस अनुभवेजी, चर्चिक सुणिकरे मममोर हो । स्वा० ॥२॥ नगर उद्यान चैत्यवन खंडसोइ भणोजी समवसरण राजाना मातने तातहो, स्वा० । धर्माचारज धर्म कथा तिहां दाखवीजी, इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहातहो, स्वा० ॥३॥ भोग परि त्याग प्रव्रज्या पर्यवाजी, सूत्रपरिग्रह वारुतपउपधान हो । स्वा० । सलेहण पचख्खाण पादपोपगमनताजी, स्वर्गगमन शुभकुल उतपत्ति हो । स्वा० ॥४॥ बोधि लाभ वलिअंत ने अनक्रिया कहीजी, धर्म कथानां दोय छे सुयखंध हो । स्वा० । पहिलाना उगणीश अध्ययन ते आज छे जी, बीजाना दशवर्ग सहा अनुपम हो स्वा० ॥५॥ उठकोडी तिहां सपल कथानक भाषियाजी, भाष्यावलि उगणीश उद्देशे हो स्वा० । सलपना हजार भला पद एहनाजी, एहथेकी जाये कुमति कलेश हो स्वा० ॥६॥ विनये करे जे गुरुनो बहु परेजी, तेहना सूत्र सुणतां बहु फल होय हो । स्वा० ते रामिया मनवसि या विनयचंद्रनेजी,

मोमांहेमिले जोयां एकके दोयहो त्यां॰ ॥७॥ इति

अथ (७) उपासकदशासूत्रनी सज्झाय

(ढाल-विछियानी)

हवे सातमो अंग ते सांभलो उपासकदशा नामे चगरे। श्रमणोपाशकनो वर्णना, जसुचद्रपन्नत्ती उपांगरे ॥१॥ मनलागो मोरोसूत्रथी, एतो भववैराग तरगरे। रसराता ज्ञाता गुण लहे, परमारथ सुविहित संगरे। मन॰ ॥२॥ इण अंगे सुयखंध एक छे, अध्ययन उद्देश विचाररे। दशदश सत्पावे दाख व्या, पदपिण सख्यात हजाररे। म॰ ॥३॥ आणदा- दिक श्रावक तणो, सुणतां अधिकार रसालरे। [illegible] झागे जागे मोहनी, श्रोता जनतं तत्कालरे। म॰ ॥४॥ श्रोता आगलतो वांचना, गीतारथ पामे दीसरे। जे अर्द्धदग्ध समझे नहीं तेहसुं तो करवी पीजरे। म॰ ॥५॥ दश श्रावक तो इहां भाखिया, पण सूत्र भण्यो नही कोयरे। ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होयरे। म॰ ॥६॥ साचो होय ते प्ररूपीये, निस्सक पण सुजगीशरे। कविविनयचद्र कहे स्यु थयो, जो कुमति करस्ये रीशरे म॰ ॥७॥ इति

अथ (८) अंतगडदशांगनी सज्झाय ॥

(ढाल वीरवखाणी राणी चेलणाजी ए देशी)

आठमो अंतगडदशांगजी, सुणी करो कान पवित्र। अंतगड केवली जे थयाजी, तेहनां रे इहां आठ चरित्र ॥१॥ कर्म कठिन दल चूरताजी पूरता जगतनी आस। जिनवर देव इहां भाखताजी, शाश्वता अर्थ सुविलास ॥ आठ० ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय अर्थीजी, अगना माय अभंग। सहज सुवरगनी तलिपकाजी, कलिपका जासु उपांग ॥ आठ० ॥३॥ एक सुयखंध इण अंगनोजी, वर्ग छे आठ अभिराम। आठ उद्देशा छे वलिजी, संख्याता सहस पदठाम ॥ आठ० ॥ ४ ॥ आठमी अंगना पाठमेंजी, पहवो अच्छरे मीठास। सरस अनुभव रस उपजेजी, सपजे पुन्यनी रास ॥ आठ० ॥५॥ विषय लंपट नर जे हुवेजी, निरविषयी सुणतां थाय। जिम महाविष विषधर तणोजी आगमथी सुणतां जाय ॥ आठ० ॥६॥ अमृत वचने सुख वरसतीजी, सरस्वती करोरे पसाय। जिम विनयचंद्र इण सूत्रनाजी सुरत छहे अभिप्राय ॥ आठ० ॥ ७ ॥ इति

अथ (९) अनुत्तरोववाइ अंग सज्झाय ॥

(ढाल-नणदल बिंदली ले-ए देशी ॥

नवमो अंग अनुत्तरोवधाई, एहनी रूचि मु
आई हो। (श्रावक सूत्र सुणो) सूत्र सुणो
प्राणी, एतो वीतरागनी वाणीहो ॥ श्रा० ॥ १
जसु कल्पावतांसिका नामे, मोह उपांग प्रकासे हो
श्रा० ॥ एतो आगमेन अनुकूल्य, मानु मेरु शि
नी चूलीहो ॥श्रा०॥२॥ एतो सूत्रनो नाम सुण
जे, तिमतिम अमर गति भी लेहो ॥ श्रा० ॥ प्र
मवळ सनेरा, पृथ्वी उलसे मारी देहा हो ॥श्रा०
॥३॥ अनुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गा
हा ॥ श्रा०॥ नगेनहिक साथ संवाण्या, ते
छठे अंगे आण्याहो ॥श्रा०॥४॥ इण एक सुय
धारु, त्रण वर्ग वलि मनोहारा हो ॥ श्रा०॥ उद्दे
प्रण सनरा, सयांला सहस पद पूरा ॥ श्रा० ॥
सूत्र सुणावु सभे तेहने, साची श्रद्धा हुये जेहने
श्रा० ॥ श्रोतार्थी प्रीत लगावुं, निरकने मुह
लगावुजे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करे धकार ते
माणस नहीं पण ढोर हो ॥श्रा०॥ कवि विनयच
कहे साचो श्रुत रंगे सहु काई राचोहो ॥ श्रा० ॥७

अथ (१०) प्रश्न व्याकरणांग सज्झाय ॥

(ढाल-आवो आप पधारो पूज्य-ए देशी)

दशमो अंग-सुरंग सुहावे, प्रश्न व्याकरण
ने। सूत्र कल्पतरू सेवे ते तो, चिदानंद फल पावे।
वो आवो गुणना जाण, तुमने सूत्र सुणावु ॥१॥
कला ज्यु, परिमल महके गुरु परागने राग।
उपांग पुष्पिका गहनो, जोर जुगति करी
गे ॥आवो० ॥ २॥ अंगुष्टादिक जिहां प्रकाश्या,
आदिक प्रति रूडा। ते छे अष्टोत्तर सत ए तो,
मध्य मणि चूडा ॥ आ० ॥ ३ ॥ आश्रवद्वार
व ईहां आपणा, पांचे-संवर द्वारा। महामंत्र
णीमां लहीये, लब्धि भेद सुखकारा ॥आ०॥४॥
यगध एक छे दशमें अंगे, पण चालीस अज्झयणा
ग पालीस उद्देश वली पद, सहस्र सकंपात नीर-
णा ॥आ०॥५॥ जे नर सूत्र सुण नहीं काने, केवल
पे काया। माया मांहि रहे लपटाणा, ते नर
म बीज आया ॥आ० ॥ ६॥ सूत्रमाहे तो मारग
य छे निश्चय नय व्यवहारा। विनयचंद कहेने
आदरिये तजि मन मदन विकारा ॥आ०॥७॥ इति

अथ (११) विपाकसूत्रनी सज्झाय ॥

(ढाल-कडखानी)

मृगारे विपाक श्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी । ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सुणो० ॥ १ ॥ अशुभ किंपाक सम दुष्कृत फल भोगवी, नरकमा नरक थया जेह प्राणी । सुकृत फल भोगवी स्वर्गमा जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० ॥२॥ दोय श्रुत स्कंधने वीश अध्ययन वली, वीश उद्देश इहां जिन प्रयुंजे । सहस संख्यात पद कुंद मच कुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे ॥सु०॥३॥ सरस वयर्कलता सुरभि सहुने रुचे, अन्य उपगारनी बुद्धिमाटे । सूत्र उपगार तेहथी सफल जाणीये, जेहथी दुरित सुख प्रबल खाटे ॥सु० ॥४॥ रत्नने मोक्षना बेड कारण अछे, दुष्कृतने सुकृत जोवो विचारी । दुष्कृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिन वचनें धारिये गुण संभारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ मंकुरें मकर निंदा निगुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ याचे । नारकी प्रकृति तजि सहज संतोप भज, लाग श्रुत सांभली धरम धन्धे ॥सु० ६॥

सुखने दुःख विपाकि फल व्याख्यां, अंग इग्यारमे वीतरागे । थिर थयो वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि दिपचंद गुण ज्योति जागे ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

(ढाल-बधावनी)

अंग इग्यारह में थुण्या, साहेलीए । आज वधा रंगरोलकि, सानही सुत्रमांहि एहनो ॥ सा० ॥ भाख्यो सर्व निचोल ॥ सा० ॥ १ ॥ म्हेलीए आज वधामणी, पसरी अंग इग्यारनी । सा० ॥ शुभ मन मंडप वेलकि, सा० ॥ सींचु ते हरखे करी, सा० ॥ अनुभव रसनी रेल की, सा० ॥ २ ॥ हेज धरी जे सांभले, सा० ॥ फुल झूझा हुण वालकि, सा० ॥ तोते फल लहे फूटरा, सा० ॥ स्वादे अतिहि रसालकि, सा० ॥ ३ ॥ हरख अपार धरि हीये, सा० ॥ श्रहम्मदाबाद मझारकि, सा० ॥ जाच करीए अगनी, सा० ॥ वरत्या जयजयकारकि, सा० ॥ ४ ॥ संवत सतर पचावने, सा० ॥ विरसा ऋतु भल मासकि, सा० ॥ दशमी दिन शुदि पक्षमां, सा० ॥ पूरण थई मन आशकि, सा० ॥ ५ ॥ श्रीजिनधर्मसूरि पाटथी, सा० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरी पाटकि, सा० ॥ खरतर गच्छना

हृदय निधानजी, सा० ॥ ज्ञान तिलक सुपसायकि, सा० ॥ विमयचन्द कहे में करी सा० ॥ अंग इग्यार सज्झायकि, साहे० ॥ ७ ॥

॥ इति ज्ञानपचमी आराधन विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ मौनएकादशी पर्व अधिकार ॥

मगशिर सुदि ११ इग्यारस मौनएकादशी नामथी, पर्व प्रसिद्ध छे, आ दिवसे १५० दोढसो जिन कल्याणक थया छे, यथा श्रीमल्लिनाथना जन्म १ दीक्षा १ केवलज्ञान १ आ त्रण कल्याणक श्रीअरनाथनी दीक्षा १ कल्याणक अने श्रीनमिनाथनो केवलज्ञान १ कल्याणक थयो छे, तेथी आ वर्त्तमान चोवीशीमां पांच कल्याणक थया एवी रीते बीजा चार भरत अने पांच ऐरवतने विषे पांच पांच कल्याणक होवाथी दश क्षेत्र संबंधि १० वर्त्तमान जिन चोवीसीमां ५० पचास कल्याणक थया वली अतीत वर्त्तमान अने अनागत ३० जिन चोविशीमां १५० दोढसो कल्याण थाय छे, ते कारणथी आ दिवस पर्व तरीके मोटो गण्य छे, वली आ दिवसे मौन सहित उपवास करवो, शक्ति होय तो पोषध करवो तेनी पण शक्ति होय तो देशावगासिक के सामायिक अवश्य

करवो, अने पोषध आदि व्रतमां मौनपणे १५० मालानो गुणणो करे, आ तप जघन्यथी ११ मास मध्यमथी ११ वर्ष अने ११ मास उत्कृष्टथी जाव जीव सुधी उपवास आदिथी सुदि एकादशी आराधे, कदाच रोगादि कारणे वच्चमां करे तो व्रत भंग न थाय, आ पण न बनी शके तो मागशिर सुदि मौन एकादशीने दिवस उपवासादिकथी आ पर्वनी आराधना करे, तथा ११ खमासमणा ११ साथीया ११लोगस्सनो काउस्सग (श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः) आ पदना २० माला आ बीना दरेक सुदि ११ ने दिवसे करवा, बीजी प्रतिक्रमण आदिक्रिया नित्य कृत्यनी माफक समजवी, आ व्रत पूर्ण थये छते ज्ञानपंचमनी माफक उजमणो समजवो, पण एटलु विशेष छ के पांच पांच वस्तुने ठेकाणे इग्यार इग्यार वस्तु समजवी

अथ मौनएकादशीनो १५० गुणणो

[१] जंबूद्वीप भरतक्षेत्र अतीत चौवीशी पांच कल्याणक नाम

४ श्री महायश	सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीसर्वानुभूति	अर्हते नमः
६ श्रीसर्वानुभूति	नाथाय नमः

हरख निधानजी, सा० ॥ ज्ञान तिलक सुपसायांकि, स० ॥ दिपयचन्द कहे में करी सा० ॥ अग इग्यार सज्झायांकि, सा० । ७ ॥

॥ इति ज्ञानपचमी आराघन विधि सपूर्णम् ॥

॥ अथ मौनएकादशी पर्व अधिकार ॥

मगशिर सुदि ११ इग्यारस मौन एकादशी नामथी पर्व प्रसिद्ध छे, आ दिवसे १५० दोढसो जिन कल्याणक थया छे, यथा श्रीमल्लिनाथना जन्म १ दीक्षा १ केवलज्ञान १ ए त्रण कल्याणक श्रीअरनाथनी दीक्षा १ कल्याणक अने श्रीनमिनाथनो केवलज्ञान १ कल्याणक थयो छे, तेथी आ वर्त्तमान चोवीशीमां पांच कल्याणक थया एवी रीते बीजा चार भरत अने पांच ऐरवतने विषे पांच पांच कल्याणक होवाथी दश क्षेत्र सम्बंधि १० वर्त्तमान जिन चोवीसीमां ५० पचास कल्याणक थया वली अतीत वर्त्तमान अने अनागत ३० जिन चोविशीमां १५० दोढसो कल्याण थाय छे, ते कारणथी आ दिवस पर्व तरीके मोटो गण य छे, वली आ दिवसे मौन सहित उपवास करवा, शक्ति हाय तो पोषाध करवो तेनी पण शक्ति होय तो देशावगासिक के सामायिक अवश्य

करवो, अने पोषध आदि व्रतमां मौनपणे १५० मालाना गुणणो करे, आ तप जघन्यथी ११ मास मध्यमथी ११ वर्ष अने ११ मास उत्कृष्टथी जाव जीव सुधी उपवास आदिथी, सुदि एकादशी आराधे, कदाच रोगादि कारणे बदलो करे तो व्रत भंग न थाय, आ पण न बनी शके तो मागशिर सुदि मौन एकादशीने दिवस उपवासादिकथी आ पर्वनी आराधना करे, तथा ११ खमासमणा ११ साथीया ११ लोगस्सनो काउस्सग्ग (श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः) आ पदनां २० माला आ बीना दरेक सुदि ११ ने दिवसे करवा, बीजी प्रतिक्रमण आदिक्रिया नित्य कृत्यनी माफक समजवी, आ तप पूर्ण थये छते ज्ञानपंचमनी माफक उजमणो समजवो, पण एटलु विशेष छे के पांच पांच वस्तुने ठेकाणे इग्यार इग्यार वस्तु समजवी

अथ मौनएकादशीनो १५० गुणणो.

[१] जंबुद्वीप भरतक्षेत्र अतीत [जिन]
चोवीशी, पांच कल्याणक नाम

४ श्री महायश — सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीसर्वानुभूति — अर्हते नमः
६ श्रीसर्वानुभूति — नाथाय नमः

६ श्रीसर्वानुभूति सर्वज्ञाय नमः
७ श्रीधर नाथाय नमः

[२] जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रे वर्तमान जिन
चौबीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीअर नाथाय नमः
१९ श्रीमल्लि अर्हते नमः
१९ श्रीमल्लि नाथाय नमः
१९ श्रीमल्लि सर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः

[३] जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रे अनागत जिन
चौबीसी पांच कल्याणक

४ श्रीस्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीदेवश्रुत अर्हते नमः
६ श्रीदेवश्रुत नाथाय नमः
६ श्रीदेवश्रुत सर्वज्ञाय नमः
७ श्रीउदय नाथाय नमः

[४] धातकी खंड पूर्व भरते अतीत जिन
चौबीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअकलंक सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीशुभंकर अर्हते नमः
६ श्रीशुभंकर नाथाय नमः

६ श्रीशुभकर सुर्वज्ञाय नमः
७ सत नाथाय नमः

(५) धातकीखंडे पूर्वभरते वर्तमान जिन
चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीगांगीलनाथाय नमः
१९ श्रीगुणनाथअर्हते नमः
१९ श्रीगुणनाथनाथाय नमः
१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीप्रचंद्रसर्वज्ञाय नमः

(६) धातकी खंडे पूर्वभरते अनागत जिन
चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीसंप्रतिसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीमुनिनाथअर्हते नमः
६ श्रीमुनिनाथनाथाय नम
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीविशिष्टनाथाय नमः

(७) धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत जिन
चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीसर्वांगसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीहरिभद्रअर्हते नमः
६ श्रीहरिभद्रनाथाय नमः

६ श्रीहरिभद्रसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीमगधाधिनाथाय नमः

(८) धातकीखंडे पश्चिमभरत वर्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीमल्लिसिंहनाथाय नमः
१९ श्रीजक्षोमअर्हते नमः
१९ श्रीजक्षोमनाथाय नमः
१९ श्रीजक्षोमसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीप्रवरुणसर्वज्ञाय नमः

(९) धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीधनदअर्हते नमः
६ श्रीधनदनाथाय नमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीपापनाथाय नमः

(१०) पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अतीत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीमृदुनाथाय नमः
६ श्रीव्यक्तअर्हते नमः
६ श्रीव्यक्तनाथाय नमः

६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञाय नमः
७ कलाशतसर्वज्ञाय नमः

(११) पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीप्रयोगनाथाय नमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हते नमः
१९ श्रीयोगनाथाय नमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः

(१२) पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीपरमसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हते नमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथाय नमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीनिष्केशनाथाय नमः

(१३) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अतीत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीप्रत्यक्षसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीधारित्रनिधिअर्हते नमः
६ श्रीधारित्रनिधिनाथाय नमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीप्रशमजितनाथाय नमः

(१४) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते वर्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणं

१८ श्रीप्रसादनाथाय नमः
१९ श्रीविपरितअर्हते नमः
१९ श्रीविपरितनाथाय नमः
१९ श्रीविपरितसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञाय नमः

(१५) पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअघटितसर्वज्ञाय नम
६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हते नम
६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथाय नमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीऋषभचन्द्रनाथाय नम

(१६) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीदयांतसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीअभिनन्दनअर्हते नमः

६ श्रीअभिनन्दननाथाय नमः
६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीरत्नेशनाथाय नमः

(१७) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथाय नमः
१९ श्रीमरुदेवअर्हते नमः
१९ श्रीमरुदेवनाथाय नमः
१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीशामकोष्टसर्वज्ञाय नमः

(१८) जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीनदिषेणसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीव्रतधरअर्हते नमः
६ श्रीव्रतधरनाथाय नमः
६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीनिर्वाणनाथाय नमः

(१९) धातकीखण्डे पूर्वऐरवते अतीत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीसौंदर्यसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीत्रिविक्रमअर्हते नमः

५ श्रीत्रिविक्रमनाथाय नमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीनरसिंहनाथाय नमः

(२०) धातकीखंडे पूर्वऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीकामनाथाय नमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हते नमः
१९ श्रीसंतोषितनाथाय नमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीक्षेमसर्वज्ञाय नमः

(२१) धातकीखंडे पूर्वऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हते नमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथाय नमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीदिलादित्यनाथाय नमः

(२२) धातकीखंडे पश्चिमऐरवतक्षेत्रे अतीत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीपुरखसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीअवबोधअर्हते नमः

६ श्रीअवबोधनाथाय नमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथाय नमः

(२३) धातकी पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीनंदिकेशनाथाय नमः
१९ श्रीएरअर्हते नमः
१९ श्रीहरनाथाय नमः
१९ श्रीहरसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीसुशांतसर्वज्ञाय नमः

(२४) धातकी पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीअसौचितअर्हते नमः
६ श्रीअसौचितनाथाय नमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथाय नमः

(२५) पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतक्षेत्रे अतीत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीअष्टाह्निकसर्वज्ञाय नमः

५ श्रीघणिकअर्हते नमः
६ श्रीघणिकनाथाय नमः
६ श्रीघणिकसर्वज्ञाय नम
७ श्रीउदयज्ञाननाथाय नमः

(२६) पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक

१८ श्रीखेमतनाथाय नमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हते नमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथाय नमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञाय नम'
२१ श्रीतमोकदनसर्वज्ञाय नमः

(२७) पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीरविराजअर्हते नम,
६ श्रीरविराजनाथाय नमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञाय नम
७ श्रीप्रथमनाथाय नमः

(२८) पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे अतीत जि चोवीसी पाच कल्याणक

४ श्रीअश्वर्यवृंदसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीकुटिलअर्हते नमः
६ श्रीकुटिलनाथाय नमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथाय नमः

(२९) पुष्करार्द्ध पश्चिमे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान जिन चोवीसी पांच कल्याणक।

१८ श्रीविवेकनाथाय नमः
१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हते नमः
१९ श्रीधर्मचंद्रनाथाय नमः
१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीनादिकेशसर्वज्ञाय नमः

(३०) पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवतक्षेत्रे अनागत जिन चोवीसी पांच कल्याणक

४ श्रीकलापसर्वज्ञाय नमः
६ श्रीविमोमअर्हते नमः
६ श्रीविमोमनाथाय नमः
६ श्रीविलोमसर्वज्ञाय नमः
७ श्रीआरन्यनाथाय नमः

इति मौनएकादशी १५० गुणणो।

पोषवदि १० दशमी तपनु अधिकार

आ तप पोषवदि एटले गुजराती मागशरवदि १०ने दिवसे थाय छे, केमके ते दिवसे श्रीपार्श्वनाथनु जन्मकल्याणक छे, तेमां प्रथम नवमीने दिवसे साकरना पाणीनु ठाम चोविहार एकासणु करवु दशमने दिवसे ठाम चोविहार क्षीरनो एकासणु करवुं इग्यारसने दिवसे दिवसे एकासणु करवु, ते दिवसे पडिक्कमणो देवपूजा करवी, ब्रह्मचर्य पालवुं शक्ति होय तो पोषो करवो, आतप १० वरष दश मास सुधी दरेक दशमने दिवसे एकासणु करवु आतप करनार सूत्रवत्तनी माफक आ लोक परलोक विषे सुखी थाय छे, अनुक्रमे मोक्षना सुख पामे, दशमीने दिवसे (श्रीपार्श्वनाथ अर्हते नमः) आपदनी १० वीश मालां फेरवी अरिहंतना बार गुण होवाथी १२ साथीया १२ खमासणा १२ प्रदक्षिणा १२ लोगस्सनो काउस्सग करवो, उजमणामां ज्ञानदर्शन चारित्रनी दश दश वस्तु समजवी

अथ मेरु तेरसतपनो अधिकार

आ तपनो माघवदि गुजराती पोषवदि १३ तेरसने दिवसे आरंभ थाय छे, ते दिवसे श्रीरुष-

भदेवनु निर्वाण कल्याणक थयुं छे तेथी ए दिवस नु महात्म्य घणु मोटु छे, ते दिवसे चउविहार उपवास करवो, शक्ति न होय तो तिविहार करवो रत्नना सोनाना चांदीना अथवा घीना पांच मेरु करवा, ते मेरु चारे दिशामां चार अने तेना वीचमां एक मोटो मेरु करवो, जो गाममां वाजा गाजा सहित फेरायु होयतो, ते मेरुने थालमां राखीने फेरवीने देरासरमां जइने चारे दिशामां तथा एक वीचमां नद्यावर्त्त साथीया (गुहली) पांच करीने तेना उपर मुकीने दीप धूप प्रमुखथी पूजा करवी, आ तप तेर मास अथवा तेर वरस सुधी करवुं, ते दिवसे [श्रीऋषभदेव पारगताय नमः] आ पदनी २० वीसमाला गणवी साथीया खमासणा प्रदक्षिणा काउस्सग्ग बार बार करवा

अथ रोहिणी तप अधिकार

आ तप रोहिणी नक्षत्रमां थाय छे, तेथी ते रोहिणी तप कहेवाय छे, ते तप अक्षय तृतीया अथवा आगल पाछल रोहिणी नक्षत्र आवे त्यारे सरू थाय छे, ते तप श्रीवासुपुज्यस्वामीनी पूजापूर्वक सात वरस सात मास सुधी थाय छे,जे जे मासमां

उधारे रोहिणी आवे,त्यारे उपवास आंबील अथवा एकाशणाथी ते तप करवो, कदाच भूल थइ जाय तो पाछो फरीथी करवो, देवपूजा प्रतिक्रमण देववंदन शीलव्रत आदि क्रिया करवी, उजमणामां रत्नमय सूवर्णमय अशोकवृक्ष आदि करवो, आ तपथी अक्षयसुख मीले छे [श्रीवासुपूज्यसर्वज्ञाय नमः] आ पदनी वीशमाला फेरववी साथीया खमासणा काउस्सग्ग प्रदक्षिणा बार बार जाणवा,

॥ अथ सोलीया (कषाय जय) तपनी विधि

क्रोध१ मान२माया३ लोभ४ आचार कषायना सोल भेद थाय छे यथा अनंतानुबंधी ४ अप्रत्याख्यानी४ प्रत्याख्यानी४ संज्वलन४ आ कषायने जीतवाने चार ओली करवी, यथा पहेले दिवसे एकासणु, बीजे दिवसे नीवी, त्रीजे दिवसे आंबील, चोथे दिवसे उपवास करवाथी एक ओली पुरी थाय छे एवी रीते च्यार ओली करवाथी १६ दिवसे आ तप पुरो थाय छे, आ तपपूर्ण थया बाद स्नात्रपुजा पूर्वक १६ मोदक फलफुल आदि अष्टद्रव्यथी जिनेश्वरनी पुजा करवी, [सर्वकषायजय तपसे नमः] एनी दररोज २० वीशमाला गणवी अने साथीया विगरे सोल

सोल करवा, प्रतिक्रमणु देववंदन आदि क्रिया हमेसानी माफक समजवी,

॥ अथ पखवासो तपविधि ॥

आ दिवसमादिने गुरू पासे तप ग्रहण करे, पछे सुदि एकमथी लगावी पूनम सुधी १५ उपवास भेगा करे पनर उपवासनी शक्ति न होय तो प्रथम सुदि पक्षनी एकमें उपवास करवो, पछे बीज मासे सुदि बीज, त्रीजे मासे सुदि त्रीज, एम अनुक्रमे पनरमे मासे पूनमनो उपवास करवो, त्यारे आ तप पुरो थाय छे, जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे (श्रीमुनिसुव्रतस्वामि सर्वज्ञाय नमः) आ पदनी २० माला गणवी, साथीया आदि बार बार समजवा, प्रतिक्रमण देववंदनादि क्रिया सर्व करवी

॥ अथ छमासी तपविधि ॥

श्रीमहावीरस्वामीना शासनमां उत्कृष्ट छमासी (उपवास १८० नो) तप थाय छे तेथी तेने आधीन एकसो एंसी उपवास एकांतरीया पारणावाला करवा उजमणामां १८० लाडु फल विगेरे प्रभुने आगल राखवा, तपस्याने दिवसे (श्रीमहावीरनाथाय नमः) आ पदनी वीश माला साथीया विगेरे

धार करवा, अथवा एकांतरीया उपवास छमास सुधी करवा, तेमां चउदशे खवाय नहीं; चोमासीनो छठ करवो, ग्रह करता छठ्ठ तेजम पारणु पण छठे थाय छे, आ छमासी तपमां ९० उपवास थाय छे, देव वंदनादि क्रिया करवी, एवीरीते आठमासी तप करवो होयतो आठमास करवा बारमासी तप करवो होयतो बारमास करवा, एवी राते त्रणमास, बेमास दोढ मास पण समजो,

॥ अथ वरषीतप विधि ॥

श्रीऋषभदेवस्वामीए चैत्र (गुजराती फागण) वदि ८ मे दीक्षा लइने बीजा वरषनी अक्षात्रीजे (बारमो उपवासे) पारणो कर्यो तेथी आने वरषी तप कहे छे, आतप चैत्रवदी आठमथी सरु करता त्रीजे वर्षे अक्षात्रीजनो पूर्ण थाय छे, आरातपमां एकांतरीयां उपवास करवा, तप करतां वचली अखात्रीजमां पारणो आवे तो ते दिवसे उपवास करवो पण पारणो न करवो, छेले दिवसे देवगुरुनी पूजा पूर्वक स्वामीवत्सल करीने पारणो करवो, तपस्याने दिवसे (श्रीऋषभदेवनाथाय नमः) आ पदनी वीश माला फेरवी, साथीया विगेरे बार बार समजवा

(बीजीरीत) श्री रुषभदेव स्वामीना शासनमा उत्कृष्ट तपस्या बार मासनी होवाथी आखाश्रीजे एकांतरीया उपवास सरू करीने बीजे वरषे आखात्रीजनो पारणो करे बाकी विधि उपर प्रमाणे—

हालमा आ तप करवानो प्रचार आ प्रमाणे छे चैत्रवद ८ ने दिवसे उपवासथी सरू करी एकान्तरे पारणे बेयासणु करी तेर मास अने अगीयार दिवसे एटले अखात्रीजे पारणु करे छे, पारणे १०८ घडा सेलडीनो रस अथवा साकरनो पाणी पीए छे, [घडो रूपानो घणो नानो बनावे छे]

आ तपमा चउदशनो पारणो न करवो जोइए तेम वण चोमासी (१४-१५) ना छठे करवा जोइए, अने छवटे छठथी ओछे तपे पारणु न करवु जोइए, सेलडीनो रस बे पहोर पछे अभक्ष्य थाय छे तेथी ताजो वापरवो, उपवासने दिवसे देववंदनादि क्रिया करवी

अथ २८ लब्धी तपविधि

आ तप एक एक लब्धिनो एक एक एकांतरीया उपवास करवाथी अट्ठावीस उपवासे पुरो थाय छे,

अने जे लब्धिनो उपवास धारतो होय, ते लब्धिनी २० माला फेरवी, अने देववंदनादि क्रिया करवी आ तपस्या करवाथी आणंद थाय छे अथवा लागट २८ आंबीज २८ निवी अथवा २८ एकासणांथी पण आ तप थायवे

॥ २८ लब्धिनो गुणणो ॥

१ श्रीआमोसही	लब्धये नमः
२ श्रीवीपोसही	,,
३ श्रीखेलोसही	,,
४ श्रीजल्लोसही	,,
५ श्रीसव्वोसही	,,
६ श्रीसभिन्नसोयोसही	,,
७ श्रीअवधि	लब्धये नमः
८ श्रीरुजुमइ	,,
९ श्रीविपुलमइ	,,
१० श्रीचारण	,,
११ श्रीआसीविस	,,
१२ श्रीकेवल	,,
१३ श्रीगणधर	,,
१४ श्रीपूर्वधर	,,

१५ श्री अरिहंत „
१६ श्रीचक्रवर्ति „
१७ श्रीबलदेव „
१८ श्रीवासुदेव „
१९ श्रीक्षीरमध्वाश्रव „
२० श्रीकोष्टबुद्धि „
२१ श्रीपदानुसारि „
२२ श्रीबीजबुद्धि „
२३ श्रीतेजोलेश्या „
२४ श्रीआहारक „
२५ श्रीशीतलेश्या „
२६ श्रीवैक्रिय „
२७ श्रीअक्षीणमहानसी „
२८ श्रीपुलाक नमः इति

॥ अथ १४ पूर्व तपविधि ॥

आ चउद पूर्वनी तपस्या ज्ञानरीश चउद १४ उपवास पूरा करवाथी थाय छे, जे दिवसे जे पूर्व उपवास होय, ते दिवसे ते पूर्वनी २० माला गणे, आ तप सुदि १४ थी सरु करवो, अने साथीआ विगेरे कोष्टमां देखवा देववदनादि सर्व रथी तप पूर्ण थया उजमणो ज्ञान पचमी

जागवो अथवा लागट १४ आंबील १४ निवी १४
एकासणाथी पण आतप थाय छे

अथ १४ पूर्वनो गुणणो आदि

	सा	ख	लो	मालो
१ श्रीउत्पाद पूर्वाय नमः	१४	१४	१४	२०
२ श्रीअग्रायणी ,,	२६	२६	२६	२०
३ श्रीवीर्यप्रवाद ,,	१६	१६	१६	२०
४ आस्तिप्रवाद ,,	२८	२८	२८	२०
५ श्री ज्ञानप्रवाद ,,	१२	१२	१२	२०
६ श्री सत्यप्रवाद ,,	२	२	२	२०
७ श्रीआत्मप्रवाद ,,	१६	१६	१६	२०
८ श्रीकर्मप्रवाद ,,	३०	३०	३०	२०
९ श्री प्रत्याख्यानप्रवाद,,	२०	२०	२०	२०
१० श्रीविद्याप्रवाद ,,	१५	१५	१५	२०
११ श्रीअविंध्यप्रवाद ,,	१२	१२	१२	२०
१२ श्रीप्राणावाय पूर्वाय नम	१३	१३	१३	२०
१३ श्रीक्रियाविशाल ,,	३०	३०	३०	२०
१४ श्रीलोकबिंदुसार ,,	२५	२५	२५	२०

अथ तिलक तपविधि

आ तप वीश उपवासे पुरो थाय छे तेमा श्रीरुष
भदेवस्वामी सबन्धी ६ छ उपवास करे, पछे अजि

तनाथ आदि बावीस तीर्थंकरों सम्बन्धी एक एक उपवास करे अने महावीरस्वामी सम्बन्धी बे उपवास करे गुणणो जे तीर्थंकर सम्बन्धी उपवास होय तनो गुणणो करे, साथिया विगेरे बारबार, देववंदनादि सर्व क्रिया करे,

—० गुणणो ०—

१ श्रीऋषभदेव	सर्वज्ञाय नमः
२ श्रीअजितनाथ	,,
३ श्रीसंभवनाथ	,,
४ श्रीअभिनंदन	,,
५ श्रीसुमतिनाथ	,,
६ श्रीपद्मप्रभु	,,
७ श्रीसुपार्श्वनाथ	,,
८ श्रीचंद्रप्रभु	,,
९ श्रीसुविधिनाथ	,,
१० श्रीशीतलनाथ	,,
११ श्रीश्रेयांसनाथ	,,
१२ श्रीवासुपूज्यस्वामी	,,
१३ श्रीविमलनाथ	,,
१४ श्रीअनंतनाथ	,,
१५ श्रीधर्मनाथ	,,

१६ श्रीशांतिनाथ ,,
१७ श्रीकुंथुनाथ ,,
१८ श्री अरनाथ ,,
१९ श्री मल्लिनाथ ,,
२० श्री मुनिसुव्रत ,,
२१ श्री नमिनाथ ,,
२२ श्री नेमिनाथ ,,
२३ श्री पार्श्वनाथ ,,
२४ श्री महावीर ,,

॥ अथ ४५ आगम तपविधि ॥

आ तप ४५ उपवास करवाथी पूरो थाय छे, आ तपना उपवास एकांतरीया अथवा ज्ञानादि तिथीमां छुटा छुटा पण थाय छे, ४५होय ते सूत्रनी अथवा ४५ आंबीलनिवी अथवा ४५ जे सूत्रचालतो ४५ एकासणा लोगट करवाथी पण आतप थाय छे, वीश माला गणवी साथीया विगेरे कोष्टक प्रमाणे जाणवा

प्रथम ११ अंग गुणणो

सा ख लो माला

२ श्रीसुगडांगसूत्राय नमः, २३-२३-२३-२०
३ श्रीठाणांगसूत्राय नमः १०-१०-१०-२०
४ श्रीसमवायांगसूत्राय नमः१०४-१०४-१०४-२०
५ श्रीभगवतीसूत्राय नमः ४२-४२-४२-२०
६ श्रीज्ञातांगसूत्राय नमः १९-१९-१९-२०
७ श्रीउपाशकदशांगसूत्राय नमः १०-१०-१०-२०
८ श्रीअंतगडदशांगसूत्राय नमः १९-१९-१९-२०
९ श्रीअनुत्तरोववाइसूत्राय नमः २३-२३-२३-२०
१० श्रीपन्नावागरणसूत्राय नमः १०-१०-१०-२०
११ श्रीविपाकसूत्राय नमः २०-२०-२०-२०

बार उपांग

१२ श्रीउववाइसूत्राय नमः २३-२३-२३-२०
१३ श्रीरायपसेणीसूत्राय नमः ४२-४२-४२-२०
१४ श्रीजीवाभिगमसूत्राय नमः १०-१०-१०-२०
१५ श्रीपन्नवणासूत्राय नमः ३६-३६-३६-२०
१६ श्रीजम्बूद्विपपन्नत्तीसूत्रायनमः५०-५०-५०-२०
१७ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्राय नमः ५०-५०-५०-२०
१८ श्रीसूरपन्नत्ती " ५७-५७-५७-२०
१९ श्रीकप्पिया " १०-१०-१०-२०
२० श्रीकप्पवडिंसिया " १०-१०-१०-२०
२१ श्रीपुप्फिया " १०-१०-१०-२०

२२ श्रीपुष्फचूलिया ,, १०-१०-१०-२०
२३ वह्निदशा- ,, १०-१०-१०-२०

६ छे छेद सूत्र

२४ श्रीव्यवहार सूत्राय नमः २०-२०-२०-२०
२५ श्रीवृहत्कल्प ,, ३-३-३-२०
२६ श्रीदशाश्रुतस्कंध ,, १९-१९-१९-२०
२७ श्रीनिशीथ ,, १६-१६-१६-२०
२८ श्रीमहानिशीथ ,, ४२-४२-४२-२०
२९ श्रीजीतकल्प ,, ३५-३५-३५-२०

१० पयन्ना

३० श्रीचउसरणपयन्नासूत्रायनमः १०-१०-१०-२०
३१ श्रीसंथारापयन्ना ,, १०-१०-१०-२०
३२ श्रीतंदुलपयन्ना ,, १०-१०-१०-२०
३३ श्रीचंद्राविज्झा ,, १०-१०-१०-२०
३४ श्रीगणिविज्जा ,, १०-१०-१०-२०
३५ श्रीदेविंदथुओ ,, १०-१०-१०-२०
३६ श्रीवीरथुओसूत्राय नमः १०-१०-१०-२०
३७ श्रीगच्छाचार ,, १०-१०-१०-२०
३८ श्रीजोतिसकरंडक ,, १०-१०-१०-२०
३९ श्रीमहापचक्खाण ,, १०-१०-१०-२०

४ मूलसूत्र

४० श्रीआवश्यकसूत्राय नमः		३२–३२–३२–२०
४१ श्रीउत्तराध्ययन	,,	३६–३६–३६–२
४२ श्रीओघनिर्युक्ति	,,	१०–१०–१०–२०
४३ श्रीदशवैकालिक	,,	१४–१४–१४ २०

॥ बे छुटक सूत्र ॥

४४ श्रीअनुयोगद्वारसूत्राय नम	,,	६२–६२–६२–२०
४५ श्रीनंदी	,,	५१–५१–५१–२०

११ गणधर तप

आ तप दरेक एक एक गणधरनी एक एक उपवास अथवा लागट आवील निवी अथवा एका सणो करवाथी पूरो थाय छे तेमा जे गणधर नो उपवास होय ते दिवसे ते गणधरनो जाप २० माला नो करवो, अने साथीया विगेरे इग्यार इग्यार सम जवा बीजी क्रिया विधि सरखी करवी,

गणधरनो जाप

१ श्रीइंद्रभूति	गणधराय नमः
२ श्रीअग्निभूति	,,
३ श्रीवायुभूति	,,
४ श्रीव्यक्तभूति	,,
५ श्रीसुधर्मा	,,

करना। पीछे एकातरीया ६० उपवास करके ऊपर एक अट्ठम करना। सब मिलाके ६६ उपवास होते हैं। ६३ पारणे होत हैं।

दूसरी रीति से पहिले दिन उपवास दूसरे दिन एकासणा, तीसरे दिन ठाम चोविहार एक दाणा का आबील करना। चौथे दिन एकल ठाणु (चोविहार एकासणु) करवु। पांचमें दिवसे ठाम चोविहार एक दत्ती (एक वखते आणामा पडलुज खावुतें) नु एकसणो करवो। छट्ठे दिवसे लुखी नीवी, सातम दिन आबील, आठमें दिन अठ कवलनु एकसणो करवो। इस प्रकार आठ दिनमें यह तप पूरा होता है। साथिआ वगेरा जितने जिस कर्म की प्रकृतिए हैं उतने ही करना। माला २० गिनना।

उजमणा में मूल आठ कर्म उत्तर प्रकृति १५८ होने से रूपा का एक वृक्ष कराना वह भी आठ शाखा व १५८ पानड़ा सहित कराना। उसके मूल में कर्मरूप वृक्ष को छेदन हेतु सोना का कुहाडा तैयार कराना जिस दिन जो कर्म का तप चल उस दिन योही गुणना आदि करना।

गुणणो— खमा सा माला

१ श्रीअनंत ज्ञान गुणधारकायनमः ५—५—५—२०

२ श्रीअनंत दर्शन ,, ७—७—७—२०
३ श्रीअव्याबाध ,, २—२— २—२०
४ श्रीक्षायिक सम्यक्त्व ,, २८-२८-२८-२०
५ श्रीअक्षय स्थिति ,, ४—४—४—२०
६ श्रीअमूर्ति ,, १०३ १०३-१०३-२०
७ श्रीअगुरु लघु ,, २—२—२—२०
८ श्रीअनंत वीर्य ,, ५—५—५—२०

चदन बालानो अट्ठम तप विधि

कोई भी दिवस यह अट्ठम तप किया जाता है पारणे के दिन उड़द के बाकले मुनिराज को वहरा कर उसी का स्वय भी पारणा करे। पारणे आयबील का पचक्खाण करे। ठाम चोविहार करे। इस तप के पारणे पर रूपा की सुपड़ी में ने खुणे उड़द के बाकडे भरके वोहरावे रूपानाणा से गुरु की पूजा करे। वहराते वखत पगमें तथा हाथमे सुतर की अथवा रेशम की आटी डालना। इस तप में (श्री माहवीरनाथाय नम) इस पद की २० माला व, साथिया वगेरा १२—बारा।

-- ॥ अथ पचकल्याणक तपविधि ॥

आ तप नपैमा परो-बाध छे, अने

आंबील नीवी अथवा एकासणा थी आ तप कराय छे, एक एक कल्याणकनो एक एक उपवास करवो, जे तिथिये एक, बे, त्रण, चार के पांच कल्याणक होय तो, ते तिथिये प्रतिवर्ष एकएक उपवास करीने तप पुरो करवो जे कल्याणकनो उपवास चालतो होय तेनो गुणणो २० माला साथीया काउस्सग विगेरे बार बार जाणवा, बीजी किया नित्यक्रिया माफक

पंचकल्याणकनु गुणणो

तिथि	कार्तिक (गुजराती आसो) वदि	कल्याणक
५	श्रीसंभवनाथ सर्वज्ञाय नम	केवल
१२	श्रीपद्मप्रभ अर्हते नम.	जनम
१२	श्रीनेमिनाथपरमेष्ठिने नम	चवन
१३	श्रीपद्मप्रभनाथाय नमः	दीक्षा
०))	श्रीमहावीर पारगताय नमः	मोक्ष
	कार्तिक सुदि	
३	श्रीसुविधिनाथ सर्वज्ञाय नम.	केवल
१२	श्रीअरनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
	मागशीर (गु० कार्तिक) वदि	
५	श्रीसुविधिअर्हते नमः	जन्म
६	श्रीसुविधिनाथाय नमः	दीक्षा

१० श्रीमहावीर नाथाय नमः दीक्षा
११ श्रीपद्मप्रभ पारगताय नमः मोक्ष

मागशीर सुदि

१० श्रीअरनाथ अर्हते नमः जन्म
१० श्रीअरनाथ पारगताय नमः मोक्ष
११ श्रीअरनाथनाथाय नमः दीक्षा
११ श्रीमल्लिनाथ अर्हते नमः जन्म
११ श्रीमल्लिनाथ नाथाय नमः दीक्षा
११ श्रीमल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः केवल
११ श्रीनमिनाथ सर्वज्ञाय नमः केवल
१४ श्रीसंभवनाथ अर्हते नमः जन्म
१५ श्रीसंभवनाथ नाथाय नमः दीक्षा

पोष (गु० मगशीर) वदि

१० श्रीपार्श्वनाथअर्हते नम जन्म
११ श्रीपार्श्वनाथनाथाय नम दीक्षा
१२ श्रीचंद्रप्रभ अर्हते नम जन्म
१३ श्रीचंद्रप्रभनाथाय नमः दीक्षा
१४ श्रीशीतलनाथ सर्वज्ञाय नम केवल

पोष सुदि

६ श्रीविमलनाथ सर्वज्ञाय नमः
९ श्रीशांतिनाथ ॥

११ श्रीअजितनाथ " "
१४ श्रीअभिनन्दन " "
१५ श्रीधर्मनाथ " "

माघ (गु० पोष) वदि

६ श्रीपद्मप्रभ परमेष्ठिने नमः च्यवन
१२ श्रीशीतलनाथ अर्हते नमः जन्म
१२ श्रीशीतलनाथ नाथाय नमः दीक्षा
१३ श्रीऋषभदेव पारगताय नमः मोक्ष
३० श्रीश्रेयांसनाथ सर्वज्ञाय नमः केवल

माघ सुदि

२ श्रीअभिनन्दन अर्हते नमः जन्म
२ श्रीवासुपूज्य सर्वज्ञाय नमः केवल
३ श्रीविमलनाथ अर्हते नमः जन्म
३ श्रीधर्मनाथ अर्हते नमः जन्म
४ श्रीविमलनाथ नाथाय नमः दीक्षा
८ श्रीअजितनाथ अर्हते नमः जन्म
९ श्रीअजितनाथ नाथाय नमः दीक्षा
१२ श्रीअभिनन्दन नाथाय नमः दीक्षा
१३ श्रीधर्मनाथ नाथाय नमः दीक्षा

फागण (माघ) वदि

६ श्रीसुपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः केवल

७ श्रीसुपार्श्वनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
९ श्रीचन्द्रप्रभ सर्वज्ञाय नमः	केवल
९ श्रीसुविधिनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
११ श्रीऋषभदेव सर्वज्ञाय नमः	केवल
१२ श्रीश्रेयांसनाथ अर्हते नमः	जन्म
१२ श्रीमुनिसुव्रत सर्वज्ञाय नमः	केवल
१३ श्रीश्रेयांसनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१४ श्रीवासुपूज्य अर्हते नमः	जन्म
०)) श्रीवासुपूज्य नाथाय नमः	दीक्षा

फाल्गुन सुदि

२ श्रीअरनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
४ श्रीमल्लिनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
८ श्रीसंभवनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
१२ श्रीमल्लिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१२ श्रीमुनिसुव्रत नाथाय नमः	दीक्षा

चैत्र (गु० फागण) वदी

४ श्रीपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
४ श्रीपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
५ श्रीचन्द्रप्रभ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
८ श्रीऋषभदेव अर्हते नमः	जन्म
८ श्रीऋषभदेव नाथाय नमः	दीक्षा

चैत्र सुदि

३ श्रीकुंथुनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
५ श्रीअजितनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
५ श्रीसंभवनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
६ श्रीअनन्तनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
९ श्रीसुमतिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
११ श्रीसुमतिनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
१३ श्रीमहावीर अर्हते नमः	जन्म
१५ श्रीपद्मप्रभ सर्वज्ञाय नमः	केवल

वैशाख (गु० चैत्र) वदि

१ श्रीकुंथुनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
२ श्रीशीतलनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
५ श्रीकुंथुनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
६ श्रीशीतलनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
१० श्रीनमिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१३ श्रीअनन्तनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
१४ श्रीअनन्तनाथ अर्हते नमः	जन्म
१४ श्रीअनन्तनाथ सर्वज्ञाय नमः	केवल
१४ श्रीकुंथुनाथ अर्हते नमः	जन्म

वैशाख सुदि

४ श्रीअभिनन्दन परमेष्ठिने नमः	च्यवन

७ श्रीधर्मनाथ परमेष्ठिने नमः च्यवन
८ श्रीअभिनंदन पारगताय नमः मोक्ष
८ श्रीसुमतिनाथ अर्हते नमः जन्म
९ श्रीसुमतिनाथ नाथाय नम दीक्षा
१० श्रीमहावीर सर्वज्ञाय नमः केवल
१२ श्रीविमलनाथ परमेष्ठिने नम: च्यवन
१३ श्रीअजितनाथ परमेष्ठिने नमः च्यवन

जेठ (गु० वैशाख) वदि

६ श्रीश्रेयांसनाथ परमेष्ठिने नमः च्यवन
८ श्रीमुनिसुव्रत अर्हते नमः जन्म
९ श्रीमुनिसुव्रत पारगताय नम: मोक्ष
१३ श्रीशांतिनाथ अर्हते नमः जन्म
१३ श्रीशांतिनाथ पारगताय नमः मोक्ष
१४ श्रीशांतिनाथ नाथाय नम दीक्षा

जेठ सुदि

५ श्रीधर्मनाथ पारगताय नमः मोक्ष
९ श्रीवासुपुज्य परमेष्ठिने नम: च्यवन
१२ श्रीसुपार्श्वनाथ अर्हते नम: जन्म
१३ श्रीसुपार्श्व नाथाय नम: दीक्षा

आषाढ (गु० जेठ) वदि

४ श्रीऋषभदेव परमेष्ठिने नमः च्यवन

७ श्रीविमलनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
९ श्रीनमिनाथ नाथाय नमः	दीक्षा
अषाढ सुदि	
६ श्रीमहावीर परमेष्ठिने नमः	च्यवन
८ श्रीनेमिनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१४ श्रीवासुपूज्य पारगताय नमः	मोक्ष
श्रावण (गु० अषाढ) वदि	
३ श्रीश्रेयांसनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
७ श्रीअनंतनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
८ श्रीनमिनाथ अर्हते नमः	जन्म
९ श्रीकुंथुनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
श्रावण सुदि	
२ श्रीसुमतिनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
५ श्रीनेमिनाथ अर्हते नमः	दीक्षा
६ श्रीनेमिनाथ नाथाय नमः	जन्म
८ श्रीपार्श्वनाथ पारगताय नमः	मोक्ष
१५ श्रीमुनिसुव्रत परमेष्ठिने नमः	च्यवन
भादरवा (गु० श्रावण) वदि	
७ श्रीशान्तिनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन
७ श्रीचंद्रप्रभ पारगताय नमः	मोक्ष
८ श्रीसुपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नमः	च्यवन

भादरवा सुदि

९ श्रीसुविधिनाथ पारंगताय नमः . मोक्ष

आसो (गु. भादवा) वदि

१३ श्रीमहावीर परमात्मने नमः गर्भापहार

०)) श्रीनेमिनाथ सर्वज्ञाय नमः केवल

आसो सुदि

१५ श्रीनमिनाथ परमेष्ठिने नमः च्यवन

॥ अथ गोतम पात्र तप विधि ॥

इस तप में प्रत्येक पूर्णिमा को उपवास किया जाता है। श्री गोतमस्वामी की पूजा करनी। इस प्रकार १५ पूर्णिमा तक यह तप करना चाहिये। तप पूर्ण होने पर रूपा का पात्र बनवा उसमें खीर भर झोली सहित गोतम स्वामी तथा महावीर स्वामी के सन्मुख पात्र रखे और साधु मुनिराज के पात्र मे खीर वोहरावे। पीछे खीर का पारणा स्वयं भी करें। स्नात्रादि पूजन करावे। उपवास के दिन (श्री गोतमस्वामी नमः) इस पद की २० माला साथीया आदि सत्तावीस सत्तावीस समझें

पच्चरंगी तप

पाच जणा पाचपाच उपवासमाला,

चारचार उपवासवाला, पांच जणा त्रणत्रण उपवास वाला, पांच जणा बबे उपवासवाला, पांच जणा एक एक उपवासवाला, बधा मळीने २५ जणा होवा जोइए, वधारे होय तो हरकत नहीं, अने छेले दिवसे सभा जणानो पारणो आववो जोइये।

नवरंगी तप

आ तपस्यामां ८१ जणा होवा जोइये केमके नव जणा नव नव उपवासवाला उतरता उतरतां अनुक्रमे छेला नव एक एके उपवासवाला समजवा, पारणो एक दिवसे बधानो आववो जोइये।

आंबील वर्द्धमान तप

आ तपमां एक आंबील करी उपवास पछी बे आंबील करी उपवास पछी त्रण आंबील करी उपवास यावत् अनुक्रमे १०० सो आंबील करी उपवास करवो आ तप लागट करे तो १४ वर्ष त्रण मास २० दिवसे पुरो थाय छे, आ तप शरू करतां प्रथम पांच ओळी लागट करवी, आ तपमा हमेशां तपने दिवसे (नमो अरिहताण) आ पदनी २० माला अने साथिया विगेरे बार बार समजवा।

अथ नदीश्वर तप विधि.

आ तप श्रीनंदीश्वरद्वीपमा ५२ शाश्वता चैत्य आश्री ५२ उपवास करवाथी पुरो थाय छे, ते बावन उपवासो अमावास्याने दिवसे करवाना छे, आ तप दीवाळीनी अमावास्याये शरु करवानो छे, जे दिवसे उपवास होय ते दिवसे (श्रीनंदीश्वर शाश्वत जिन चैत्याय नमः) आ पदनी २० माला गणवी, साथीया विगेरे बार बार समजवा।

दर्शन तप विधि

आ तप एक अठम तप करवाथी अथवा एकांतरीया ३ उपवास करवाथी थाय छे।

ज्ञान तपविधि

आ तप एक अठम अथवा एकांतरीया त्रण उपवासथी पुरो थाय छे।

चारित्र तपविधि

आ तप एक अठम अथवा एकांतरीया त्रण उपवासथी पुरो थाय छे।

आ त्रणे तपनो गणणो आदि प्रमाणे करवो।

धर्मचक्र तप.

प्रथम छठ करीने पारणो करवो पछे एकांतरीया ३० उपवास करवा, अरिहंत पदनु गुणणु आदि करवु ।

योगशुद्धि तप

मनोयोग आश्री प्रथम दिवसे नीवि बीजे दिवसे आंबील त्रीजे दिवसे उपवास करवो एवी रीते वचन योगनी अने कायायोगनी ओलि करवी आ तप त्रणे ओलीए पुरो थाय छे, गुणणो २० माला साथीया खमा० काउस्सग्ग ३ त्रण त्रण करवा प्रथम ओलीमां मनोयोग तपसे नमः बीजी ओलीमां वचोयोग तपसे नमः त्रीजी ओलीमां काययोग तपसे नमः

यवमध्य वज्रमध्य चांद्रायण तप

आ तपना बे भेद छे, सुदि एकमे एक कवल, बीजे बे कवल, एक एक एक कवलनी वृद्धि करवाथी पुनमने दिवसे १५ कवल लेवा, वदि एकमे १५ कवल, पछे एक एक कवल ओछो करवाथी अमावास्याये एक कवल लेवो, एक मासमां आ तप पुरो थाय छे, आ तपने यवमध्य चंद्रायण कहे छे, वदि एकमे एक

कवल, बीजे बे कवल, एक एक एकनी वृद्धि करवाथी अमावस्याये १५ कवल लेवा सुदि एकमे १५ कवल मछे,एक एक कवल ओछो करवाथी पूनमना दिवसे एक कवल लेवो, आ तप पण एक मासमा पुरो थाय छे आ तपने वज्रमध्य चान्द्रायण कहे छे।

तीर्थंकर वर्धमान तप

यह तप एकासणा नींवी आयंबील अथवा उपवास से होता है। इसमें प्रथम श्रीऋषभदेवस्वामी का एकासणा दूसरे अजितनाथ के २ एकासणे। एक एक एकासणा की वृद्धि करते चोवीसवें महावीर स्वामी के २४ एकासणा करना। पीछे महावीरस्वामी का एक एकासणा। पार्श्वनाथजी का दो एकासणा। इस प्रकार एक एक एकासणा की वृद्धि करते श्री ऋषभदेवस्वामी के २४ एकासणा करें। इस प्रकार एक २ तीर्थंकर के २५ एकासणे होते हैं। उपवास आदि से यह तप करना हो तो ऊपर बताई विधि के माफक २५ २५ उपवास करें। एकान्तरीया अथवा छुटे उपवास भी किये जा सकते हैं। जो तीर्थंकर का तप चलता हो उनका ही जाप करना बाकी अरिहंत पद की तरह समझें।

परम भूषण तप

इस तपमें ३२ लागट आंबील करें। अथवा एकातरीया एकासणावाला ३२ आयंबील करना। गुणना आदि अरिहत पद की तरह।

तीर्थंकर दीक्षा तप

यह तप जिन जिन तीर्थंकरों ने दीक्षा लेते समय जो तप किया था यह तप एक ही साथ अथवा एकातरीया उपवास में पूरा करने का है। श्रीसुमति नाथ ने एकासणा करके दीक्षा ली थी वास्ते एकासणा करना। श्रीवासुपूज्य स्वामी ने उपवास करके दीक्षा ली थी इसलिये उपवास और श्रीमल्लिनाथ और श्रीपार्श्वनाथ ने अट्ठम करके दीक्षा ली थी वास्ते अट्ठम अथवा एकातरीया तीन उपवास बाकी २० तीर्थंकरों ने छट्ठ करके दीक्षा लीथी इसलिये छट्ठ अथवा दो उपवास करें। गुणने में जो तीर्थंकर की तपस्या करती हो उन तीर्थंकर के नाम के आगे नाथाय नम जैसे श्रीऋषभदेव नाथाय नमः बाकी अरिहत पद की तरह समझें।

तीर्थंकर ज्ञान तप

यह तप जिन जिन तीर्थंकरों के जिस जिस

तपस्या से केवलज्ञान प्राप्त हुवा है वह तप एक साथ अथवा एकांतरीया उपवास करने से पूरा होता है। श्री ऋषभदेव, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ को केवलज्ञान अट्ठम तप से प्राप्त हुवा है इससे अट्ठम अथवा एकांतरीया उपवास करें। वासुपूज्य स्वामी को केवलज्ञान एक उपवास में प्राप्त हुआ था इसस एक उपवास करें। बाकी १९ तीर्थंकरों को केवलज्ञान छठ तपसे हुवा है इससे १९ छठ अथवा एकांतरीया उपवास करें। जिन २ तीर्थंकरों का तप चलता हो उन तीर्थंकरों का गुणना करना जैसे श्रीऋषभदेव सर्वज्ञाय नमः इत्यादि साथिया आदि अरिहन्त पद की तरह समझें।

तीर्थंकर निर्वाण तप.

इस तपमें जो २ तीर्थंकर जिस २ तपश्चर्या से मोक्ष गये हैं वो २ तप एक साथ अथवा एकांतरीया उपवास करने से पूरा होता है। श्रीऋषभदेव ६ उपवास से मोक्ष गये हैं। श्री महावीर स्वामी [illegible] करके मोक्ष गये हैं और बाकी २२ तीर्थंकर [illegible] महीना अर्थात् ३० ...

एक ही साथ अथवा एकांतरीया छुटा

से यह तप पूरा होता है। साथीया आदि अरिहंत पद की तरह जो तीर्थंकर का गुणना चलता हो उन तीर्थंकर के नाम के आगे पारगताय नमः जोड़ें जैसे श्री ऋषभदेव पारगताय नमः इत्यादि।

चतुर्विध संघ तप

इस तपमें पहिले एक छट्ठ करके बाद में एकांतरीया ६० उपवास करना। गुणनो नमो तित्थस्स २० माला साथिया वगैरा ६२ बांसठ समझें।

तीर्थंकर च्यवन तप

यह तप एक एक तीर्थंकर के च्यवन कल्याणक आश्री एक एक उपवास करने से पूरा होता है। ये चोवीस उपवास एकांतरिया अथवा छुटा कराय छे गुणने में जिस तीर्थंकर का तप चलता हो उन तीर्थंकर के आगे परमेष्ठिने नमः यह जोड़ना जैसे ऋषभदेव परमेष्ठिने नमः बाकी अरिहंत पद की तरह।

तीर्थंकर जन्म तप

यह तप भी च्यवन कल्याणककी तरह समझें। परंतु गुणना अर्हते नमः का करना जैसे श्री ऋषभदेव अर्हते नमः।

संवत्सर तप

एक वर्ष में चोवीस पाखी संबंधी आलोयणा
के २४ उपवास अने चोमासी संबंधी आलोयणा
के ६ उपवास, संवच्छरी संबंधी आलोयणना अर्णु
उपवास, सर्व मली ३३ उपवास एकांतरीया अथवा
गुगम करवाथी आ तप पूरो थाय छे गुणणो संवच्छर
तपसनमः बाकी अरिहंत पद जेम।

पद्मोत्तर तपओली

आ तपमां एक एक ओली एकांतरिया आठ
आठ उपवासनी थाय छे एवी नव ओली करवाथी
आ तप पूरो थाय छे बधा मिली ७२ उपवास थाय
छे गुणणों आदि अरिहंत पदनी जेम समजवो, आ
तप सुदि नवमीथी सरु करवो।

समवसरण तप

आ तप १६ दिवसे पुरो थाय छे, भादरवा
(गु० श्रावण) वदि ४ थी सरु करीने भादरवा सुदी
४ सुधी कराय छे तेमां पहेले दिवसे एकासणो, बीजे
दिवसे नीवी, त्रीजे दिवसे आंबिल, चोथे दिवसे
उपवास [illegible] रीते चार ओली

	साथिया	माला	दिवसे
१ श्रीभावजिनाय नमः	१०	२०	१
२ श्रीश्रुतसमवसरण जिनायनम	९	२०	२
३ श्रीमनःपर्यवजिनाय नम.	१२	२०	१
४ श्रीकेवलिजिनाय नमः	८	२०	४

॥ दशविध यति धर्म तप ॥

आ तप दश एकांतरिया उपवास करवाथी पुरो थाय छे अने सुदिमा शरु थाय छे तपने दिवसे गुणणु विगेरे १० माला आ प्रमाणे—

१ क्षमागुणधराय नम.	२ मार्दवगुणधराय नमः
३ आर्जवगुणधराय नमः	४ मुक्तिगुणधराय नम.
५ तपोगुणधराय नम	६ संयमगुणधराय नमः
७ सत्यगुणधराय नम	८ शौचगुणधराय नमः
९ आकिंचनगुणधराय नमः	१० ब्रह्मचर्यगुणधराय नमः

पंचपरमेष्ठी तप

पहेले दिवसे उपवास, बीजे दिवसे एकलठाणु, त्रीजे दिवसे आंबील, चोथे दिवसे एकासणु, पांचमे दिवसे नीवी, छट्ठे दिवसे पुरिमढ्ढ, अने सातमे दिवसे बेयासणु, ए प्रमाणे सात दिवसोनी एक ओली थाय

ए एवी रीते पांच ओळी करवाथी आ तप १८ दिव-
सोमां पुरो थाय छे।

गुणणो १ नमोअरिहंताणं २ नमोसिद्धाणं ३ नमोआयरियाणं ४ नमोउवज्झायाणं ५ नमोलोए सव्वसाहूणं।

एक एक ओळीमां गुणणो साथिया विगेरे एक नवपदओळीमां कहेल प्रमाणे प्रमाणे [illegible] दिवस सुधी करवो।

सर्वांग सुंदर तप

आ तप आठ एकांतरिया उपवास करी पारणे आंबील करवाथी आठ उपवास अने [illegible] आंबील मिलीने १५ दिवसे पुरो थाय छे।

आ तप शुदि पक्षमां [illegible] समाप्त थाय छे गुणणो आदि [illegible]

निरूजशिख तप

एनु तप सर्वांग सुंदर तपनी जेम समजवो पण एटलु विशेष छे वदि पक्षमां [illegible] अमावा स्याये पुरो थाय छे.

सौभाग्य कल्पवृक्ष तप

एकांतरियां १५ उपवास करवाथी

श्रीम दिवसमां पुरो थाय छे चैत्र सुदी एकमनो आ तप तारु थाय छे गुणणो अरिहत पदनी जेम

अष्टापद पावडी तप ओली

आ तप ८ एकासणा ८ नीवी ८ आंबील अथवा ८ उपवासथी थाय छे थसो चैत्र सुदि ८ थी लइने पुनम सुधी ८ आठ एकासणादि करवाथी एक ओली थाय छे एवीरीते आठ ओली करवाथी ४ वर्षे आ तप पूरो थाय छे गुणणो श्री अष्टापदतीर्थाय नमः माला २० साथिया आदि ८ आठ

अदु खदर्शी सर्वसुख सपत्ति तप

आ तप मां पहले मासे सुदि १ बीजे मासे सुदि २ त्रीजे सुदि ३ एम वधता पनरमे मासे सुदि १५ नु उपवास कराय छे एम १५ उपवास करवाथी १५ सुदि पखवाडे आ तप पूरो थाय छे अरिहत-पदनु गुणणुआदि।

कर्मचतुर्थ तपः

आ तप प्रथम अठम पछे एकातरिया ६० उपवास पछे अतमा उपर एक अठम करवाथी पूरो थाय छे आ तप आंतरा रहित करवो बधा ६६ उपवास थाय छे गुणणो आदि अरिहत पदनी जेम

कर्म चक्रवाल तप

आ तप प्रथम अठम पछे एकांतरियां ६४ उपवास उपर अठम तप कर वाथी पुरो थाय छे वधा ७०उपवास थाय छे गुणणु आदि अरिहंत पदनी जेम

चत्तारि अठ दस दोय तप

प्रथम चार पछे आठ पछे दश पछे बे उपवास करवाथी आ तप पुरो थाय छे श्री अष्टापद तीर्थाय नम. साथिया विगेरे २४ एकांतरिया छुटापण उपवास थाय छे,

गौतम कमल तप

आ तपमां नव उपवास एकांतरिया करवा गुणणो श्रीगौतमस्वामिने नम साथिया विगेरे २७ सतावीस ।

सिंहासण तप

आ तप मां ७० उपवास करवा, पांच पांच उपवासे पारणु होयछे, आ तप श्रावण सुदि १२ थी सरु थाय छे, भादवा सुदि २ नु पारणुं थाय गुणणु विगेरे समव सरण तपनी पेठे मनजक

बीजी रीते १६ उपवास कर

तेमां चार चार णु होयछे,

(गु० श्रावण) सुदि १ थी सरु भादवा सुदि ५ पारणु होय छे,

१० दश पच्चक्खाण तप

पहेले दिवसे उपवास, बीजे दिवसे एकासणु, त्रीजे दिवसे एक दाणो जमवो, चोथे दिवसे नीवी, पांचमे दिवसे एक कवल, छटे दिवसे एकल ठाणु, सातमे दिवसे एक दत्ति, आठमे दिवसे आंबील नवमे दिवसे एक धारो दशमे दिवसे लुखी नीवी, गुणणु नमो सिद्धाणं साथीया विगेरे आठ आठ

घडीया बे घडीया तप

आ तप मां लागट ६० ठाम चतु विहार परिमह वाला एकासणा होय छे, पा घडीया तप चार (६ मीनीट मा आहार पाणी करी लेवुते) अध घडीया तप आठ (१२ मीनीट मा आहार पाणी करी लेवुते) एक घडीया तप १६ (२४ मीनीट मा आ०) बे घडीया तप ३२ (४८ मीनीट मा आहा)

पांच छठ तप

आ तप एकातरिया पांच छठ अने पारणे एकासणो करवाथी १० दिवस मां पुरो थाय छे, तेमा प्रथम छट्टनु पारणु घी साकर सहित घउना

आदा नुं थाय छे, बीजा छट्टनु पारणु दुध शाकर सहित चोखानु थायछे, त्रीजा छठ्ठनु पारणु झोली-पात्राविक ग्रहोरावी ने भरे आणे प्यायछे, चोथा छठ्ठनुं पारणु आननी पेठे जमवानु होय छे, पाचमा छठ्ठनु पारणुं पाणीनु लोटो भरीने बीजाना बे त्रण घरे जवु, त्यां कोई जमवानु कहे तो जमीलेवु, न कहे तो उपवास करवो

अक्षय निधि तप

यह तप १६ दिन में पूरा होता है। भाद्रवा (गुज० श्रावण) वदी ४ से यह तप आरम्भ करें। भाद्रवा सुदी ४ (संवत्सरी समाप्त करें इसमें १५ एकासणा और आखिरी दिन उपवास किया जाता है। इस तप के आरम्भ के दिन घर देरासर में अथवा उपासरे में जिन प्रतिमा स्थापित की जावे, उनके सामने कंकू अथवा केसर के चारों तरफ साथये करके उनके ऊपर अक्षत (चावल) के सथिये करें। चांदी अथवा तांबे का कलस केसर का साथया करके चांवल के साथिये पर रखे। उस कलस को १६ दिन तक उठाना हिलाना नहीं। वैसे ही खुद का एक कलश अलग रखना। हर एक

अपने २ कलश में हर रोज रूपानाणो, सोपारी चांदी के फूल और चांवल की एक मुठी डालें। श्रीफल कलश के मुख पर रख के लाल अथवा पीले वस्त्र मे लच्छ द्वारा बांध कर रख शक्ति होतो पहिले और अंतिम दिन रूपानाणा दोनों कलश में डालना कम से कम एक पैसा हर रोज कलश में डालना ही चाहिये।

भगवान की स्थापना में १।) अथवा ५।) रुपया रखना। भगवान की जीमनी तरफ १६ दिन तक अखंड दीपक चांवल के साथीये पर रखना। भगवान के सामने बाजोट पर श्री कल्प सूत्रजी रख कर हर रोज वास क्षेप और रोकड़ नाणा से पूजा करना। पहिले और अंतिम दिन गुरू पास ज्ञान पूजा करें खुद का व मूल कलश अगर अधुरा (खाली) होतो आखिरी दिन चांवल से पूरा भर देना चाहिये।

खमा समण देकर श्रुत देवता का एक नव कार काउस्सग्ग करके श्रुत देवता की स्तुति कहें।

पाच के दिन सुहागन स्त्रियें मस्तक पर कलश रख के वाजा गाजा सहित नगर में फिर के देहरा सर में भगवान के आगे कलशों को रखें।

सार्थीया खमासमणा, प्रदक्षिणा, काउस्सग्ग माला हर रोज ज्ञान पद की तरह सब क्रिया करना चाहिये १६ दिन तक शियल व्रत पालन करना, भूमि संथारे सोना देववंदन दोनों टाइम, पहिले इण चैत्य वंदन करके पचक्खाण पालना जीमने के बाद चैत्य वंदन करके पानी पीवें प्रतिक्रमण करें। सथारा पोरसी भणा के सोना। यह तप ४ ओली करवा थी ४ वरस में पूरा होता है।

शाश्वत मेरु पर्वत तप

आ तपमा एक एक उली पांच पांच उपवास नी होय छे, पारणे बीयासणू करवु, पांच उली करवाथी २५ उपवास साथीया खमासमणा काउस्सग्ग पांच पांच नवकार वाली बीस बीस गुणणो।

१. जम्बूद्वीप सुमेरु शाश्वत जिनाय नमः

२ घात की खंड पूर्व मेरु०

३ घात की खंड पश्चिम मेरु०।

४ पुष्करार्ध पूर्व मेरु०।

५ पुष्करार्ध पश्चिम मेरु०।

केवली तप

आ तप मा २० आंबील छेलो एक उपवास

होय छ गुणणणो आदि अरिहंत पद नीपेठे।

शाश्वत जिन तप

आ तप मां १४ अनेपुने मे छठ करवो, वदि ९ अने १४ सुदि ९ अने १४ उपवास करवो, साथी या आदि आरिहंत पदनी पेठे वार वार, गुणणो आ

१ श्री चद्रानन सर्वज्ञाय नमः

२ श्री वारिषेण ,, ,,

३ श्री वर्धमानन सर्वज्ञाय नमः

४ श्री वर्द्धमान ,, ,,

सिद्धि तप

आ औ तप मे आठ उपवास सुधी एक एक उपवास वधारता जवुं, बधी मीली ने ३६ उपवास होय छे, पारणे बीयासणु करवु, सिद्ध पदनी पेठे खमासमणो साथीया का उसग्ग आठे आठ जाणवा, अने जेजे सिद्धनी गुणे थाई ती होय तेते गुणनी मालां २० गुणावी,।

मोक्ष करमंक तप

पहले दिवसे उपवास, बीजे दिवसे आंबील, त्रीजे दिवसे नीवी, चोथे दिवसे एकासणो, पांचमे दिवसे पुरीमड, एक एक उली, एवी पांच उली करवा थी

आ तप २५ दिवसे पूरो थाय छे गुणणो आदि सिद्ध पदनी पेठे जाणवु, ।

स्वर्ग करभक तप

आ तप मां लागट १२ एकासणा, नव नीवी, पाच आंबील, १ उपवास होय छे, आ तप २७ दिवस मां पूरो होय छे, गुणणो आदि सिद्ध पदनी पेठे, ।

रत्नरोहण तप

आ तप मां उली पाच होय छे, प्रथम दिवसे एकासणो, बीजे दिवसे नीवी, त्रीजे दिवसे आंबील चोथे दिवसे उपवास, आ प्रथम उली बीजा मा अनुक्रम में नीवी १ आंबील २ उपवास ३ एकासणो ४. त्रीजी मा आंबील १ उपवास २ एकासणो ३ नीवी ४, चोथी मा उपवास १, एकासणो २, नीवी ३ आंबील ४, पाचमी मां एकसणो १ नीवी २ आंबील ३ उपवास ४, आ तप २० दिवसे पूरो होय छे, आसो सुदि ५ थी आरम्भवु, अने त्रण वरसे पूरो होय छे, गुणणो आदि पञ्च परमेष्ठि पद नी पेठे समझवु,

नव कमल तप

आ तप मां एकांतरिया आठ उपवास करवा थी एक उली होय छे ऐवी नव उली एक वरस मां करवी, उपवास ८१ होय छे, उजमणा मां जिनना नव अंगे नव कमल चडाववा, गुणणो विगेरे अरिहत पदनी पठे,

सूरायण तप

आ तप निरतर वदि १ थी अमावश्या सुधी १५ आयील करवाथी पूरो होय छे गुणणो विगेरे अरिहत पद पेठे, ।

९६ जिन तप.

आ तप मां एक एक तीर्थकर आश्री एक एक उपवास करवाथी ९६ उपवास थाय छे जे तीर्थकरनो उपवास चालतो होय तेनो गुणणो साथिया विगेरे बार बार नहीं आवतो होय तो नमो अरिअताणनी माला फेरवयी ।

अतीत चोवीसी जिन गुणणो

१. श्री केवल ज्ञानि नाथाय नम'
२. श्री निर्वाणि " "
३ श्री सागर " "

४.	श्री महायश	नाथाय	नमः
५	श्री विमल	,,	,,
६.	श्री सर्वानुभूति	,,	,,
७	श्री श्रीधर	,,	,,
८	श्रीदत्त	,,	,,
९	श्री दामोदर	,,	,,
१०	श्री सुतेज	,,	,,
११	श्री स्वामि	,,	,,
१२	श्री मुनी सुव्रत	,,	,,
१३.	श्री सुमति	,,	,,
१४	श्री शिवगति	,,	,,
१५	श्री अस्ताग	,,	,,
१६.	श्री नमीश्वर	,,	,,
१७	श्री अनिल	,,	,,
१८.	श्री यशोधर	,,	,,
१९	श्री कृतार्थ	,,	,,
२०	श्री जिनेश्वर	,,	,,
२१	श्री शुद्धमति	,,	,,
२२	श्री शिवकर	,,	,,
२३	श्री स्यदन	,,	,,
२४.	श्री समति	,,	,,

वर्तमान चोवीसी जिन

२५	श्री ऋषभ देव	नाथाय	नमः
२६	श्री अजित	”	”
२७.	श्री सभव	”	”
२८	श्री अभिनदन	”	”
२९	श्री सुमति	”	”
३०	श्री पद्म प्रभ	”	”
३१	श्री सुपार्श्व	”	”
३२.	श्री चद्रप्रभ	”	”
३३	श्री सुविधि	”	”
३४	श्री शीतल	”	”
३५	श्री श्रेयांस	”	”
३६	श्री वासु पूज्य	”	”
३७	श्री विमल	”	”
३८	श्री अनत	”	”
३९	श्री धर्म	”	”
४०	श्री शांति	”	”
४१	श्री कुथु	”	”
४२	श्री अर	”	”
४३	श्री मल्लि	”	”
४४	श्री मुनी सुव्रत	”	”

४५. श्री नमी नाथाय नमः
४६ श्री नेमी " "
४७ श्री पार्श्व " "
४८. श्री महावीर " "

अनागत चोवीसी जिन

४९ श्री पद्मनाभ नाथाय नमः
५०. श्री सूरदेव " "
५१. श्री सुपार्श्व " "
५२ श्री स्वय प्रभ " "
५३ श्री सर्वानुभूति " "
५४ श्री देवश्रुत " "
५५. श्री उदय " "
५६ श्री पेढाल " "
५७ श्री पोट्टिल " "
५८ श्री शत कीर्त्ति " "
५९ श्री सुव्रत " "
६० श्री अमम " "
६१ श्री निष्कसाय " "
६२ श्री निप्पुलाक " "
६३ श्री निर्मम " "
६४ श्री चित्रगुप्त " "

६५ श्री समाधि नाथाय नमः
६६ श्री सवर " "
६७ श्री यशोधर " "
६८ श्री विजय " "
६९ श्री मादित्र " "
७० श्री श्रेय " "
७१ श्री अनंत " "
७२ श्री भद्रकर " "

वीश विहरमान जिन

७३ श्री सीमधर स्वामिने नमः
७४ श्री युग मधर " "
७५ श्री बाहु " "
७६ श्री सुबाहु " "
७७ श्री सुजात " "
७८ श्री स्वय प्रभ " "
७९ श्री ऋषभानन " "
८० श्री अनंत वीर्य " "
८१ श्री सूरप्रभ " "
८२ श्री विशाल " "
८३ श्री वज्रधर " "
८४ श्री चन्द्रानन " "

८५ श्री [illegible] [illegible]
८६ श्री [illegible]
८७ श्री [illegible]
८८ श्री [illegible]
८९ श्री [illegible]
९० श्री [illegible]
९१ श्री [illegible]
९२ श्री [illegible]

[illegible]

९३ श्री [illegible] [illegible]
९४ श्री [illegible]
९५ श्री [illegible]
९६ श्री [illegible]

[illegible]

[illegible] सर्व [illegible] मनो [illegible] अथवा मनो [illegible] पक्षे [illegible] साधियादि अरिहंत [illegible] नमो [illegible]

१ जम्बुद्वीप महा विदेह [illegible]

१ श्री जयदेव सर्वज्ञाय नमः

२ श्री कर्ण भद्र

३ श्री लक्ष्मी पति सर्वज्ञाय नम
४ श्री अनन्त एर्प " "
५ श्री गगाधर " "
६ श्री विशालचद्र " "
७ श्री प्रियकर " "
८ श्री अमरदत्त " "
९ श्री कृष्णनाथ " "
१० श्री गुणगुप्त " "
११ श्री पद्म नाभ " "
१२ श्री जलधर " "
१३ श्री युगादीश " "
१४ श्री वरदत्त " "
१५ श्री चन्द्रकेतु " "
१६ श्री महाकाय " "
१७ श्री अमरकेतु " "
१८ श्री अरण्य वास " "
१९ श्री हरिहर " "
२० श्री रामेंद्र " "
२१ श्री शांति देव " "
२२ श्री अनत कृत " "
२३ श्री गजेन्द्र " "

१४ श्री सागरचद्र सर्वज्ञाय नम
१५ श्री लक्ष्मीचद्र " "
१६ श्री महेश्वर " "
१७ श्री ऋषभदेव " "
१८ श्री सौम्यकांति " "
१९ श्री नेमि चद्र " "
३० श्री अजित भद्र " "
३१ श्री महीधर " "
३२ श्री राजेश्वर " "

धात की खड पूर्व महा विदेह-३२ जिन

३३ श्री वीर भद्र , सर्वज्ञाय नम
३४ श्री वज्रसेन " "
३५ श्री नीलकठ (ललीन कीर्ति) सर्वज्ञाय नम'
३६ श्री वज्रकदा (भुजेकशि) " "
३७ श्री कनमिक सर्वज्ञाय नमः
३८ श्री क्षेमकर " "
३९ श्री मृगांक " "
४० श्री मुनि मुर्त्ति " "
४१ श्री विमल चद्र " "
४२ श्री आगमिक " "
४३ श्री पुष्पोत्तर (सुकृतनाथ) सर्वज्ञाय नमः

४४ श्री वसुधानाथ सर्वज्ञाय नमः
४५ श्री मल्लिर (मल्लिल) नाथ ,, ,,
४६ श्री वलभृत् ,, ,,
४७ श्री वनदेव ,, ,,
४८ श्री रेवाकित ,, ,,
४९ श्री आमृत वाहन ,, ,,
५० श्री पूर्ण भद्र (चद्र),, ,,
५१ श्री कल्पशाक ,, ,,
५२ श्री नलीन (नील) दत्त ,,
५३ श्री विद्यापति ,, ,,
५४ श्री सुपार्श्वनाथ ,, ,,
५५ श्री भानुनाथ ,, ,,
५६ श्री प्रभजन ,, ,,
५७ श्री वशिष्ठ ,, ,,
५८ श्री जलप्रभ ,, ,,
५९ श्री महाभीम ,, ,,
६० श्री ऋषिपाल ,, ,,
६१ श्री कुडगदत्त ,, ,,
६२ श्री भूतानन्द ,, ,,
६३ श्री महावीर ,, ,,
६४ श्री तीर्थेश्वर ,, ,,

घात की खडे पश्चिम महा विदेह ३२ जिन

६५ श्री धर्म दत्त सर्वज्ञाय नमः
६६ श्री भूमि पति " "
६७ श्री मेरुदत्त " "
६८ श्री सुमति मित्र " "
६९ श्री श्री षेण " "
७० श्री प्रभानंद " "
७१ श्री पद्माकर " "
७२ श्री महा घोष " "
७३ श्री चंद्र प्रभ " "
७४ श्री भूमिपाल " "
७५ श्री सुमति षेण " "
७६ श्री अच्युत " "
७७ श्री तीर्थ भूति " "
७८ श्री ललितांग " "
७९ श्री अमरचंद्र " "
८० श्री समाधिनाथ " "
८१ श्री मुनिचंद्र " "
८२ श्री महेंद्र " "
८३ श्री शशांक " "
८४ श्री जगदीश्वर " "

८५ श्री देवेन्द्र सर्वज्ञाय नमः
८६ श्री गुणनाथ " "
८७ श्री उद्योत " "
८८ श्री नारायण " "
८९ श्री कपिल " "
९० श्री प्रभंकर " "
९१ श्री जिन दीक्षित " "
९२ श्री सकलनाथ " "
९३ श्री शिलारनाथ " "
९४ श्री यशोधर " "
९५ श्री सहस्त्रार (मे) " "
९६ श्री यशोकदत्त " "

५ पुष्करार्धे पूर्व महा विदेह ३२ जिन

९७ श्री मेघ वाहन सर्वज्ञाय नमः
९८ श्री जीव रक्षक " "
९९ श्री महापुरुष " "
१०० श्री पाप हर " "
१०१ श्री मृगांक " "
१०२ श्री नरसिंह " "
१०३ श्री जगत्पूज्य " "
१०४ श्री सुमतिनाथ " "

१०५	श्री महा महेंद्र	सर्वज्ञाय	नमः
१०६	श्री अमर मूर्ति	"	"
१०७	श्री विशाल (कुमार) चंद्र		"
१०८	श्री धारि (वीर) देव		"
१०९	श्री रमणनाथ	"	"
११०	श्री स्वयम्भू	"	"
१११	श्री अचल	"	"
११२	श्री मकर केतु	"	"
११३	श्री सिद्धार्थ	"	"
११४	श्री मङ्गलनाथ	"	"
११५	श्री विजयदेव	"	"
११६	श्री नरसिंह	"	"
११७	श्री सीतानन्द	"	"
११८	श्री वृन्दारक	"	"
११९	श्री चन्द्रा नप	"	"
१२०	श्री मित्र (चन्द्र) गुप्त		"
१२१	श्री दशरथ	"	"
१२२	श्री महा यश		"
१२३	श्री उम्मीक	"	"
१२४	श्री प्रद्युम्न		"
१२५	श्री		

१२६	श्री पुष्पकेतु	सर्वज्ञाय नमः
१२७	श्री कामदेव	„ „
१२८	श्री समरकेतु	„ „

पुष्करार्धे पश्चिम विदेह ३२ जिन

१२९	श्री प्रसन्नचन्द्र	सर्वज्ञाय नमः
१३०	श्री महासेन	„ „
१३१	श्री वज्रनाभ	„ „
१३२	श्री सुवर्ण	„ „
१३३	श्री कुरु चन्द्र	„ „
१३४	श्री वज्रवीर्य	„ „
१३५	श्री विमलचन्द्र	„ „
१३६	श्री यशोधर	„ „
१३७	श्री महाबल	„ „
१३८	श्री वज्रसेन	„ „
१३९	श्री श्रीमनाथ	„ „
१४०	श्री विमल बोध	„ „
१४१	श्री मेरु प्रभ	„ „
१४२	श्री भद्र गुप्त	„ „
१४३	श्री सुदृढ	„ „
१४४	श्री सुव्रत	„ „
१४५	श्री हरिचन्द्र	„ „

१४६ श्री प्रीतीधर सर्वज्ञाय नमः
१४७ श्री अतिश्रेय " "
१४८ श्री कनक केतु " "
१४९ श्री आजित वीर " "
१५० श्री फल्गु मित्र " "
१५१ श्री ब्रह्म भूति " "
१५२ श्री हितकर " "
१५३ श्री वरुणदत्त " "
१५४ श्री यशः कीर्ति " "
१५५ श्री नागेन्द्र " "
१५६ श्री महीधर " "
१५७ श्री कृतवर्म " "
१५८ श्री महेंद्र " "
१५९ श्री वर्धमान " "
१६० श्री सुरेंद्रदत्त " "

जबूद्वीप भरतक्षेत्र १ जिन

१६१ श्री अजित नाथ सर्वज्ञाय नमः

जबूद्वीप एरवत क्षेत्रे १ जिन

१६२ श्री चद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः

धात, की खड पूर्व भरते १ जिन

१६३ श्री सिद्धांतनाथ सर्वज्ञाय नमः

धात की खड पश्चिम भरते १ जिन

१६४ श्री कर्पट नाथ सर्वज्ञाय नमः

धात की खड पूर्व एरवत १ जिन

१६५ श्री जयनाथ सर्वज्ञाय नमः

धात की खड पश्चिम एरवते १ जिन

१६६ श्री पुष्पदन्त नाथ सर्वज्ञाय नमः

पुष्करार्धे पूर्व भरते १ जिन

१६७ श्री प्रभास सर्वज्ञाय नमः

पुष्करार्धे पश्चिम भरते १ जिन

१६८ श्री प्रभाकर सर्वज्ञाय नमः

पुष्करार्धे पूर्व एरवते १ जिन

१६९ श्री आदिनाथ सर्व ज्ञाय नमः

पुष्करार्धे पश्चिम एरवते

१७० श्री बलभद्र सर्वज्ञाय नमः

देवल इंडा तप

आ तपमां बेसणा पांच, एकसणा ७ नीवी नव आंबील पांच, एक उपवास होय छे २७ दिवसमां आ तप पूरो थाय छे गुणणो नमो अरिहंताण साथियादि बार बार।

अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तप

आठ कर्मनी उत्तर प्रकृति १५८ होवाथी आ तप १५८ उपवास करवाथी पुरो थाय छे तेमा ज्ञानावरणी कर्मना पांच, दर्शनावरणी कर्मना नव वेदनी कर्मना बे मोहनी कर्मना २८ आयुःकर्मना ४ नाम कर्मना १०३ गोत्र कर्मना २ अंतराय कर्मना पांच उपवास करवा, पण ते एकांतरिया करवा, नमोसिद्धाणनो गुणणो करवो, साथिया विगेरे सिद्ध पदनी जेम.

पाच पचखाण

प्रथमे दिवसे उपवास बीजे दिवसे बेयासणो त्रीजे दिवसे एकासणो चोथे दिवसे नीवी पांचमे दिवसे आंबिल आ एक ओली थाय छे एवी पांच ओली करवाथी पचीस दिवसमां आ तप पुरो थाय छे नमोसिद्धाण गुणणो साथिया विगेरे आठ आठ.

पचमहाव्रत तप

आ तपमां एकांतरिया पांच उपवास करवा नमो लोएसव्वसाहुणंनो गुणणो साथिया सत्तावीस तपस्या पुरी थया बाद शक्ति उजमणो करवो

आशोष्टादशदोष शून्य जिनपश्चार्हन्सुदेवो मम।
त्यक्तारंभ परिग्रहः सुविहितो वाचंयमः सद्गुरु ॥
धर्म. केवलिभाषितो वरदयः कल्याणहेतु पुनरर्ह-
त्सिद्धस्तु सुसाधुधर्मशरण भूयाद्विशुद्धया भव ॥१॥

अर्थ —यथार्थ वक्ता अढार १८ दोषरहित जिनेश्वर एवा अरिहंत मारा सुदेव छे, आरंभ परिग्रह रहित सूत्रने अनुसार क्रिया करनारा एवा साधु मारा सुगुरु छे, श्रेष्ट दयावालो कल्याणनो करनारो एवो केवलि भाषित मारे सुधर्म छे, ज्या सुधी आ संसारमां रहु, त्यां सुधी मारे शुद्ध मन वचन काया थी अरिहंत सिद्ध साधु अने केवली भाषित धर्मनु शरणु थाओ ॥१॥

भूतानागतवर्त्तमानसमये यद्दुःप्रयुक्तैर्मनो–
वाक्का ये कृतकारितानुमतिभिर्देवादितत्त्वत्रये ॥
सर्व प्राणिपुचाप्तवाच्यनुचित हिंसादि पापास्पद।
मोहाधेन मया कृत तदधुनागर्हामि निंदाम्यहम्॥२॥

अर्थ —अतीत भविष्य अने वर्त्तमान कालमां अशुद्ध मन वचन अने कायाथी पोते करवो बीजा पासेथी करावबो करता होय तेनी अनुमोदना कर-
तत्त्व त्रे विषे चतुर्विध संघने विषे

प्राणियोने विषे आप्त वचनने विषे मोहथी अंध थई में जे अनुचित कर्युं होइ, हिंसादि १८ पापस्थान कीधा [सेव्या] होय तेने हु हमणा शुद्धभावे गर्हु छुं, आत्मशाखे निंदु छु. ॥ २ ॥

अर्हत्सिद्ध गणीन्द्रपाठकमुनी आद्यांश्रित श्रावकावस्त्यादिकभावतद्गतगुणान् मार्गानुसारिश्च गुणान् श्री अर्हद्वचनानुसारि सुकृतानुष्ठान सद्दर्शनज्ञानादीननुमोदयामि सुहितैर्योगैः प्रशास्म्यहम्॥३॥

अर्थः—अरिहंतोना अरिहंतपणाना, सिद्धोना सिद्धपणाना, आचार्योना आचार्यपणाना, उपाध्यायपणाना साधुओना साधुपणाना, श्रावकोना श्रावकपणाना, अविरति श्रावकोना, समकितवंतोना, भावोने तथा उपरोक्त अरिहंतादिकना गुणोने, तथा मार्गानुसारी गुणोने तथा श्री अरिहंतोना वचन अनुसार सुकृत धर्मानुष्ठान (क्रिया) ने, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रादिकने हुं अनुमोदना करछु अने, प्रशंसा करुं

संसारेऽभ्रमया स्वकर्मवशगा [illegible]

क्षाम्यन्ते क्षमिताः

वैरं नास्ति च

यद्दुःखितास्ति

अर्थ—आ संसारने विषे पोतपोताना कर्मने विषे वश (आधीन) थएला ४ गतिमा भमता सर्व जीवोने हु खमावु छु ते, पण खम्या छतां मारा उपर क्षमा करो, कोइनी साथ मारा वेर भाव नथी, सर्व जीवोने विषे सुखन देवा वाली मारी मित्रता छे जे मन थी दुष्ट चिंतवेलु, वचन थी भाषेलु, अने कायाथी करेलु, ते दुष्कृत (पाप) मिथ्या थाओ (४)

सद्यारस्पनि मे कदा दिनमहं यत्पाल्यिष्येऽमलं।
चारित्रं जिन शासनं गतमुनेर्मार्गे चरिष्याम्यहं॥
मुक्तो जन्मजरादिदुःखनिवहात्संवेगनिर्वेदताप्तोक्ता-
स्तिकपदयालुताप्रशमता धर्त्ता भविष्याम्यहम्॥५॥

अर्थ—ते दिवस मारो क्यारे आवशे के जे दिवसे निर्मल चारित्र अने जिन आज्ञा ने पालीश, पूर्वमुनिओना मार्गमां चालीश, जन्म जरा मृत्यु आदि दुःखना समुदायथी मुक्त थइश, सवेग (संसारिक सुखने दु खरूप मानवु ते) निर्वेदता (संसार ने केदरूप मानवु ते) आप्त [जिनेश्वर] कहेल वचन उपर श्रद्धारूप ते आस्तिकता दयालुता प्रशमता आदि गुणोने धारण करनारो थइश (५)

सकल तीर्थ नमस्कार

कर्मभूमिषु ये केपि , भूतानागत साम्प्रत ।
अर्हंतो भगवतस्तान , सर्वान्वदे जिनेश्वरान् ॥ १ ॥
पंच महाविदेहेषु , विचरतो जिनेश्वरा ।
सीमंधरादय सति , ये तान्वदे निरंतरम् ॥ २ ॥
सिद्धा सिद्धिस्थिता ये च ये च सिध्यन्ति साम्प्रत ।
सेत्स्यंति ये च तान सर्वान्, सिद्धान्वदे निरंतरम् ।३।
सार्द्धद्वीप द्वयात स्था, ये साधयति साधव ।
ज्ञानादिभिः शिवाध्वान,वदेहऽतान्मुदाऽखिलान् ।४।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले , यानि चैत्यानि चार्हता ।
तानि सर्वाणि वदेऽह, शाश्वताऽशाश्वतानि च ॥५॥
श्रीशत्रुंजय सम्मेत, तारंगाष्टापदार्बुदान् ।
उज्जयन्तादि तिर्थानि , वदे सर्वाणि भावतः ॥ ६ ॥
जिन कल्याण कस्थाने, यानि तिर्थानि साम्प्रत ।
सत्यान्यपि तीर्थानि , तानि वदे निरंतरम् ॥ ७ ॥

